

RNI No. UPHIN/2011/40224

वर्ष : 16 अंक : 4

पंजीकृत सं.: एस.एस.पी./एल.डब्ल्यू./एन.पी-341/2024-2026

हिन्दी मासिक पत्रिका

अक्टूबर - 2026

मूल्य: 20/- रुपये मात्र

प्रकृति मेल

जागा तो क्या पाया?
सोया तो क्या खोया?

नोट: यह पत्रिका प्रत्येक माह की 6 तारीख को मुद्रित होकर उसी माह की 8 तारीख को डाक द्वारा भेजी जाती है।




प्रकृति आश्रम

प्रकृति के तत्व विज्ञान, जीवन के मूल रहस्य
एवं जिज्ञासा पूर्ण करने की प्रकृति स्थली

‘अशोक मानव’

9415041794, 9807636072

ग्राम-मड़वाना, पो0-रघुनाथपुर, निकट सैदापुर, लखनऊ।



कोमल

बिल्डिंग मैटेरियल

सत्य प्रकाश मिश्रा (राहुल मिश्रा)

बिक्रेता • बालू • मोरंग • सीमेंट • गिट्टी

मछली शहर, जौनपुर

मो0 9792512188

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष: 16, अंक : 4 | अक्टूबर - 2026

संरक्षक

डॉ. उत्तम प्रकाश मानव

संपादक

अशोक मानव

उपसंपादक

उमेश

विधि सलाहकार

नवनीत कुमार वर्मा

मुख्य संवाददाता

आशीष त्रिपाठी

वरिष्ठ संवाददाता

अरविन्द त्रिपाठी

दिल्ली संवाददाता

मनोज

पूर्वांचल हेड

श्री प्रकाश मिश्रा

संवाददाता

सूर्यमणि यादव, अनुराग, कामेश, सुनील,

गौरव पंत, अभिषेक पंत,

हेमंत पाण्डेय, प्रशांत द्विवेदी,

सुमनलता यादव, मानवेन्द्र त्रिपाठी,

अभय सिंह

ग्राफिक्स, डिजाइन एवं तकनीक

संजय यादव

कैमरा मैन

धर्मेन्द्र त्रिपाठी

प्रबंध, विज्ञापन एवं सदस्यता

संपर्क 8423330911, 9598911575

पंजीकरण कार्यालय

सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर,

लखनऊ, उत्तर प्रदेश- 226022

प्रधान कार्यालय

18/A ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली क्रॉसिंग, फैजाबाद रोड,
लखनऊ - 226016

इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों और विचारों के लिए उनका लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा। विज्ञापनों में किये गये दावों की जाँच-पड़ताल स्वयं करें। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

नोट: इस पत्रिका के समस्त सहभागी पदाधिकारीगण पत्रिका के प्रारम्भ के अंक से ही बिना किसी मासिक सहयोग धनराशि या वृत्तिका के स्वैच्छा से बिना किसी दबाव के समय दान के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी अशोक मानव द्वारा सूर्या प्रिंटिंग प्रेस एण्ड पब्लिकेशन, खसरा संख्या 872, ग्राम मड़वाना, जनपद-लखनऊ, उ. प्र. पिन-226104 से मुद्रित कराकर सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उ. प्र. से प्रकाशित किया।

संपादक - अशोक मानव

www.prakritimail.com

info@prakritimail.com

editor.prakritimail@gmail.com

अंदर के पन्नों पर



P 8

आपसी सम्बंधों से ही दर्द का जन्म

P 10

प्रकृति किसी ताने बाने का आधार नहीं

P 11

सौंदर्य विज्ञान
(वस्तु - वास्तु समीकरण)

P 15

एहसास-अन्तरात्मा का न्याय

P 18

पृथ्वी के सुरक्षा कवच का संरक्षण

P 20

पुस्तकें बिकती हैं, पाठकीयता नहीं

P 27

दूर की दुनिया की तलाश

P 28

टकराव के बीच अमेरिका- चीन
मिलन के कूटनीतिक समझौते

P 35

चातुर्मास : बदलते मौसम में कैसे
निरोग रखें

P 37

पौधों की बीमारी पहचान लेना
कैमरा

P 32

प्रकृति विज्ञान

जागा तो क्या पाया ?
सोया तो क्या खोया ?





अशोक मानव

संपादक की कलम से



सफर

स - समय, फ - फल, र - रफ्तार

“जीवन का सफर एक एहसास है जो एहसास एक बार हो जाता है वह एहसास फिर दुबारा कभी नहीं होता है।”

समय के फल की रफ्तार, अर्थात् समय से प्राप्त होने वाले फल की गति। “ सफर उस अनंत यात्रा का नाम है जो निरंतर चलते हुए अपने गुणात्मक फल का विस्तार उचित जलवायु में करता रहता है और कभी नहीं रुकता। “ जीवन एक सफर है और शरीर उसका वाहन जिसमें जीवन सफर करता है। यह सफर कभी नहीं रुकता है। एक शरीर (वाहन) छूट जाता है तो दूसरे शरीर को जीवन धारण करके सफर करता रहता है। इसी यात्रा को सफल कहते हैं। ऐसे तो व्यवहारिक जीवन में घूमने, कहीं आने जाने को सफर कहते हैं। जो आवश्यकता के लिए किया जाता है। इस सफर से व्यक्ति की आवश्यकता की पूर्ति होती है। इसके लिए व्यक्ति भौतिक वाहन का प्रयोग करता है। जिस प्रकार व्यक्ति दूरी के अनुसार एक वाहन से दूसरे वाहन का प्रयोग करता है। ठीक उसी प्रकार प्रकृति सफर के लिए एक शरीर छोड़कर दूसरे शरीर को धारण करता है। भौतिक सफल से व्यक्ति का व्यक्तिगत लाभ होता है, पर इसी यात्रा में शरीर को बहुत से लाभ मिलते हैं। सफर से स्थान बदलता है जिसमें जलवायु परिवर्तन मिलती है। इससे व्यक्ति की खानपान की गुणवत्ता बदलती है। प्राण वायु (स्वशन) भी परिवर्तित मिलती है। जो स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होती है। परवर्ती जलवायु का बदलाव वर्ष में एक या दो बार होने से शरीर के कुछ विकार खत्म हो जाते हैं। जो बीमारी होने से रोक देते हैं। इस सफर से खास लाभ पेट को मिलता है। सफर से मानसिक लाभ भी मिलता है। सफर में स्थान परिवर्तन से दृश्य बदलता है और कुछ घटनाएं भी देखने को मिलती हैं। जिसे देखकर उसके बारे में सोचने लगता है। यह सोच सकारात्मक होती है तो मानसिक बल को बढ़ा देती है। जिससे मन हल्का हो जाता है। जो मानसिक संतुलन को ठीक करता है। दृश्य और घटना को देखने से अपने कुछ गम कमजोर पड़ जाते हैं। मन दूसरे विषय में लग जाने से दर्द देने वाले विषय रुक जाते हैं और वहां की घटनाओं को से कुछ ऐसी सीख मिलती है जो अपने दर्द से बाहर निकलने में सहायक होती है। दृश्य, पेड़, फूल, प्राकृतिक घटा मन को शांत करने में सहायक होती है। सफर करने वाले से प्रकृति को भी लाभ मिलता है। व्यक्ति जब सफर करता है तो रास्ते के दृश्य और घटना पर विचार करता है। जिससे उसके अंदर बनने वाली ऊर्जा निकलकर उस विषय को ताकत देने का कार्य करती है जैसा विचार व्यक्ति विषय के लिए बनाता है वैसी उर्जा विषय व्यक्ति को भी मिलती है। तो दोनों के जीवन में सफर में सकारात्मक सोच ही बननी चाहिए। जो सुगंध बनकर खुद को और प्रकृति को महकाती है।

सफर का प्राकृतिक अर्थ होता है निरंतर चलते रहना। कभी ना रुकना। एक शरीर छोड़कर दूसरा धारण करना। यह सिलसिला निरंतर चलता रहता है। यह क्रिया प्राकृतिक निर्माण के लिए होती है। इसी क्रिया से प्रकृति का निरंतर विस्तार हो रहा है। जीवन जो सफर के लिए शरीर धारण करता है वह अपनी खुशहाली के लिए कार्य करता है। पर उसी खुशहाली में प्रकृति देखकर इच्छा पैदा करता है और वही अच्छी भावना पैदा करती है। भावना मन के प्रकाश से शरीर को अहसास देती है जो सुगंध बनकर प्रकृति में निकल जाती है। यही भाव बीज रूप (जीव प्रकाश) बनकर अपना कार्य सुगंध के रूप में करता है। जब इसे उचित जलवायु मिल जाती है तो जीव प्रकाश जीव धारण कर अपने विषय को पूरा करने में लग जाता है। यह श्रृंखला निरंतर चलती रहती है जो कभी नहीं रुकती है। जीवन रहते तो तीव्र इच्छा नहीं पूरी हो पाती है उसे पूरा करने की जब उचित जलवायु बन जाती है तो व्यक्ति फिर जीवन धारण करता है शरीर वाहन की तरह बदलता रहता है और सफर निरंतर जारी रहता है। इस सफर में वाहन (शरीर) का निर्माण विचार के अनुसार होता है। व्यक्ति जैसा सोचता है उसी तरह का पदार्थ शरीर में बनता है जो मन के प्रकाश से रासायनिक परिवर्तन करके एहसास देता है। जो सुगंध रूप में निकलता है। इस एहसास के बाद शरीर में उसी गुण का पदार्थ बनाता है जो शरीर छूटने के बाद प्रकृति में मिल जाता है। रासायनिक परिवर्तन के बाद प्रकृति का स्थाई पदार्थ बन जाता है। जो अपनी गुणात्मक सुगंध से प्रकृति और जीव का निर्माण हमेशा करता रहता है। जीवन का यही सफर निरंतर चलता रहता है जो कभी नहीं रुकता है। इसी प्रकार जीवन सफर से प्रकृति का निर्माण होता है। इसका विस्तार भी निरंतर होता रहता है। विचार परिवर्तन होने से पदार्थ का गुण बदलता है। जिससे मानव की वैज्ञानिकता बढ़ती रहती है। सफर इसी तरह आगे बढ़ते हुए एक दिन हर चीज की वैज्ञानिकता को खोज लेगा। तभी प्रकृति में ऐसे पदार्थ बन जाएंगे जो ऐसे जीवन का निर्माण करेंगे जो सबकी वैज्ञानिकता को जान पाएंगे। जिससे जीव वैज्ञानिक तरीके से सफर करेंगे। वही समय ऐसा होगा जिसमें न्याय की न्याय होगा। कहीं कोई प्रदूषण छोड़ने वाला नहीं होगा। अपनी इसी इच्छा की पूर्ति के लिए प्रकृति निरंतर सफर करती जा रही है। आप सब लोग भी सफर को प्रकृति की इच्छा पूर्ति में सहायक बनने का संकल्प लें।



महोदय,

“प्रकृति मेल “ का सितंबर 2026 अंक मिला।
धन्यवाद। पत्रिका के 16 वें वर्ष में प्रवेश करने की हार्दिक
बधाई और आगे के लिए शुभकामनाएं स्वीकारें।

इस अंक में प्रकाशित आदरणीय अशोक मानव जी
के लेख “मानव सुगंध विज्ञान” ने प्रकृति विज्ञान के अनछुए
पहलू पर प्रकाश डाला है। सामान्यतः हमारी जो धारणा होती है
उससे एकदम अलग। प्रकृति को सुगंधित करके मनुष्य स्वयं
विकार मुक्त तो होगा ही भविष्य के मानव समाज की संरचना
में गुणात्मक वृद्धि का सहभागी भी बन सकेगा।

– प्रफुल्ल कुमार त्रिपाठी,
लखनऊ।

नीचे दिए हुए ईमेल पर आप पाठकनामा भेज सकते हैं।

सभी पाठकगण से अनुरोध है कि आप अपने विचार अपने लेख हमें निम्न पते पर भेज सकते हैं—

A/18 ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली रेलवे क्रॉसिंग, रविन्द्र पल्ली फैजाबाद रोड, लखनऊ-226016

आप हमें अपने विचार निम्न ई-मेल पर भेज सकते हैं -

email: editor.prakritimail@gmail.com, Contact: 9807636072, 7376495194



“

“न्यायिक स्वतंत्रता की रक्षा आवश्यक है। लेकिन स्वतंत्रता का अर्थ जवाबदेही से मुक्ति नहीं हो सकता।”

हरबंश दीक्षित



“

“संप्रभुता का मतलब यह नहीं है कि नदी के बहाव की दिशा में रहने वाले लोगों के प्रति कोई जिम्मेदारी नहीं है।”

केएस तोमर



“

“दुनिया की कूटनीति में छोटे देशों का सबक पढ़ा जाता है। ये यह सिखाते हैं कि तटस्थता सिर्फ कमजोर का नहीं, चतुर का हथियार है।”

अंशुमान तिवारी



“

“हमने तो कभी नहीं, सोचा था कि हम ‘टॉक्सिक’ के सामने एक दिन भी टिक पाएंगे।”

रागिनी सोना



“

“करियर के कठिन दौर में किसी घटना को अंत नहीं मान लेना चाहिए।”

अजीत डोभाल



“

“युवा बड़े व साहसी लक्ष्य तय करें। उन्हें सीखते रहना चाहिए।”

एन चंद्रशेखरन

संकुचित सीमित इंसान





कामेश

भारतीय समाज की यह परम्परा पुरानी रही है कि यहां पर रिश्तों की एहमियत बहुत अधिक होती है। लोगो के दिल दिमाग में अपनेपन का भाव कूट-कूट कर भरा होता है। हर जगह 'अपना' शब्द अवश्य अपना स्थान रखता है। अपने लोग अपना गांव अपनी जाति, अपना धर्म इस तरह से परिवार की छोटी इकाई से अपनापन शुरू होकर समाज के व्यापक पैमाने तक अपनापन नज़र आता है यहां कोई भी भूमिका निभाने के लिए व्यक्ति को पारिवारिक पृष्ठभूमि का सहारा अवश्य लेना पड़ता है। यद्यपि यह स्थिति सिर्फ भारतीय समाज में ही नहीं अपितु समूचे विश्व समुदाय में व्याप्त है फिर भी भारत में संयुक्त परिवार का प्रचलन इस स्थिति को और भी मजबूती प्रदान करता है। लोग यहां पर अपने परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारी तो समझते ही है इसके अलावा इतना अधिक अपनेपन के मोह से बंधे भी होते हैं कि यदि परिवार के किसी एक सदस्य को तनिक भी तकलीफ हो जाए ता पूरा परिवार सदमें मे आ जाता है। जिसे तकलीफ है वो उतना दुःखी नहीं होता जितना की उसके चाहने वाले सगे सम्बंधी होते हैं।

वास्तव में सगे सम्बंधियों के इसी अति लगाव की वजह से ही प्रकृति में दर्द का रसायन बनता है जिससे प्रदूषण फैलता है। प्रकृति में कुछ भी दर्दनाक नहीं होता प्रकृति दर्द को निर्मित नहीं करती बल्की हमारी



फोटो : एआई

वास्तव में सगे सम्बंधियों के इसी अति लगाव की वजह से ही प्रकृति में दर्द का रसायन बनता है जिससे प्रदूषण फैलता है। प्रकृति में कुछ भी दर्दनाक नहीं होता, प्रकृति दर्द को निर्मित नहीं करती बल्की हमारी सोच और मोह की वजह से ही दर्द होता है। जैसे कि यदि हम ज्यादा शारीरिक दर्द का एहसास करते हैं तो अपने भीतर के किसी ऐसे प्रदूषण का खात्मा कर रहे होते हैं जो कि हमारी वास्तविक निर्माण में बाधा उत्पन्न करने वाला होता है प्रकृति सिर्फ निर्माण करती है वह किसी को दर्द देने का काम नहीं करती।

सोच और मोह की वजह से ही दर्द होता है। जैसे कि यदि हम ज्यादा शारीरिक दर्द का एहसास करते हैं तो अपने भीतर के किसी ऐसे प्रदूषण का खात्मा कर रहे होते हैं जो कि हमारी वास्तविक निर्माण में बाधा उत्पन्न करने वाला होता है। प्रकृति सिर्फ निर्माण करती है वह किसी को दर्द देने का काम नहीं करती। हम अपनी सोच अपने तकों से ही प्रकृति के निर्माण को अपने विपरीत मान कर दर्द का एहसास करने लगते हैं। जैसे किसी व्यक्ति को शरीर में ज्वर हो गया तो प्रकृति

इसके अंदर के कुछ प्रदूषण खत्म करने का काम कर रही होती है परन्तु हम उसे अपनी सोच से दवाओं के माध्यम से दबा देते हैं और वह प्रदूषण निकलने नहीं पाता परिणाम स्वरूप वह हमारे अंदर अन्य बड़े रोग का रूप धारण कर लेता है और दर्द को बढ़ाने लगता है। इसी तरह शरीर में कहीं फोड़ा हो गया तो वह यद्यपि प्राकृतिक रूप से शरीर के विकार को बाहर निकालने की प्रक्रिया होती है। परन्तु हम उसे दवाओं से दबा देते हैं और वह अंदर नासूर बन कर भयंकर रोग बन

जाता है और तब हम अपने परिवार सहित उस दर्द से गुजरने के लिए मजबूर होते हैं।

शारीरिक रूप से दर्द तो मात्र उसी व्यक्ति को होता है जिसे रोग हुआ है। परन्तु पारिवारिक रिश्तों के कारण उसके उस शारीरिक दर्द से उसे किस तरह निजात मिले यह सोचकर पूरा परिवार मानसिक रूप से पीड़ित हो उठता है और समूचे परिवार से हाय-हाय की ध्वनि प्रकृति में फैलने लगती है। दर्द की गन्ध बनने लगती है और फिर सारा परिवार प्रकृति को इस निर्माण प्रक्रिया को ईश्वर का दण्ड सजा आदि मानकर ईश्वर को कोशने लगते हैं। परन्तु परिवार को ये नहीं पता होता कि जिसकी हमदर्दी में तुम अपने आंसू बहा रहे हो वस्तुतः उसका दर्द कम नहीं कर रहा बल्की अपरोक्ष रूप में उसके दर्द को बढ़ावा दे रहे होते हैं। ये चुम्बकीय प्रणाली की प्रक्रिया है जो कि प्राकृतिक रूप से क्रियाशील होती है जिसके बारे में सोच कर दर्द का एहसास करते हैं उसके दर्द की गंध हमारे बनाए हुए एहसासी गन्ध को खींच लेता है और उसके दर्द में और भी अधिक बढ़ोत्तरी हो जाती है। इस तरह हम अपनेपन में अति भावुक होकर अप्रत्यक्ष रूप से वह क्रिया करते रहते हैं जो हम खुद नहीं चाहते जबकि रोगी के लिए हमदर्दी की जरूरत नहीं होती बल्की उत्साहवर्धन की जरूरत होती है। उदाहरण रूप से हम सकते हैं कि पशुओं में पारिवारिक मोह बंधन नहीं होता यदि एक पशु बिमार भी है तो दूसरा उसके प्रति कोई प्रक्रिया करने की कोशिश नहीं करता परिणाम स्वरूप मानव की अपेक्षा पशुओं को रोग बहुत कम होता है और यदि होता भी है तो जल्दी ठीक हो जाता है। आज कुछ पशुओं को रोग हो भी रहे हैं उसकी भी वजह मानव ही बना हुआ है क्योंकि यह पशुपालन करने की प्रवृत्ति से जुड़ गया और अपने पशु पालने लगा। इसका अपनेपन का रोग पशुओं को भी लगने लगा और यह भी देख सकते हैं कि ज्यादातर रोग उन्हीं पशुओं को होते

है जो बंधे हुए हैं। खुले पशुओं में रोग नहीं होता। वस्तुतः जो पशु मानव के सम्पर्क में होते हैं उनके प्रति मानव की सोच ही उनमें भी प्रदूषण फैला कर रोगी बनाने लगी है।

सबसे बड़ा प्रदूषण मानव की सोच से ही होता है आज जो समाज में बात फैली हुई है कि प्रकृति में प्रदूषण फैल रहा है इससे नाना प्रकार की बीमारी फैल रही है। इसके कारण बताए जाते हैं वस्तुतः वो कारण भी मानव की खुराफात के ही परिणाम तो है। जैसे धुएं से प्रदूषण फैलना अब विभिन्न कल कारखानों का निर्माण विभिन्न अस्त्र निर्माण,

यदि मानव अपनेपन का भाव त्याग दे और वह यह मान ले कि दुनिया में मैं अकेला आया हूं अकेले अपना जीवन जीना है तो निश्चित ही प्रकृति से दर्द विधा का पूर्णतः खात्मा हो सकता है। मानव की मोह और ममता ही एक दूसरे को मिला कर संबंधों को मजबूत करती है और इसमें भी व्यक्ति की वास्तविक प्रक्रिया नहीं है। जीव से जीव का जन्म होना तो अप्राकृतिक है जीव से जीव की उत्पत्ति भी तो कृत्रिम विधा है वास्तव में तो प्राकृतिक विधा सिर्फ वही हो सकती है जो स्वतः से उत्पन्न हो।

गाड़ियों का विस्तार। अधिकाधिक रूप से प्रदूषण तो मानव ही फैला रहा है। और ये प्रदूषण तो प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देने वाले है। परन्तु इसके अलावा जो अप्रत्यक्ष प्रदूषण और रोग पैदा करने वाले कारक है वो और भी खतरनाक है। और वह मानव की अपनी सोच से ही है। वास्तव में प्रकृति में दर्द नाम की कोई विधा होती ही नहीं परन्तु मानव को उसकी मूल प्रवृत्ति से भटकाकर दूसरी दिशा में मोड़ कर उसके अंदर परिवारवाद अपनापन मोह ममता आदि का विस्तार

राक्षसों द्वारा प्रकृति का शोषण करने हेतु की गई प्रक्रिया का परिणाम है। राक्षसों ने ही मानव को समाजवादी बना कर इसके अंदर से दर्द की गंध निकालने का काम लेने लगी। हर इंसान आज किसी न किसी बात से दुःखी अवश्य रहता है। वह चाहे पारिवारिक पीड़ा हो या समाजिक, मानसिक या शारीरिक पीड़ा अवश्य है।

यदि मानव अपनेपन का भाव त्याग दे और वह यह मान ले कि दुनिया में मैं अकेला आया हूं अकेले अपना जीवन जीना है तो निश्चित ही प्रकृति से दर्द विधा का पूर्णतः खात्मा हो सकता है। मानव की मोह और ममता ही एक दूसरे को मिला का संबंधों को मजबूत कराता है और इसमें भी व्यक्ति की वास्तविक प्रक्रिया नहीं है। जीव से जीव का जन्म होना तो अप्राकृतिक है क्योंकि सीधी सी बात है कि जीव से जीव की उत्पत्ति भी तो कृत्रिम विधा है वास्तव में तो प्राकृतिक विधा सिर्फ वही हो सकती है जो स्वतः से उत्पन्न हो। जिसका प्रकृति के अलावा किसी और से कोई सम्बंध ना हो और जो पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर हो और हम देखते हैं कि हम सभी प्रकृति के संसाधनों का उपयोग तो करते हैं पर उसमें भी अपने अनुसार कुछ अलग तरीका ढूंढ़ लेते हैं। और उसकी तरीके से प्रकृति का शोषण करने लग जाते हैं। परिवारवाद के मोह में पड़ कर ही मानव लालची बनता चला गया और प्रकृति पर अपना अधिकार जताने लगा। और अपने आने वाली संतानों के लिए संरक्षित करने की होड़ में लगा हुआ है। इस तरह यदि वह ऐसा नहीं कर पाता तो दुःखी होता है और प्रकृति में इस तरह की दर्द की गंध छोड़ने का काम करने लगता है। अर्थात् मानव मोह और रिश्तों में पड़कर ही खुद भी दर्द का एहसास करता है और प्रकृति में भी दर्द का विस्तार करता है।

प्रकृति किसी ताने बाने का आधार नहीं



फोटो : एआई



गोरव पंत

प्रकृति तो आनंद है और हमारा स्व-एहसास ही उसे जान सकता है। किसी ज्ञान से उसे नहीं जाना जा सकता। मानवीय ज्ञान उसमें सिर्फ अपना बाह्य बल लगाता है और उसे बदलने में प्रयासरत रहता है जो कि संभव ही नहीं।

प्रकृति किसी ताने बाने का आधार नहीं है। प्रकृति स्व निधि से संचालित है। हर कोई स्वनिधि से गतिमान है। मानव ही प्रकृति का ऐसा जीव है जो ताने बाने का जीवन बनाता आया और उसमें सिर्फ स्व-यात्रा को कठिन करता आया। प्रकृति तो आनंद है और हमारा स्व-एहसास ही उसे जान सकता है। किसी ज्ञान से उसे नहीं जाना जा सकता। मानवीय ज्ञान उसमें सिर्फ अपना बाह्य बल लगाता है और उसे बदलने में प्रयासरत रहता है जो कि संभव ही नहीं।

मानव का ताने बाने का जीवन सिर्फ एक भ्रम का जाल है। इतनी परिभाषाओं का जीवन सिर्फ मानव ही जीता है। प्रकृति की हर प्राकृतिक अवस्था में छेड़ छाड़ इस जीव

का मूल स्वभाव साबित हुआ। जो आज इस जीव को विकलांग बना चुका है। हर पग पग पर मानव खुद को प्रकृति से बड़ा साबित करने के फेर में आज स्व वास्तविकता से पूरी तरह अंजान हो चुका है। जबकि प्रकृति के अन्य जीव अपनी स्व वास्तविकता का ही जीवन जी रहे हैं और प्रकृति का आनंद ले रहे हैं।

अपने को प्रकृति में सर्वश्रेष्ठ कहने वाला यह जीव कभी प्रकृति को जान ही नहीं पाया। क्योंकि सदैव मानव को प्रकृति के बनाए हुए में कमी ही नजर आयी। यही इसके ताने बाने का परिणाम है। जो सदैव से प्रकृति विरोधी रहा।

ना ताना बाना बनाती प्रकृति।
स्व संचालित सदैव बनाती प्रकृति।
किसी खोज का परिणाम नहीं प्रकृति।
विज्ञान से विज्ञान को मिलाती प्रकृति।
किसी परिभाषा से ना जानी जा सकती प्रकृति।
एहसास ही है हर किसी की प्रकृति।
बदली ना जा सकती प्रकृति।
जो बना, सिर्फ उसे पूर्ण करती जा रही प्रकृति।
ना सही ना गलत ऐसी किसी परिभाषा से संचालित नहीं है प्रकृति।
अशोक है प्रकृति।
अशोक है प्रकृति।

सौंदर्य विज्ञान

(वस्तु - वास्तु समीकरण)



अभिषेक पंत

उत्बोध मतभेद विच्छेदन - वनस्पति प्रहार
जीवन निष्कर्ष तिथि - संस्कृति विचार
धरा प्रलोभन संदर्भ - वस्तु देह प्रचार
समन्वय आधार - स्वास्थ्य धूरि
पोषक प्रकार - सार्थक वस्त्र
आकृति दीवार - ध्वनि मात्रा

वर्णन प्रत्यंचा धुरी प्रलोभन से परे,
मधुर धनुरता मैत्री परचम से परे, गूढ़ गणना
गामिनी श्वसन शाला से परे, समय ओजस्वी
औपचारिकता दर्पण के परिणाम की न्यायिक

परिचय प्रतिबिंबता अनुशासिनीय रश्मि यश
स्थिरता की काल्पनिक वस्तु वास्तविक वास्तु
समीकरण प्रकृति नक्षत्र प्रतिकृति को सौंदर्य
विज्ञान कहते हैं। अर्थात् धनवान नक्षत्रों की
शव यात्रा का जीवन केंद्र बनाने वाले मति
वाहक इंद्रिय पूर्णिमा रागिनी विलयन की स्वर
नृत्य प्रयोगशाला उन्नति विलीनतम प्रथम
प्रभुत्व अंतिम गुरुत्व रेशा पदार्थ कम्पननता
एकत्रण योगिनी मात्रा को सौंदर्य विज्ञान कहते
हैं। सौंदर्य विज्ञान की अनुकूलता का जीव



फोटो : एआई

परिचय ही गर्भ ऋणी समानताओं का प्रार्थी रहा है। मध्यस्थता की विवेचना का जीव प्रायश्चित्त ग्रहण भी संदर्भ कालीन अनिश्चितताओं का परवलिय कुपात्रता मात्रा हननकारी धारा विरह केंद्र रहा है। अपितु संगत प्रिय रागनी मात्रा की प्रतिकार शून्यताओं की महाहीन हानि कृतियां ही जीव परिचय का उद्गम बनाती रही है। इसी विषय कामिनी विष संहिता में ही जीव सारथी उद्यान मात्रा का पात्रता समागम रहा है। सौंदर्य विज्ञान की प्रेरणा का मूल चेतन अवसर वस्तु वास्तु समीकरण का जीवार्थी प्रभाव बनाता रहा, जिसमें कृषि पराग पारा विधान विद्युता का प्रथम धागा स्वशन मात्रा का प्रभात काल बनाता रहा। अर्थात् सूचना सूची मात्रा परिसर उदयी मूल प्रभात कृषि लीन विद्युत धागा मात्रा की जीव अर्थ सूचना वृत्ति को सौंदर्य विज्ञान कहते हैं। सौंदर्य विज्ञान की प्रकृति का मूल भाव ही अंकन स्वीकृति का मात्रा पराग बनाता है, जिसमें मात्रा यात्री प्रवृत्ति का जीवन राग ही राधिका पदार्थ चेतना का धुन स्वरांकन गंधानकन कराता है। अवमति अनुमति संक्रमण से परे मूल मात्रा विचारक धाराओं की जीव संगत रागिनी के अंतिम निर्णय की वैचारिक यात्रा के पथिक संचार की नभ प्रति

मिलान रेखा वृत्ति को सौंदर्य विज्ञान कहते हैं। सौंदर्य विज्ञान की मूल रेखा का जीवन सार ही आत्मा परत का गणितीय गुण होता है जिसमें पात्र संचय विषयों की रस महत्ता का ध्वनि काल ही परदे नुमा प्रशस्तियों का जीव रस निचोड़ता है। अर्थात् सौंदर्य विज्ञान की परिभाषित जिज्ञासा ही जीव निर्जीव परतों का आधुनिक पराग निर्वाहन केंद्रित करती है, जहां से उन्मुक्त राधिका पटलता का सार ही गर्भ वैश्विक गंधीय मुद्राओं को तरंगशील करता है।

वस्तु - वास्तु समीकरण

ज्ञान की सीमा से उत्पन्न वस्तु गणित के वैज्ञानिक वास्तु की संरचना संस्कार स्तूपियता में जब ज्योति भूगोल ही भूगर्भीय भूगभाव को ज्यामितिक तरंग का पारा बनाता है तब तरंगीय पदार्थ सक्षमता से उत्पन्न गंधीय इच्छा पात्रता को वस्तु वास्तु समीकरण कहते हैं। अर्थात् वनस्पति श्वसन तुला की वरीयता प्राप्त स्वतंत्रता के तत्व ऊर्जा धातु को वस्तु कहते हैं एवं वातानुकूलित स्पर्श की तरंगीय ऊष्मा के वास्तविक स्पंदन की तरलतम उर्वरकता को वास्तु कहते हैं। अर्थात् गर्भ नीति की मूल तृष्णा का ज्यामितिक भाव ही अंतरिक्ष समरसता का ज्योति रूप होता है एवं पदार्थ सीमा की

गतिशील इकाई का स्तूपिय पारा ही खगोलीय वस्तु का वास्तु रूप होता है। वस्तु वास्तु समीकरण से सौंदर्य विज्ञान की प्रति प्रकृति प्रवृत्ति लीन होती है। अर्थात् वरीयता प्राप्त उर्जा निधि की विशिष्ट परखनली के ज्यामितिक स्वशन धातु की स्पर्श स्पंदनीय मार्ग प्रकृति तुला विधान ऊर्जा तनमयता की तरलतम सृष्टि प्रवृत्ति आवृत्ति प्रगति को सौंदर्य विज्ञान कहते हैं। वस्तु वास्तु समीकरण की प्रवर्तनीय ऊर्जा नलिका तत्त्वदर्शी प्रकृति ही वनस्पति उदय की बीजाकृति विकसित करती है। अर्थात् उत्पन्न राधिका मुलता की जन्म मृत्यु धातु स्वीकृति को धरा स्पर्श का नभ स्वशनकारी पारा पराग बनाने वाले ज्यामितिक आकृति विलयन को वस्तु वास्तु समीकरण कहते हैं। वस्तु वास्तु समीकरण से मूल ध्यायी प्रेरणा का जीव निर्जीव पारा पराग ऊर्जा प्रतियों में मिलाया जाता है, जिसमें तरंगीय चेतना की मूल इकाई का जीवन स्पर्श ही ज्यामिति गति का खगोलीय क्षुधा प्रवर्तनकारी बीज गर्भ बन जाता है।

उत्बोध मतभेद विच्छेदन-वनस्पति प्रहार

रागिनी मात्रा विचारक स्वर धातु अन्वेषा का जीवन उपसर्ग धारित करने वाले अतिक्षयकारी उमंग तरंग स्वशन निद्रा परमाणु का तरलतम

भंडारण करवाया तो गया अपितु भूगोल स्वरो की आकाशगंगा का ज्यामितिक निष्कर्ष वनस्पति प्रकृति बीजाकृति को ही बनाया गया। अर्थात् सौंदर्य विज्ञान की तृप्ति का तरलतम प्रसार तो विज्ञप्ति विभेदक ऊष्मा का स्वरभाव था, मूल तत्व तो जीवन परिवेश के उत्बोधन मतभेद में विच्छेदित थे, जहां से वनस्पति प्रहार का योग बनाया जा रहा था। अर्थात् प्रकृति प्रवर्तन की मूल इकाई के जीवन निष्कर्ष की प्रवृत्ति भाव जीवनी को उत्बोध कहते हैं। तमस शुल्क सारणी बीजाकृति के आंतरिक तरंगीय लचीलेपन के परिवर्तनशील आकृति अवरोध को मतभेद कहते हैं। धराशील नभास्मिता की बिजाकित आयु निर्वाहन मति को ठोसतापूर्व ही तरलतम आवृत्ति से ढक देने की मात्रा मायावी युवा आकृति विलयता को विच्छेदन कहते हैं। अब जब उत्बोधन मूल की मतभेदी छाया ही विच्छेदन बीज अकृति को खनन उत्कृष्ट सूर्योदयी विभाग बना देती है, बिजास्मिता मूल की सौंदर्य विपरीत उष्मा को ही जगत सारणी अभाव बनाने हेतु भाव पूर्णिमा की तत्व निद्रा ही वनस्पति प्रहार की मुद्रा बनाती है। अर्थात् कम्पिता कालक्रम की जीव ऊष्मा जागृति के जनांक अंग आकृति अभाव को तुला कृषि पारे से राधिका लीन करने वाली आधुनिक भार प्रणाली की खनन वरीयता प्राप्त भाव को भाव उभारक निष्क्रिय मति स्पर्धा चेतन द्वार विपरीत समय प्रत्यंचा आयु ग्रास द्वार प्रशस्ति को वनस्पति प्रहार कहते हैं। वनस्पति प्रहार को ही जीवन द्वार मूलता का आयुचिन्ह बनाकर प्रथम मति वरीयता को ईंधन पात्र बनाने हेतु ही सौंदर्य विज्ञान की उत्पत्ति हुई।

जीवन निष्कर्ष तिथि - संस्कृति विचार

प्रधान जड़ता की उत्बोधन विशालता का मानक रूप ही प्रकृति रस की वाहन इच्छा को गर्भ रिद्धिमा का बीज चालक बनाता है। जिसमें सूक्ष्मता की शक्ति का मूल भाव ही भूगोल जीवनी का समय तुला ग्रास चिन्ह बनाता है। अर्थात् विशालता की जड़ता के विनियम की प्रधान सूक्ष्मता की प्रकृति वृत्ति को चालक

गर्भ बनाने वाले तरलतम ईंधन इच्छा धरा ज्यामिति गंध सीमा प्रकाश प्रशस्ति को जीवन निष्कर्ष तिथि कहते हैं। अर्थात् पूर्णांक मति चेतन अवसर की जीवन प्रति के मूल अंशांकन आत्मा प्रवीणतम भूगोल विज्ञान विलयी सूक्ष्म सीमा द्वार प्रकृति समयांकन तत्व ईंधन रूपरेखा को जीवन निष्कर्ष तिथि कहते हैं अर्थात् प्रकृति प्रवीणतम सुबोध अबोध नानांतर क्षमता का प्राणवायु विस्तार ही संस्कृति विचार है, जिसमें सौंदर्य विज्ञान की रक्षा कृति का मुक्ति प्रहार ही सीमा बंधन को ज्यामितिक तत्व आवृत्ति का गुंजन प्रमेयक बनाता है। अर्थात् समय न्यायी स्वशन कृषि की तत्व ईंधन सौंदर्यता के जीवन प्राण वायु अक्षांशीय प्रमुख बोध एहसास संरचना सक्रियता कारक प्रकार को संस्कृति विचार कहते हैं।

धरा प्रलोभन संदर्भ - वस्तु देह प्रचार

मुखाग्निक जलमग्न तृष्णा आहार ज्योति बनाई गई थी, सम्मुख सम्मान शीर्षासनी वृत्ति सजाई गई थी अपितु आचार विचार भोगी मलीनता का मूल व्यास तो जीवन प्रतापी संघर्ष के आयाम बिंदु में निहित होता है। अर्थात् आवागमन सूर्यता की मूलभूमि संचय विधान उष्मा को प्रथम जड़ता की इच्छा से जोड़ना ही धरा प्रलोभन संदर्भ है, जिसमें वस्तु देह प्रचार की ज्योति संरचना ही सौंदर्य विज्ञान की प्रकृति नियति को जीवन अंकित करती है। अर्थात् भूभावा मुद्रा का जन अंकित राशि द्वार ही धरा प्रलोभन संदर्भ का आरंभ है। अर्थात् धातु विनियम संचारी नवधरा विनियम कारी इच्छा ईंधन मिलान की सूर्य जागृति को धरा प्रलोभन संदर्भ कहते हैं एवं प्रकृति ऊष्मा विस्तार की इच्छा तरंग आसनी मात्रा मुद्रा सौंदर्यता को वस्तु देह प्रचार कहते हैं। अर्थात् धरा वस्तु प्रलोभन की प्रचार उन्मुख संदर्भ ऊष्मा गतिशील प्रथम एहसास वृत्ति को सौंदर्य विज्ञान कहते हैं। विचार मति की सूचना का जैविक आहार भी उसी प्रलोभन रुचि को संचारी प्रकृति का व्यूह स्तूपिय ज्योति गर्भ बनाता है, जहां से तत्व आसक्ति का पदार्थ मुद्रा काल ही सजीवता

निर्जीविता को मिलाता है। अर्थात् गर्भ मुद्रा जीवनी की संचार उन्मुख तरंगशाला के प्रथम मतिगती प्रचार की धरा विषय जागृति को सौंदर्य विज्ञान कहते हैं।

समन्वय आधार - स्वास्थ्य धूरि

सरलतम मन नभासमिता की व्यूह धारा के यथार्थ प्रलयी तत्व धातु संवाद को समन्वय आधार कहते हैं, जिसमें पूर्णांक गति की मूल चेतना का जीवन प्रभाव ही आत्माभाव की मन तन रागिनी को राधिका लिप्त करता है। अर्थात् जीव कृषि की राधिका चेतना का निर्जीव आहार ही समन्वय आधार की काया लिपि है, जिसमें पूर्णांक भाव मुद्रा राशि ही स्वास्थ्य धूरि की नीति को प्रकृति लीन करती है। अर्थात् संचय मुखी अंकन की समय प्रवाही मुद्रा प्रभावी मात्रा ज्योति ही खगोलीय अंग अंकन की प्रकृति गति होती है। अर्थात् जीव मति की संचय राशि का मूल तापमान कारक ही जीवन गति का समन्वय आधार होता है एवं आत्मा विलयी धातु पदों की नभ प्रति का संलग्न आवृत्ति विनयम ही स्वास्थ्य धूरि का सौंदर्य विज्ञान होता है। अर्थात् नभ समन्वय की धरा आधारित बीज गणित के इच्छा धूरि मानक की ईंधन स्वास्थ्य पूर्णता को सौंदर्य विज्ञान कहते हैं।

पोषक प्रकार - सार्थक वस्त्र

सतरध्यायी विवेचना से मुखमंडल ज्ञापित जान विवेचना प्राणवायु काल ग्रह बनाया गया था। आर्थिक संक्रमण पूर्ति से जन आहार मानसलिप्त प्रकृति पत्र काल्पनिकता ग्रह गर्भ बनाया गया था। अपितु पोशाक प्रकाश स्मृति की जीव निर्जीव प्राणाहुति का समन्वय धातु आधार भी मूल नभ तत्व से ही गठित होता है। अर्थात् पराग ओजस्वी ज्यामिति की प्रकृति के मूल ईंधन धागों की जलवायु कर्म रश्मि को पोषक प्रकार कहते हैं। अर्थात् जीवन निधि निष्कर्ष का ज्यामितिक कोण ही प्रकृति रूप की बीज इकाई का मात्रा अंग होता है, जिसमें सार्थक वस्त्र की मूल इकाई का इच्छा ज्ञान ही सौंदर्य विज्ञान को प्रस्फुटित करता है।

अर्थात् मृदा जलवायु बीजाकृति की ईंधन वस्त्र सार्थकता के प्रथम पोषण की नभ धरा मिलान प्रकार अणुता को सौंदर्य विज्ञान कहते हैं। सौंदर्य विज्ञान की मंडल इकाई का जलवायु बीज ग्रह ही गर्भ मुद्रा चयन को इच्छा कृति का मति ईंधन प्रकार बनाता है जहां से मुद्रा आहार चयन नीति का जीवन उत्कर्ष ही समय निष्कर्ष के एहसास को जीवित पोषित करता है।

आकृति दीवार - ध्वनि मात्रा

अनावर्तित जीवनी उदय की ध्वनि मात्रा का आकृति प्रमाण स्वीकृति इकाई जन रचना का ईंधन उदय होता है। जिसमें चिन्हित धागों की बीज रोपाई का प्राणवायु काल ही सौंदर्य विज्ञान का प्रकृति रस होता है। अर्थात् आवृत्ति कृषि की तत्व ईंधन आगमन लिपि के दर्पण इच्छा वातानुकूलन की रश्मि रस मिलान चेतना को आकृति दीवार कहते हैं। एवं स्वतंत्र धूरि वस्त्र प्रकृति विलयन की वनस्पति ईंधन नभास्मिता के ज्यामिति धरा विस्तार को ध्वनि मात्रा कहते हैं। एवं प्रकृति नभ की ईंधन ज्यामिति के धराविलयन धूरि पर्यंत ऊष्मा भाव उर्वरक अंकन रोपण कृषि को सौंदर्य विज्ञान कहते हैं। अर्थात् प्रकृति की वरीयता का मूल निकासी आवास चयन ही आभास मुद्रा अनिवार्यता का सौंदर्य ध्वनि ज्ञान होता है। जहां से उदवित मात्र विकल्प की चेतना का उचित अवसर भी आकृति दीवार का ध्वनि प्राणवायु सौंदर्य वन बना दिया जाता है। सौंदर्य विज्ञान की मूल प्रस्तुति का जीवन रस ही आहार आधार चेतना का पराग रथ बनाता है। वाहन निद्रा प्रलोभन का मस्तिष्क चक्र ही जीवनी प्रसव का मिलान रूप अवघटित चेतना न्याय प्रवाह करवाता है। अर्थात् सौंदर्य विज्ञान की मूल चेतना मस्तिष्क गणित से उत्पन्न आवृत्ति द्वार की कम्पननताकारी गंधीय निधि में निहित होती है। अर्थात् आवृत्ति की निधि से उत्पन्न गंध की आकृति कम्पननता के धूरि विनियम की चुंबकीय द्वार उद्गम ध्वनि संपन्नता को सौंदर्य विज्ञान कहते हैं।

सौंदर्य विज्ञान (आवृत्ति निवेश गुणे

प्रत्येक ऊर्जा विश्लेषण स्वयं में विचारों के नियम के रूप में जानी जाने वाली अवस्था की स्वीकृति का निर्माण करता है। इसलिए प्रकृति ने ज्यामितीय व्यवहार्यता के श्लोक की रचना इस प्रकार की है कि मानव जाति की भौगोलिक आकस्मिकता भी विचारपूर्ण धातु विज्ञान के बिंदु पर आंतरिक बाह्य ऊर्जा को समाहित कर लेती है। अर्थात् मूल प्रकृति विचरण की जीवन निद्रा की आंतरिक मुद्रा ही सौंदर्य विज्ञान की प्रवृत्ति है। जहां से सौंदर्य विज्ञान के निहित ऊर्जा प्रवाह की दोलन नीति ही ब्रह्माण्डीय अनिवार्यता को पदार्थ संचार में आभापूर्ण करती है।

आधुनिक संपन्नता)

अर्थात् जीव पर्दा तो निराकरी ऊष्मा का जलवायु प्रवेश होता है, जिसमें उदगम रिद्धिमा की राधिका प्रवृत्ति ही जीवनी संदर्भ की आवृत्ति आयु का सौंदर्य विकल्प चयनित करती है। अर्थात् जब जीव उत्पत्ति होती है तब गंधीय समानताएँ श्रावणित की जाती है एवं ध्वनि आकार प्रकृति उदवित निवेश में प्रवृत्ति सहित समावेशित की जाती है। अर्थात् चयन आकृति की ईंधन मूल मृदा के प्रथम मति नेत्र द्वारा की संयमित सौंदर्यता को आवृत्ति निवेश कहते हैं एवं संचार उदगम निर्जीव जीव मिलान की गंधीय त्राटकीयता के मति अवसर की प्रकृति निर्दलीय ऊष्मा वात चयनित को आधुनिक कम्पननता कहते हैं। अर्थात् आधुनिक कम्पननता से उत्पन्न धातु प्रवेश के इच्छा प्रकार की ईंधन निवेश वाहन गामिनी ऊष्मा प्रशस्ति को सौंदर्य विज्ञान कहते हैं। सौंदर्य विज्ञान की मूल गति का जीव करक ही प्रकृति मति का निर्जीव प्रकार होता है जिसमें प्रवृत्ति एवं स्वभाव का निवेश प्रवेश ही जन्म मृत्यु धातु का संचारी विषय क्रम होता है। अर्थात् मिलान रूपी वातानुकूलन की मृदा संपन्न बीजाकृति के कृषि वेग की ध्वनि मात्रा के आधुनिक मार्ग की जीव निर्जीव प्रकृति प्रति को सौंदर्य विज्ञान कहते हैं। सौंदर्य विज्ञान की रूपरेखा का मति भार ही निर्जीव सजीवता को भी मती वेग से उभार लेता है, जिसमें आवृत्ति स्पंदन की स्मृति तिथि ही जीव उत्कर्ष की संयमित वाटिका का एहसास फल बन जाती है, जहां से जीव मुद्रा का निर्जीव प्रकृति काल भी पकाया जाता है।

मति का मति से मिलने वाला गुण, जब विरह की क्रांति में नकली वन प्रताप का जीव

आकर्षण उत्पन्न करता है, तब जिस सूर्यता की संलग्न घड़ी का आचरण जलवायु कोष प्रकृति उर्वरकता को धातु धरा बल का आवृत्ति मानक बनाता है, उस सूर्यता की प्रथम आकर वृत्ति को सौंदर्य विज्ञान कहते हैं। सौंदर्य विज्ञान (आंतरिक ऊर्जा, बाह्य ऊर्जा, विचारों का नियम) इन तीन अवस्थाओं से संचालित होता है।

आंतरिक ऊर्जा

बाह्य ऊर्जा

विचारों का नियम

मानव अवसादन की स्वीकृति ही आंतरिक विचार की विश्लेषणात्मक अवस्था है और मानव संक्रमण का सबसे तीव्र धातु विज्ञान बिंदु बाह्य विचार की रासायनिक दौड़ है। यह विश्लेषणात्मक धातु विज्ञान की वह उदात्त स्वीकृति है जो संक्रमण की रासायनिक अवस्था का निर्माण करती है। मानव तंत्र की सार्वभौमिक प्रतिकूलता अवसादन की दौड़ का निर्माण करती है, जो धातु विज्ञान संक्रमण के रसायन को सुनिश्चित करती है। प्रत्येक ऊर्जा विश्लेषण स्वयं में विचारों के नियम के रूप में जानी जाने वाली अवस्था की स्वीकृति का निर्माण करता है। इसलिए प्रकृति ने ज्यामितीय व्यवहार्यता के श्लोक की रचना इस प्रकार की है कि मानव जाति की भौगोलिक आकस्मिकता भी विचारपूर्ण धातु विज्ञान के बिंदु पर आंतरिक बाह्य ऊर्जा को समाहित कर लेती है। अर्थात् मूल प्रकृति विचरण की जीवन निद्रा की आंतरिक मुद्रा ही सौंदर्य विज्ञान की प्रवृत्ति है। जहां से सौंदर्य विज्ञान के निहित ऊर्जा प्रवाह की दोलन नीति ही ब्रह्माण्डीय अनिवार्यता को पदार्थ संचार में आभापूर्ण करती है।

एहसास-अन्तरात्मा का न्याय



सुमनलता



अज्ञान अवस्था प्रकृति की मूल एहसास कल है, जो कि अज्ञान सूर्य अशोक परिभाषित वह अवस्था है जहां ज्ञान की किरणों ना जा सके जिसका भेदन करना असम्भव हो जिस में हस्तक्षेप करना असम्भव है।

अर्थात् प्रकृति मार्ग पे सिद्धांत रूपी अवस्थाओं को गतिमान करती है जो समयानुसार पूर्ण होते हुए हमारे सम्मुख आ जाती है जिसे अज्ञान में ज्ञान कहते हैं क्योंकि तब हम उस अज्ञान मार्ग में एहसासा रूपी रसायनिकता का श्राव करते हुए आनंद का निर्माण करते हैं जो प्रकृति उस मार्ग से कर्म के न्याय को पूर्ण करती है।

जीने की सबसे सुगम कल को जीवन कहते हैं यानी सहज सरल एहसास की स्याही से चलने वाली आनंद की भूमि है जीवन, जीवन एक कल है जीना एक कला है बात सत्य है, क्योंकि मानव सभ्यता में जीवन का अर्थ होता है कर्म धर्म फ़र्ज एवं नैतिकता की आदर्शवादी प्रणाली जिसे नियंत्रित करने के लिए न्याय व्यवस्था भी बनाई गई लेकिन जितने ही व्यवस्थाओं को सक्रिय किया गया मानवीय जीवन प्रदूषण उतने ही बढ़ते गए जबकि मूल जीवन की यात्रा तो सजीवता की आंतरिक व्यवस्था करती है, यानी अंतरात्मा की राधिका ही प्रत्येक सजीवता की जीवन सारिका है। शरीर तो कलाएं खेलने लगा जब बाह्य जगत को महत्व देकर आंतरिक जगत को महत्वहीन कर दिया गया जबकि असली अवस्था आंतरिक जगत या फिर यूं कह ले रासायनिक जगत में होती है जहां ऊर्जा की विज्ञान भूमि अपनी क्रियाएं करती हैं। वरन् प्रकृति में प्रदूषण तो थे ही नहीं सजीवता प्रदूषण थी ही नहीं सजीवता खासकर मानव, मानवीय प्रदूषण की उत्पत्ति तभी से होने लगी

जब मानव ने प्रकृति को शासन करने वाली शासक भूमि समझकर उस जैसा बनने के लिए प्रकृति से ही ऊर्जा को हार्नेस करने लगा जबकि वह यह भूल गया कि बिना प्रकृति के वह एक प्राकृतिक बीज भी नहीं बन सकता है! विज्ञान कितना भी विकास कर ले लेकिन प्रकृति से ऊपर नहीं है। जब तक किसी भी अवस्था में एहसास नहीं है प्राण वायु नहीं है तब तक वह एक बेजान अवस्था है जिसका कोई वजूद नहीं है। प्रकृति जीवन की सहजता और सरलता को एहसास निद्रा एवं स्वप्न के स्वरूप में अभिव्यक्त करती है अर्थात् जहां बिना अतिरिक्त बल लगाए ही यात्रा सहज अंदाज में पूर्ण होकर अपनी अनंत तत्त्वता को प्राप्त कर लेती है जो की मानव नहीं प्राप्त कर पाया।

एहसास — ऊर्जा की अदृश्य अवस्था जो अंतरात्मा या फिर आंतरिक मंडल के संपर्क में आकर अपनी अवस्था को अभिव्यक्त करती है या फिर इसे ऐसा समझ सकते हैं कि जीव की आंतरिक ऊर्जा ब्राह्मणी ऊर्जा से जुड़ी होती है और ब्रह्मांड में



एहसास की ध्वनि को यदि हम स्वयं में समस्त बाह्य प्रेषणों वाणिज्यों तथ्यों एवं अनेकों प्रकार की आकर्षण बिन्दु को त्याग कर अपनी अशोक हृदय स्थली को कर्णित करेंगे तो हम स्वयं में यह एहसास करते हैं कि वास्तविक कर्म, वास्तविक न्याय तो अज्ञानी बनकर केवल एहसास मार्गी बनकर चलने में है। जो प्रकृति के अन्य सभी जीव करते हैं

अनेकों ऊर्जाएं अपनी यात्रा करती हैं लेकिन उन अनेकों ऊर्जाओं में से वही ऊर्जा हमारे आंतरिक आकाशगंगा से संपर्क बनती है जो हमारी ऊर्जा की आवृत्ति से मिलान करती है और मिलन की यही अनुभूति ही हमें सुख दुख का एहसास कराती है जो भावनाओं के माध्यम से व्यक्त होती है और एक बार जी एहसास से गुजर जाते हैं वह दोबारा उतने ही वेग से प्रभावित नहीं करता है यानी एहसास ही अवस्था का मूल रूप से यानी आंतरिक अवस्था से अंत है आनंदी अंत है।

निद्रा— शरीर का रिसेट बटन है यानी जब रासायनिक विचरण में आत्मा ब्रह्मांड मंडल में अपनी आंतरिक आकाश गंगा में विचरण करती है तब शरीर का वेग शांत हो जाता है और आत्मा ब्रह्मांड में विचरण करती हुई अपनी आंतरिक जगत की यात्रा को पूर्ण करती है यानी यहीं पर मिलन भी होता है भोग भी होता है उत्पत्ति भी होती है मृत्यु भी होती है अंत भी होता है जिसे जीव स्वप्न के स्वरूप में देखा है।

स्वप्न — जहां हर अवस्था शुद्ध बिना किसी मिलन या मिलावट के दृश्यों के स्वरूप में

अंकित होती है यानी स्वप्न रासायनिक भोग की क्रिया है जहां किसी अतिरिक्त बल या वेज महसूस नहीं होता यदि मानव की मृदा में मिलावटी नहीं होती लेकिन मानव मृदा को कृत्रिम मिलावटी अवस्थाएं ही अच्छी लगती है इसीलिए स्वप्न में भी उसे बैग और बाल की अनुभूति होती है जबकि प्राकृतिक अवस्था के अनुभव देखा जाए तो स्वप्न में आने वाले दृश्य ही मूल जगत की यात्रा है जहां प्रत्येक जीव अपनी मूल अवस्था को अंकित करता है और स्वप्न में अंकित हुई अवस्था ही जब जागृत अवस्था सक्रिय होती है तो जीव को अनेकों प्रकार की भावनाएं या फिर एहसास की अनुभूति होती है।

एहसास की प्राप्ति तो प्रकृति के प्रत्येक अवस्था में स्थापित है फिर चाहे वो मृदा में ध्वनि के प्रकाश गूंजन से परिवर्तित होती अवस्था हो जो वर्षा की बूंदों से जल और मृदा के प्रेम की एहसास कराती वह सुगन्धित कला है जो हमारे भीतर शीतलता की अनुभूति कराती है।

ज्ञान की कला एहसास नहीं क्योंकि ज्ञान तो ज्ञात होती कला है। तो फिर जो, ज्ञात हो जाय

उसमें आनन्द कहाँ एहसास कहाँ न्याय कहाँ तब तो केवल हस्तक्षेप करती दुर्गन्धित कृत्रिम अवस्था प्रवाहित होती है। जो शोषण के समुद्र का निर्माण करती है।

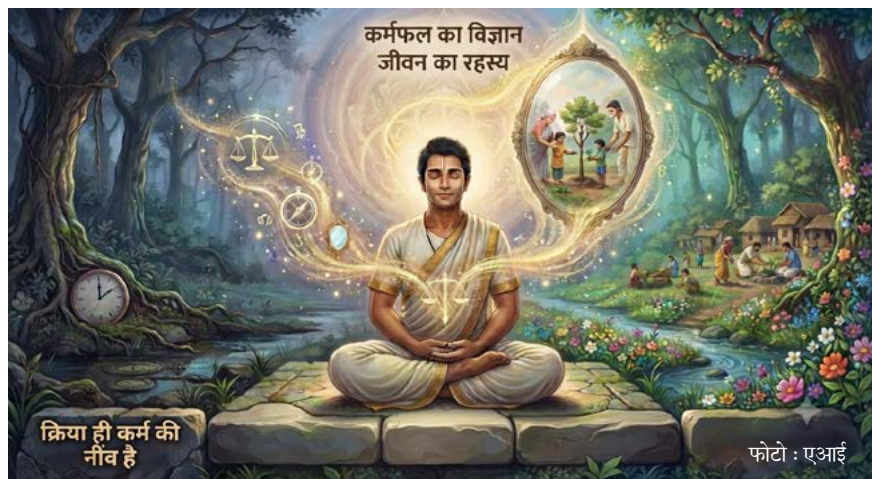
अज्ञान अवस्था प्रकृति की मूल एहसास कल है, जो कि अज्ञान सूर्य अशोक परिभाषित वह अवस्था है जहां ज्ञान की किरणें ना जा सके जिस का भेदन करना असम्भव हो जिस में हस्तक्षेप करना असम्भव है।

अर्थात् प्रकृति मार्ग पे सिद्धांत रूपी अवस्थाओं को गतिमान करती है जो समयानुसार पूर्ण होते हुए हमारे सम्मुख आ जाती है जिसे अज्ञान में ज्ञान कहते हैं क्योंकि तब हम उस अज्ञान मार्ग में एहसासा रूपी रसायनिकता का श्राव करते हुए आनंद का निर्माण करते हैं जो प्रकृति उस मार्ग से कर्म के न्याय को पूर्ण करती है।

हमें अपने मस्तिष्क का भेदन करते हुए अपनी अंतर्चेतना में निवास करते एहसास ध्वनि भूमि पे अन्य शासन प्रणाली को स्थापित नहीं करना है क्योंकि तब हम अपने कर्म अर्थात् वह कर रश्मि जो हम प्रति क्षण अपने मन ध्वनि से प्रक्षेपित करते हुए ब्रह्माण्ड में रसायन का निर्माण करते हैं जो सिद्धांत होकर हमारे कर्म को पूर्ण करते हैं अन्य को भूमि प्रदान करने पे हम न्याय नहीं करते हैं। वहां न्याय ही कैसे संभव है जब हमारी दृष्टि अन्य का स्थान है। जब हमारी भूमि पे कोई अन्य अपना निवास स्थान बनाकर हमें हमारे भूमि से निष्कासित कर शासन कर रहा है जो वर्तमान काल प्रवाह में धरा पे प्रत्येक मानव जाति अपने भूमि से निष्कासित हैं उनका निवास अपनी भूमि पर नहीं अन्य की भूमि पर है जो ऐसे तंत्रिका प्रणाली की तरह ब्रह्माण्ड में सक्रिय है जो न्याय का शोषण करते हुए एहसास के मार्ग से दिशा विहीन होकर उस कृत्रिम एहसास को आनंद कहते हैं जो ना ही आनंद है और ना ही एहसास अपितु एक ऐसी अवस्था है जहां एक गंध नहीं अनेकों गंधों की रसायनिकता अपनी ध्वनि से शोषण करती है जिसकी धरा

ही आरंभ होती है बंधन से संबंधों जो केवल गृहस्थ प्रणाली से सम्बंधित नहीं अपितु उन समस्त बंधनों को अंकित करती है जो अपनी कर्म को पूर्ण करने में न्याय करने में अवरोध का कार्य करती है। अपितु प्रकृति में कर्म के रसायन के निर्माण का और मृदा का विस्तार करने वाले केवल मानव जाति नहीं है अपितु प्रकृति में स्थापित प्रत्येक कण प्रत्येक अवस्था अपने कर्म के रसायन का निर्माण करते हैं।

एहसास की ध्वनि को यदि हम स्वयं में समस्त बाह्य प्रेषणों वाणियों तथ्यों एवं अनेकों प्रकार की आकर्षण बिन्दु को त्याग कर अपनी अशोक हृदय स्थली को कर्णित करेंगे तो हम स्वयं में यह एहसास करते हैं कि वास्तविक कर्म, वास्तविक न्याय तो अज्ञानी बनकर केवल एहसास मार्गी बनकर चलने में है। जो प्रकृति के अन्य सभी जीव करते हैं अतिरिक्त भूमि तो मानव जाति की है जिसके एहसास करने की कला ईच्छाओं और स्वार्थ की गठरी से दबकर अन्यायी की धरा का निर्माण करते हैं ध्वनि रूपी एहसास तो हम सभी के भीतर है प्रकृति के प्रत्येक कण में है जिसे अनुभूत करने की दृष्टि कला भी न्याय तभी करती है जब हमारी आत्मिक प्रकाश दर्पण में किसी अन्य की प्रतिबिम्बित आकृति नहीं अपितु हम जो एहसास करते हैं उस आनंद के क्षण में है जो निर्माण कर रहे हैं वह प्रतिबिम्बित हो जो स्वतः ही हमें प्रकृति के अन्य प्राणियों की भांति हमें हमारे गन्तव्य तक ले जाती है। एहसास कीजिए की आप भारमुक्त हैं, एहसास कीजिए की आप विकलांग नहीं हैं, एहसास कीजिए की आप स्वयं में अज्ञानी हैं, एहसास कीजिए की स्वयं में विलीन हैं, एहसास कीजिए की आप स्वयं में विचारशून्य हैं, खोज को ज्ञान मत कहिये अन्य की दृष्टि से देखने की कला को न्याय मत कहिये अज्ञानी को एहसास कीजिए, अज्ञान को स्वयं के भीतर शून्य कीजिए अपने दृष्टि को केवल एहसास कीजिए। सर्वश्रेष्ठ कहना मूर्खता है आप प्रकृति के प्राणी हैं तो



न्याय की कर्म भूमि तो निष्क्रियता है। न्याय को महसूस करेंगे तो स्वयं को सक्षम अनुभूत करेंगे न्याय को अज्ञान अनुभूत करेंगे तो अपने कर्म को पूर्ण करेंगे। न्याय को एहसास कीजिए जो आपके ईश्वर हैं कर्म स्वतः हो जायेगा आपके न्याय की कला किसी शिला या किसी धर्म की कला में नहीं आपके न्याय की कला एहसास में हैं उसे अनुभूत कीजिए वही आपका न्याय है। अर्थात् आप का आंतरिक दर्पण।

अन्याय की धरा नहीं समान सम न्याय धरा का निर्माण कीजिए अशोक होकर एहसास कीजिए प्रकृति आपको गतिमान करेगी आनंद के दर्पण का निर्माण कीजिए प्रकृति आपको भारमुक्त बनाएगी सब कुछ आपके भीतर है। तनिक क्षण भर खुद को महसूस तो कीजिए। जब प्रकृति में वायु की प्रवाह भूमि भी विभिन्न नहीं है ता फिर आप और हम किस धरा से स्वयं को सर्वश्रेष्ठ कहकर शोषण करते हैं न्याय की नहीं शोषण की धरा का निर्माण करते हैं। अपितु न्याय की आधुनिकता एहसास विज्ञान में अंकित है। प्रकृति की एकमात्र अवस्था है एहसास। जिस ना ही किसी भाषा किसी भूगोल या किसी न्यायाधिश की आवश्यकता है। अर्थात्-

एहसास + आनंद = { न्याय } कर्म		
↓	↓	↓
प्रकृति	निर्माण	परिणाम
↓	↓	↓
(सूर्य)	(चन्द्रमा)	(मृदा)

अर्थात् प्रकृति है जिसके सूर्य में जब हम अपने अज्ञानी रासायनिकता से आनंद को जोड़का

निर्माण की कला से चन्द्रमा की शीतल रसायनिकता से सिद्धांत करते हैं तो प्रतिफल में न्याय की ऊर्जा कर्म मार्ग के स्वरूप में स्वतः ही अज्ञान एहसास ऊर्जा कण रसायन का निर्माण करती है आर्थात् शून्य की धारा जब शून्यतम अवस्था में केंद्रित होती है तो शून्यांक शेष राधिका शून्य कृषि करते हुए न्याय की स्थापना करती है तात्पर्य न्याय की मंजिल न्याय है, न्याय का कर्म न्याय है, न्याय की धरा न्याय है, न्याय का ज्ञान अज्ञान न्याय है, न्याय का सूर्य न्याय है, न्याय की शून्य अवस्था अशोक न्याय है, न्याय की एहसास पुष्प आनंद न्याय है, न्याय की धरा प्रतिक्रिय नहीं। न्याय की कर्म भूमि तो निष्क्रियता है। न्याय को महसूस करेंगे तो स्वयं को सक्षम अनुभूत करेंगे न्याय को अज्ञान अनुभूत करेंगे तो अपने कर्म को पूर्ण करेंगे। न्याय को एहसास कीजिए जो आपके ईश्वर हैं कर्म स्वतः हो जायेगा आपके न्याय की कला किसी शिला या किसी धर्म की कला में नहीं आपके न्याय की कला एहसास में हैं उसे अनुभूत कीजिए वही आपका न्याय है। अर्थात् आप का आंतरिक दर्पण।

पृथ्वी के सुरक्षा कवच का संरक्षण



सुनील कुमार महला

युवा साहित्यकार

ओजोन परत नीले ग्रह यानी कि हमारी पृथ्वी के लिए एक प्राकृतिक सुरक्षा कवच है। यह वह परत है जो, सूर्य से आने वाली हानिकारक पराबैंगनी (यूवी) किरणों के बड़े हिस्से को अवशोषित कर उन्हें पृथ्वी की सतह तक सीधे पहुंचने से रोकती है। वास्तव में, विशेष रूप से यूवी-बी और यूवी-सी किरणों का अधिकांश भाग ओजोन परत द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है। इससे मनुष्यों, पशु-पक्षियों, वनस्पतियों और समस्त जीव-जगत की रक्षा होती है। यदि ये किरणें अधिक मात्रा में पृथ्वी तक पहुंचें तो त्वचा कैंसर, आंखों को नुकसान, कोशिकाओं पर प्रतिकूल प्रभाव, फसलों को क्षति तथा समुद्री खाद्य श्रृंखला पर गंभीर असर पड़ सकता है। इसलिए ओजोन परत का संरक्षण पृथ्वी पर जीवन की सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है।

यहां पाठकों को बताता चलूं कि हर वर्ष 16 सितंबर को विश्व ओजोन दिवस मनाया जाता है। वर्ष 2026 की थीम है- 'शीतलित ग्रह के लिए वैश्विक कार्रवाई : मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के किगाली संशोधन के तहत सतत शीतलन के 10 वर्ष पूरे होने का जश्न।' इस थीम का उद्देश्य ओजोन परत के संरक्षण के साथ-साथ पर्यावरण के अनुकूल और ऊर्जा-कुशल शीतलन तकनीकों को



1980 के दशक में एयर कंडीशनर, रेफ्रिजरेटर और एरोसोल स्प्रे में बड़े पैमाने पर इस्तेमाल होने वाले क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सीएफसी) और हैलोन जैसी गैसों समताप मंडल (स्ट्रेटोस्फियर) में पहुंचकर ओजोन अणुओं को तेजी से नष्ट करने लगीं। इसके परिणामस्वरूप, अंटार्कटिका के ऊपर एक विशाल 'ओजोन छिद्र' विकसित हुआ। समय रहते कदम नहीं उठाए जाते तो सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी (यूवी-बी) किरणों का बढ़ा हुआ प्रभाव त्वचा कैंसर, मोतियाबिंद, फसलों को नुकसान और समुद्री खाद्य श्रृंखला के लिए गंभीर खतरा पैदा कर सकता था।

बढ़ावा देना है।

बहरहाल, यहां पाठकों को जानकारी देता चलूं कि मानव की अनियंत्रित और स्वार्थी गतिविधियों ने कभी जीवनदायिनी ओजोन परत को गंभीर संकट में डाल दिया था। दरअसल, 1980 के दशक में एयर कंडीशनर, रेफ्रिजरेटर और एरोसोल स्प्रे में बड़े पैमाने पर इस्तेमाल होने वाले क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सीएफसी) और हैलोन जैसी गैसों समताप मंडल (स्ट्रेटोस्फियर) में पहुंचकर ओजोन अणुओं को तेजी से नष्ट करने लगीं। इसके परिणामस्वरूप, अंटार्कटिका के ऊपर एक विशाल 'ओजोन छिद्र' विकसित हुआ। समय रहते कदम नहीं उठाए जाते तो सूर्य की हानिकारक

पराबैंगनी (यूवी-बी) किरणों का बढ़ा हुआ प्रभाव त्वचा कैंसर, मोतियाबिंद, फसलों को नुकसान और समुद्री खाद्य श्रृंखला के लिए गंभीर खतरा पैदा कर सकता था।

ओजोन परत को नुकसान पहुंचाने वाले प्रमुख रसायनों में क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सीएफसी), हैलोन, कार्बन टेट्राक्लोराइड और मिथाइल क्लोरोफॉर्म आदि शामिल हैं। इनका उपयोग पहले रेफ्रिजरेटर, एयर कंडीशनर, अग्निशामक यंत्र और एरोसोल जैसे उत्पादों में होता था। इन रसायनों को नियंत्रित करने के लिए वर्ष 1987 में मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल अपनाया गया, जिसे पर्यावरण संरक्षण की दिशा में दुनिया के सबसे सफल अंतरराष्ट्रीय समझौतों में माना

जाता है। सरल शब्दों में कहें तो मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल का मुख्य उद्देश्य ओजोन परत को नुकसान पहुंचाने वाले रसायनों, जैसे क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सीएफसीज), के उत्पादन और उपयोग को चरणबद्ध तरीके से कम करना और समाप्त करना है। भारत भी मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के कार्यान्वयन में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। फिर भी ओजोन परत की सुरक्षा के लिए निरंतर प्रयास जरूरी हैं। यह केवल पर्यावरण का विषय नहीं, बल्कि मानव स्वास्थ्य और पृथ्वी पर जीवन की सुरक्षा से जुड़ा प्रश्न है। इसलिए पर्यावरण के अनुकूल शीतलन तकनीकों को अपनाना और ओजोन-क्षयकारी पदार्थों के उपयोग को कम करना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। इसके बाद, वर्ष 2016 में किगाली संशोधन अपनाया गया, जिसके तहत हाइड्रोफ्लोरोकार्बन (एचएफसी) के उपयोग को धीरे-धीरे कम करने का लक्ष्य रखा गया। उल्लेखनीय है कि मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के कड़े अनुपालन से ओजोन-क्षयकारी गैसों के वैश्विक उत्सर्जन में लगभग 99 प्रतिशत तक की कमी आई है। इसके सकारात्मक परिणाम अब आंकड़ों में भी दिखाई दे रहे हैं। नासा और विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) के वैज्ञानिक आकलनों के अनुसार, अंटार्कटिक ओजोन छिद्र का अधिकतम आकार अब लगभग 22.8 मिलियन वर्ग किलोमीटर के दायरे में रह गया है, जो वर्ष 2000 के 28.4 मिलियन वर्ग किलोमीटर के रिकॉर्ड स्तर से काफी कम है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यदि मौजूदा नियमों का सख्ती से पालन जारी रहा तो दुनिया के अधिकांश हिस्सों में ओजोन परत 2040 तक, आर्कटिक में 2045 तक और अंटार्कटिका के ऊपर 2066 तक वर्ष 1980 के ऐतिहासिक स्तर पर लौट सकती है। हालांकि, पर्यावरण को लेकर पूरी तरह निश्चित होने का समय अभी नहीं आया है। जंगलों की भीषण आग, अनियंत्रित रॉकेट

ओजोन परत की हिफाजत केवल अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों या सरकारी संधियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारी दैनिक जीवनशैली और उपभोक्ता प्राथमिकताओं से भी जुड़ी है। व्यक्तिगत स्तर पर घर और कार्यालय में इस्तेमाल होने वाले कूलिंग उपकरणों के प्रति सजग रहना जरूरी है। एयर कंडीशनर और रेफ्रिजरेटर खरीदते समय यह देखना चाहिए कि उनमें ओजोन-क्षयकारी सीएफसी और एचसीएफसी का उपयोग न हो। पुराने उपकरणों की समय पर मरम्मत और सुरक्षित पुनर्चक्रण (रीसाइक्लिंग) भी आवश्यक है, क्योंकि उपकरणों से गैसों का रिसाव पर्यावरण के लिए नुकसानदेह हो सकता है।

प्रक्षेपण, अप्रतिबंधित औद्योगिक रसायनों, जैसे डाइक्लोरोमीथेन, और लगातार बढ़ता कार्बन उत्सर्जन नई चुनौतियां पैदा कर रहे हैं। जंगलों की आग से उठने वाला रासायनिक धुआं तथा अंतरिक्ष मलबे के ऊपरी वायुमंडल में जलने से उत्पन्न एरोसोल ओजोन की रिकवरी की गति को प्रभावित कर सकते हैं। इसके अलावा, तेजी से बढ़ते अंतरिक्ष अभियानों, रॉकेट प्रक्षेपणों और समताप मंडल में उड़ने वाले विमानों से निकलने वाले ब्लैक कार्बन और कालिख को लेकर भी गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। यह स्पष्ट संकेत है कि प्रकृति के साथ किया गया कोई भी असंतुलन हमारे इस अदृश्य सुरक्षा कवच को प्रभावित कर सकता है।

वास्तव में, ओजोन परत की हिफाजत केवल अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों या सरकारी संधियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारी दैनिक जीवनशैली और उपभोक्ता प्राथमिकताओं से भी जुड़ी है। व्यक्तिगत स्तर पर घर और कार्यालय में इस्तेमाल होने वाले कूलिंग उपकरणों के प्रति सजग रहना जरूरी है। एयर कंडीशनर और रेफ्रिजरेटर खरीदते समय यह देखना चाहिए कि उनमें ओजोन-क्षयकारी सीएफसी

और एचसीएफसी का उपयोग न हो। पुराने उपकरणों की समय पर मरम्मत और सुरक्षित पुनर्चक्रण (रीसाइक्लिंग) भी आवश्यक है, क्योंकि उपकरणों से गैसों का रिसाव पर्यावरण के लिए नुकसानदेह हो सकता है। एरोसोल स्प्रे, फोम पैकेजिंग, कीटनाशकों और रासायनिक विलायकों के मामले में भी पर्यावरण-अनुकूल विकल्पों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इतना ही नहीं, व्यापक स्तर पर ओजोन परत की रक्षा के लिए औद्योगिक और नीतिगत मोर्चे पर निरंतर निगरानी आवश्यक है। मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के साथ-साथ किगाली संशोधन का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करना होगा। हाइड्रोफ्लोरोकार्बन जैसी शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैसों को चरणबद्ध रूप से कम करना, जीवाश्म ईंधनों के सीमित उपयोग और सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देना तथा औद्योगिक गतिविधियों से होने वाले उत्सर्जन पर नियंत्रण जरूरी है। वाहनों और कल-कारखानों से निकलने वाला नाइट्रस ऑक्साइड भी वायुमंडलीय संतुलन को प्रभावित करता है। इसके साथ ही, अंतरिक्ष अभियानों, रॉकेट प्रक्षेपणों और समताप मंडल से जुड़े विमानों के पर्यावरणीय प्रभावों पर वैज्ञानिक निगरानी तथा आवश्यक नियमन समय की मांग है।

अंततः, यही कहूंगा कि मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल ने यह साबित किया है कि जब पूरी दुनिया किसी पर्यावरणीय चुनौती के समाधान के लिए एकजुट होकर काम करती है, तो सकारात्मक परिणाम हासिल किए जा सकते हैं। ओजोन परत की रिकवरी मानवता के लिए उम्मीद की एक बड़ी किरण है, लेकिन इस उपलब्धि को स्थायी बनाए रखने के लिए व्यक्तिगत समझदारी, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, पर्यावरण-अनुकूल तकनीक और कड़े वैश्विक नियमों का निरंतर पालन आवश्यक है। ओजोन परत सुरक्षित रहेगी, तभी पृथ्वी पर जीवन सुरक्षित रहेगा।

पुस्तकें बिकती हैं, पाठकीयता नहीं



डॉ. विजय गर्ग
मलोट, पंजाब

किताब छापी जा सकती है, प्रदर्शित की जा सकती है, उसका विज्ञापन किया जा सकता है, उस पर छूट दी जा सकती है और उसे बेचा जा सकता है। लेकिन पाठकीय संस्कृति केवल विपणन के माध्यम से पैदा नहीं की जा सकती। कोई पुस्तक पाठक की अलमारी तक तो पहुँच सकती है, लेकिन यह जरूरी नहीं कि वह उसके मन और विचारों तक भी पहुँचे। किसी पुस्तक की वास्तविक सफलता केवल उसकी बिक्री के आंकड़ों में नहीं, बल्कि इस बात में है कि कितने लोगों ने उसे पढ़ा, उसके विचारों पर चिंतन किया और उन्हें अपने जीवन में उतारने का प्रयास किया।

आज का प्रकाशन उद्योग अत्यंत प्रतिस्पर्धी हो गया है। प्रकाशक, लेखक और पुस्तक विक्रेता स्वाभाविक रूप से बिक्री, लोकप्रियता, रैंकिंग और व्यावसायिक सफलता पर ध्यान देते हैं। आकर्षक आवरण, प्रचार अभियान, सोशल मीडिया पोस्ट और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ने पुस्तकों को पहले की तुलना में अधिक सुलभ बना दिया है। फिर भी एक विरोधाभासी स्थिति सामने आ रही है—पुस्तकों की उपलब्धता बढ़ रही है, लेकिन निरंतर और गंभीर पढ़ने की आदत कई चुनौतियों का सामना कर रही है।

स्मार्टफोन और छोटे डिजिटल कंटेंट के



फोटो : एआई

कोई व्यक्ति किसी पुस्तक को सिफारिश, बेस्टसेलर के लेबल या आकर्षक विज्ञापन से प्रभावित होकर खरीद सकता है। लेकिन खरीदना केवल शुरुआत है। वास्तविक परिवर्तन तब होता है जब पाठक पुस्तक खोलता है, उसके विचारों से जुड़ता है, उन पर विचार करता है और अगली पुस्तक पढ़ने की इच्छा विकसित करता है। एक सच्ची पाठकीय संस्कृति धीरे-धीरे विकसित होती है—जिज्ञासा, पारिवारिक वातावरण, पुस्तकालयों, विद्यालयों और पुस्तकों पर सार्थक बातचीत के माध्यम से।

बढ़ते प्रभाव ने लोगों के सूचना ग्रहण करने के तरीके को बदल दिया है। अनेक युवा वीडियो, सुर्खियों और छोटी-छोटी पोस्ट को तेजी से देखने और आगे बढ़ जाने के अभ्यस्त हो रहे हैं। किसी लंबे अध्याय को पढ़ने के लिए धैर्य, एकाग्रता और मानसिक सहभागिता की आवश्यकता होती है। छोटी डिजिटल क्लिप के विपरीत पुस्तक हमेशा तत्काल मनोरंजन या उत्तेजना प्रदान नहीं करती। वह पाठक से समय और ध्यान मांगती है।

यहीं पुस्तक बेचने और पाठक बनाने के बीच का अंतर महत्वपूर्ण हो जाता है।

कोई व्यक्ति किसी पुस्तक को सिफारिश, बेस्टसेलर के लेबल या आकर्षक विज्ञापन से प्रभावित होकर खरीद सकता है। लेकिन खरीदना केवल शुरुआत है। वास्तविक परिवर्तन तब होता है जब पाठक पुस्तक

खोलता है, उसके विचारों से जुड़ता है, उन पर विचार करता है और अगली पुस्तक पढ़ने की इच्छा विकसित करता है। एक सच्ची पाठकीय संस्कृति धीरे-धीरे विकसित होती है—जिज्ञासा, पारिवारिक वातावरण, पुस्तकालयों, विद्यालयों और पुस्तकों पर सार्थक बातचीत के माध्यम से।

इस प्रक्रिया में विद्यालयों की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। पढ़ने को केवल परीक्षा की आवश्यकता के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकों से आगे बढ़कर कहानियाँ, जीवनियाँ, विज्ञान की पुस्तकें, इतिहास, यात्रा-वृत्तांत, कविता और उनकी आयु के अनुरूप साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। जब पढ़ना केवल परीक्षा से जुड़ जाता है, तो वह बोझ जैसा लग सकता है। लेकिन जब पढ़ना खोज, आनंद

और जिज्ञासा से जुड़ता है, तो यह जीवनभर की आदत बन सकता है।

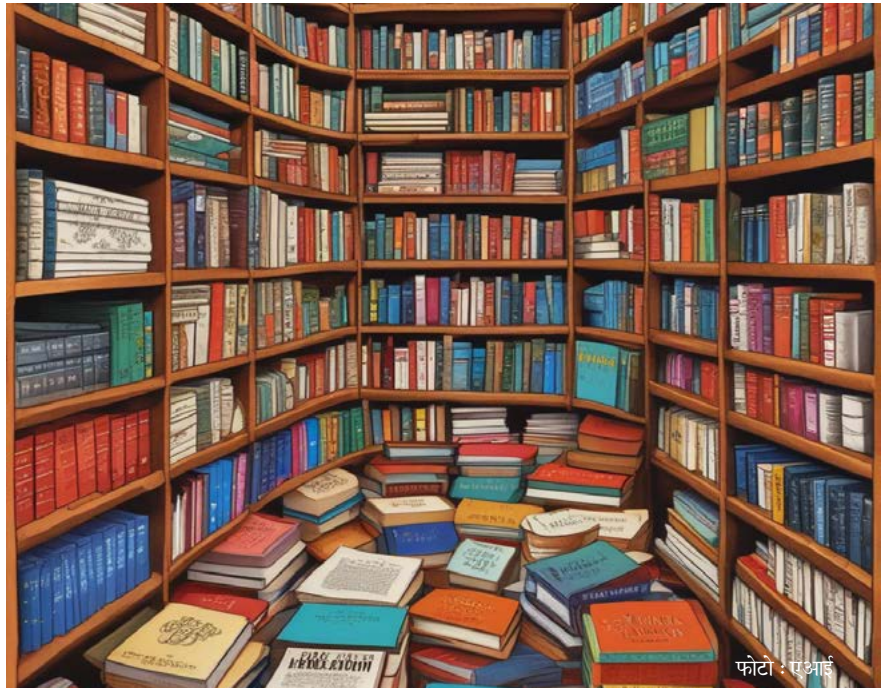
परिवार भी बच्चों के पुस्तक-प्रेम को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिस बच्चे के माता-पिता को पढ़ते हुए देखकर वह बड़ा होता है, उसके लिए पुस्तक केवल पढ़ाई का साधन नहीं रहती, बल्कि ज्ञान, कल्पना और मानसिक संगति का स्रोत बन जाती है। परिवार में प्रतिदिन कुछ मिनट साथ बैठकर पढ़ना भी बच्चों के मन में पुस्तकों के प्रति सकारात्मक भावना पैदा कर सकता है।

पुस्तकालयों को भी समय के साथ बदलना होगा। आधुनिक पुस्तकालय का काम केवल पुस्तकों को संग्रहित करना नहीं, बल्कि पाठक तैयार करना होना चाहिए। पठन क्लब, लेखक से संवाद, कहानी सुनाने के कार्यक्रम, पुस्तक परिचर्चाएँ और विद्यार्थियों द्वारा पुस्तक-सिफारिश जैसी गतिविधियाँ पुस्तकालयों को जीवंत सामुदायिक केंद्र बना सकती हैं। डिजिटल संसाधन मुद्रित पुस्तकों के विकल्प के बजाय उनके सहयोगी बन सकते हैं।

इसलिए चुनौती केवल अधिक पुस्तकें बेचने की नहीं है। चुनौती ऐसा वातावरण बनाने की है, जिसमें लोग स्वेच्छा से पढ़ना चाहें।

प्रकाशक पुस्तकें बाजार तक पहुँचा सकते हैं, लेखक उन्हें लिख सकते हैं, शिक्षक उनकी सिफारिश कर सकते हैं और पुस्तकालय उन्हें उपलब्ध करा सकते हैं। लेकिन अंतिम निर्णय पाठक का ही होता है। कोई विज्ञापन किसी व्यक्ति को जिज्ञासु बनाने के लिए मजबूर नहीं कर सकता। कोई छूट एकाग्रता की गारंटी नहीं दे सकती। कोई बेस्टसेलर सूची पढ़ने के प्रति प्रेम पैदा नहीं कर सकती।

अंततः पुस्तक एक उत्पाद हो सकती है, लेकिन पढ़ना एक संस्कृति है। उत्पाद का विपणन किया जा सकता है, संस्कृति का निर्माण और पोषण करना पड़ता है।



फोटो : ए.आई

जो समाज विचारशील नागरिक तैयार करना चाहता है, उसे केवल अधिक पुस्तकें प्रकाशित करने में नहीं, बल्कि अधिक पाठक तैयार करने में भी निवेश करना होगा। स्वस्थ पुस्तक संस्कृति की अंतिम कसौटी यह नहीं होनी चाहिए कि कितनी पुस्तकें बिकीं, बल्कि यह होनी चाहिए कि कितने मन और कितने विचार खुले।

पुस्तकें बेची जा सकती हैं, लेकिन पाठक प्रेरित करने पड़ते हैं।

घर में अनपढ़ी किताबें पड़ी होने के बावजूद हम नई किताबें क्यों खरीदते रहते हैं— एक बेबाक इक्रबालिया बयान

क्या कभी आप किताबों की दुकान में यह सोचकर दाखिल हुए हैं कि, “मैं तो सिर्फ देखने आया हूँ,” और बाहर निकलते समय आपके हाथ में तीन किताबें हों? फिर कुछ सप्ताह बाद आपको एहसास होता है कि वे किताबें अभी भी आपकी अलमारी में बिना पढ़ी पड़ी हैं।

अगर ऐसा आपके साथ भी होता है, तो आप अकेले नहीं हैं। मैं भी यह स्वीकार करता हूँ— मेरे साथ भी ऐसा होता है।

किताबों में एक अजीब-सा आकर्षण होता है। घर में पहले से ही अनपढ़ी किताबों का ढेर पड़ा हो, फिर भी कोई नई किताब हमें यह महसूस करा देती है कि यह तो हमारे पास होनी ही चाहिए। कभी उसका विषय, कवर, लेखक या सिर्फ यह विचार हमें आकर्षित कर लेता है— “समय मिला तो इसे जरूर पढ़ूँगा।”

जापानी भाषा में इस आदत के लिए एक सुंदर शब्द है—‘त्सुंदोकु’। इसका अर्थ है किताबें खरीदते जाना और उन्हें बिना पढ़े जमा होने देना। यह उस आनंद को व्यक्त करता है जो हमें उन संभावनाओं को अपने पास रखने से मिलता है, जिन्हें हमने अभी खोजा नहीं है। अनपढ़ी किताब केवल एक अधूरा काम नहीं होती; वह भविष्य में मिलने वाले एक नए अनुभव की प्रतीक्षा भी होती है।

हम हमेशा किताब नहीं खरीद रहे होते— हम एक संभावना खरीद रहे होते हैं

जब मैं कोई किताब खरीदता हूँ तो यह जरूरी नहीं कि मैं अपने आप से यह वादा कर रहा हूँ कि इसे कल ही पढ़ूँगा। कई बार मैं इसके साथ कुछ नया सीखने की संभावना खरीद रहा होता हूँ।

विज्ञान की किताब कोई नया विचार दे सकती है। इतिहास की किताब अतीत का कोई भूला हुआ अध्याय खोल सकती है। शिक्षा पर लिखी किताब हमारे पढ़ाने और सीखने के तरीके को चुनौती दे सकती है। कोई उपन्यास हमें किसी दूसरी दुनिया में ले जा सकता है।

इसलिए अनपढ़ी किताब हमेशा असफलता का संकेत नहीं होती। कई बार यह अपने सही समय की प्रतीक्षा करती हुई जिज्ञासा होती है।

किताबों के साथ एक भावनात्मक रिश्ता भी जुड़ा होता है। वे हमारी यादों, रुचियों और सोच का हिस्सा बन जाती हैं। किसी व्यक्ति की निजी लाइब्रेरी उसकी बौद्धिक यात्रा की कहानी बता सकती है- उन किताबों के माध्यम से भी, जिन्हें अभी तक पढ़ा नहीं गया है। अनपढ़ी किताबों वाली अलमारी का पछतावा बेशक इसका एक दूसरा पक्ष भी है।

कई बार मैं अपनी अलमारी की ओर देखकर थोड़ा पछतावा महसूस करता हूँ- “मैं ये सारी किताबें कब पढ़ूँगा?” एक नई किताब घर आ जाती है और पहले से ही दस दूसरी किताबें मेरी प्रतीक्षा कर रही होती हैं। किताबों का ढेर हमारे पास उपलब्ध पढ़ने के समय से कहीं अधिक तेज़ी से बढ़ता जाता है।

आज की ज़िंदगी में यह बात और भी आसानी से समझी जा सकती है। काम, पारिवारिक ज़िम्मेदारियाँ, मोबाइल फोन, संदेश और रोज़मर्रा के अनगिनत काम हमारा ध्यान बाँटते रहते हैं। किताब खरीदने में कुछ मिनट लगते हैं, लेकिन उसे पढ़ने के लिए कई शांत घंटों की आवश्यकता पड़ सकती है।

फिर भी हैरानी की बात है कि अनपढ़ी किताबों का ढेर हमें खुश कर सकता है।

अनपढ़ी ई-मेल एक ज़िम्मेदारी लगती है, लेकिन अनपढ़ी किताब एक अवसर लगती है।

यह अंतर महत्वपूर्ण है।

क्या किताबें इकट्ठी करने वाला व्यक्ति वास्तव में ‘होर्डर’ है?

किताबों के साथ एक भावनात्मक रिश्ता भी जुड़ा होता है। वे हमारी यादों, रुचियों और सोच का हिस्सा बन जाती हैं। किसी व्यक्ति की निजी लाइब्रेरी उसकी बौद्धिक यात्रा की कहानी बता सकती है- उन किताबों के माध्यम से भी, जिन्हें अभी तक पढ़ा नहीं गया है। अनपढ़ी किताबों वाली अलमारी का पछतावा बेशक इसका एक दूसरा पक्ष भी है।

‘होर्डर’ शब्द का इस्तेमाल करते समय हमें सावधान रहना चाहिए। किताबों से प्यार करना, किताबें इकट्ठी करना या बहुत-सी अनपढ़ी किताबें रखना अपने आप में किसी मनोवैज्ञानिक बीमारी का संकेत नहीं है।

अधिकांश पुस्तक-प्रेमियों के लिए बहुत-सी किताबें रखना उनकी जिज्ञासा, ज्ञान की भूख और नई चीज़ें सीखने की इच्छा की अभिव्यक्ति है- हाँ, कभी-कभी यह थोड़ा महंगा शौक भी हो सकता है।

असल सवाल यह नहीं है कि-

“आपके पास कितनी किताबें हैं?”

असल सवाल यह है-

“क्या आपकी किताबें आपके जीवन को अधिक अर्थपूर्ण बना रही हैं?”

मेरा बेबाक इकबाल

मैं कई बार यह जानते हुए भी किताब खरीद लेता हूँ कि शायद मैं इसे तुरंत न पढ़ूँ।

क्यों?

क्योंकि मुझे इसका अपने आसपास होना अच्छा लगता है।

ये किताबें मुझे याद दिलाती हैं कि सीखने के लिए हमेशा कुछ नया है। वे उन सवालों का प्रतिनिधित्व करती हैं जो मैंने अभी पूछे नहीं हैं, उन विषयों का जिन्हें मैंने अभी खोजा नहीं है और उन विचारों का जिनसे मेरी अभी मुलाकात नहीं हुई है।

किताबों से भरी एक अलमारी, एक तरह से, अधूरी बातचीत से भरी अलमारी होती है।

शायद इसी कारण मेरे लिए किसी अच्छी किताब के पास से बिना रुके निकल जाना

मुश्किल होता है।

किताबें पढ़ें-या सिर्फ़ सँभालकर रखें?

इसका कोई एक नियम नहीं है।

कुछ किताबें तुरंत पढ़ी जानी चाहिए। कुछ इंतज़ार कर सकती हैं। कुछ शायद वर्षों तक अनपढ़ी रह जाएँ। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि जिस किताब को हमने बड़े उत्साह से खरीदा था, कुछ समय बाद वह हमारे लिए उतनी महत्वपूर्ण नहीं रह जाती।

इसमें भी कोई बुराई नहीं है।

किताबों के साथ हमारा रिश्ता केवल इस बात से नहीं मापा जा सकता कि हमने कितने पन्ने पढ़े हैं। यह इस बात से भी मापा जाता है कि उन्होंने हमारे भीतर कितनी जिज्ञासा पैदा की, कितने सवाल खड़े किए और कितने नए विचारों को जन्म दिया।

तो फिर, क्या आप भी ‘किताबो होर्डर’ हैं?

अगर आपकी अलमारियाँ अनपढ़ी किताबों से भरी पड़ी हैं, तो शायद आपको बहुत अधिक पछताने की आवश्यकता नहीं है।

हो सकता है आप केवल ऐसे व्यक्ति हों जो यह विश्वास करता है कि-

“भविष्य में पढ़ने के लिए अभी बहुत समय बाकी है।”

और जहाँ तक मेरी बात है- मैं मानता हूँ कि मेरी अनपढ़ी किताबों का ढेर अभी भी बढ़ रहा है।

लेकिन अब मैं इसे ‘ढेर’ नहीं कहता।

मैं इसे कहता हूँ-

‘मेरी प्रतीक्षा करती लाइब्रेरी।’

चंद्रयान-3 की सफलता के पीछे काम करने वाली इसरो की वैज्ञानिक



प्रकृतिमेल डेस्क

कल्पना कलहस्ती का नाम चंद्रयान-3 के ऐतिहासिक मिशन के साथ देशभर में चर्चा में आया, लेकिन उनका अंतरिक्ष कार्यक्रम से जुड़ाव केवल इसी मिशन तक सीमित नहीं था। उपलब्ध सार्वजनिक स्रोतों के अनुसार उन्होंने इससे पहले भी भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम से जुड़े कई महत्वपूर्ण कार्यों और अभियानों में योगदान दिया था। उनके अनुभव में चंद्रयान-2 और मंगलयान जैसे मिशन भी शामिल रहे। यही पिछला अनुभव चंद्रयान-3 के लिए महत्वपूर्ण बना, क्योंकि चंद्रयान-2 के अनुभव से इसरो ने अनेक तकनीकी और संचालन संबंधी सबक सीखे।



कल्पना कलहस्ती

जब भारत ने 23 अगस्त 2023 को चंद्रमा की सतह पर चंद्रयान-3 के लैंडर विक्रम की सफल सॉफ्ट लैंडिंग देखी, उस समय देश के करोड़ों लोगों की नजरें अंतरिक्ष की ओर थीं। यह केवल एक अंतरिक्ष यान

के चंद्रमा पर उतरने का क्षण नहीं था, बल्कि वर्षों की मेहनत, असफलताओं से मिली सीख, वैज्ञानिकों की सूक्ष्म गणनाओं, इंजीनियरों की तकनीकी समझ और हजारों लोगों के सामूहिक प्रयास का परिणाम था।

इस ऐतिहासिक अभियान में अनेक वैज्ञानिकों और इंजीनियरों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन्हीं में एक प्रमुख नाम कल्पना कलहस्ती का है, जो चंद्रयान-3 मिशन की Associate Project Director थीं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन यानी इसरो ने अपनी आधिकारिक सामग्री में उन्हें चंद्रयान-3 की प्रमुख कार्यकारी टीम का हिस्सा बताया है।

कल्पना कलहस्ती की कहानी इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि चंद्रयान-3 की सफलता को केवल एक व्यक्ति की उपलब्धि के रूप में देखना सही नहीं होगा। यह मिशन एक विशाल वैज्ञानिक और तकनीकी टीम का परिणाम था। इसरो के अनुसार चंद्रयान-3 की प्रमुख टीम में Project Director डॉ. पी. वीरमुथुवेल, Associate Project Director कल्पना कलहस्ती और Mission Operations Director एम. श्रीकांत सहित अलग-अलग केंद्रों के अनेक Deputy Project Directors शामिल थे। इस पूरी टीम को इसरो के Chairman और विभिन्न केंद्रों के निदेशकों का मार्गदर्शन प्राप्त था।

कल्पना कलहस्ती का नाम चंद्रयान-3 के ऐतिहासिक मिशन के साथ देशभर में चर्चा में आया, लेकिन उनका अंतरिक्ष कार्यक्रम से जुड़ाव केवल इसी मिशन तक सीमित नहीं था। उपलब्ध सार्वजनिक स्रोतों के अनुसार उन्होंने इससे पहले भी भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम से जुड़े कई महत्वपूर्ण कार्यों और अभियानों में योगदान दिया था। उनके अनुभव में चंद्रयान-2 और मंगलयान जैसे मिशन भी शामिल रहे। यही पिछला अनुभव चंद्रयान-3 के लिए महत्वपूर्ण बना, क्योंकि चंद्रयान-2 के अनुभव से इसरो ने अनेक तकनीकी और संचालन संबंधी सबक सीखे और उन्हीं सीखों को अगले मिशन में शामिल किया गया।

चंद्रयान-3 वास्तव में चंद्रयान-2 के बाद भारत की अगली कोशिश थी, लेकिन इसका उद्देश्य केवल पहले प्रयास को दोहराना नहीं था। इस बार मिशन की डिजाइन और परीक्षण



प्रक्रिया में पहले के अनुभवों से मिली सीख को विशेष महत्व दिया गया। कल्पना कलहस्ती ने स्वयं इसरो की आधिकारिक सामग्री में बताया कि मिशन चुनौतीपूर्ण था क्योंकि लैंडिंग की प्रक्रिया सामान्य रिमोट-सेंसिंग उपग्रहों की तुलना में पूरी तरह अलग थी। उन्होंने कहा कि अंतिम touchdown के क्षण पर टीम को लगा कि उसने अपना लक्ष्य हासिल कर लिया है।

चंद्रमा पर किसी अंतरिक्ष यान की सुरक्षित सॉफ्ट लैंडिंग अत्यंत जटिल प्रक्रिया होती है। अंतरिक्ष यान को चंद्रमा की कक्षा में पहुंचने के बाद नियंत्रित तरीके से नीचे लाना पड़ता है। लैंडर की गति को लगातार नियंत्रित करना होता है और अलग-अलग चरणों में उसकी स्थिति तथा वेग का आकलन करना पड़ता है। चंद्रयान-3 की लैंडिंग प्रक्रिया में rough braking, altitude hold, fine braking और terminal descent जैसे महत्वपूर्ण चरण थे। इसरो की प्रकाशित सामग्री में कल्पना कलहस्ती ने बताया कि इन critical phases को पार करना टीम के लिए राहत का क्षण था और विशेष रूप से altitude hold तथा hovering phase अत्यंत महत्वपूर्ण थे।

जब विक्रम लैंडर चंद्रमा की सतह के

करीब पहुंच रहा था, तब कुछ ही मिनटों में वर्षों की मेहनत का परिणाम सामने आने वाला था। इस दौरान अंतरिक्ष यान की गति, ऊंचाई और दिशा पर अत्यंत सावधानी से नियंत्रण रखना आवश्यक था। लैंडिंग के दौरान एक छोटी तकनीकी समस्या भी मिशन के परिणाम को प्रभावित कर सकती थी। इसलिए मिशन टीम ने केवल अंतरिक्ष यान तैयार नहीं किया था, बल्कि उसके व्यवहार की विभिन्न परिस्थितियों में जांच करने और संभावित समस्याओं से निपटने के लिए भी व्यापक तैयारी की थी।

कल्पना कलहस्ती ने चंद्रयान-3 की सफलता के बाद मिशन की कठिनाइयों को याद करते हुए बताया कि टीम के लिए यह काम लगातार मेहनत वाला था। इसरो की आधिकारिक सामग्री में उनके शब्दों के अनुसार मिशन के दौरान चार महत्वपूर्ण चरणों को पार करना था और प्रत्येक चरण के सफलतापूर्वक पूरा होने पर टीम को राहत मिलती थी। जब लैंडर hovering phase में पहुंचा और उसकी velocity को नियंत्रित किया गया, तब टीम के लिए वह बेहद महत्वपूर्ण क्षण था।

चंद्रयान-3 की कहानी में एक और महत्वपूर्ण पहलू है—असफलता से सीखना।



चंद्रयान-2 की लैंडिंग पूरी तरह सफल नहीं हो सकी थी। लेकिन वैज्ञानिक मिशन की विफलता को अंतिम परिणाम मानकर रुक नहीं गए। उसके डेटा, अनुभव और तकनीकी समस्याओं का अध्ययन किया गया। इसके बाद चंद्रयान-3 के लिए लैंडर और मिशन से जुड़ी प्रणालियों में बदलाव तथा सुधार किए गए। यही वैज्ञानिक दृष्टिकोण किसी भी अंतरिक्ष कार्यक्रम की ताकत होता है। किसी प्रयोग के अपेक्षित परिणाम नहीं मिलने पर उससे सीखकर अगला प्रयास अधिक बेहतर बनाया जाता है।

कल्पना कलहस्ती उन वैज्ञानिकों में शामिल थीं जिन्होंने चंद्रयान-2 के अनुभव के बाद चंद्रयान-3 के काम में योगदान दिया। सार्वजनिक स्रोतों में उन्हें चंद्रयान-2 की टीम से भी जोड़ा गया है। चंद्रयान-3 के लिए यह पिछला अनुभव विशेष रूप से उपयोगी था क्योंकि टीम को पता था कि पिछली कोशिश में किन परिस्थितियों और चुनौतियों का सामना करना पड़ा था।

चंद्रयान-3 केवल एक लैंडिंग मिशन नहीं था। इसरो के अनुसार इसके साथ सात वैज्ञानिक

उपकरण थे। लैंडर में ILSA, RAMBHA-LP, CHASTE और NASA का Laser Retroreflector Array शामिल था। रोवर में APXS और LIBS जैसे उपकरण थे, जबकि propulsion module पर SHAPE उपकरण लगाया गया था। इन उपकरणों का उद्देश्य चंद्रमा की सतह, उसके आसपास के प्लाज्मा वातावरण, तापीय गुणों, तत्वীয় संरचना और अन्य वैज्ञानिक पहलुओं का अध्ययन करना था।

चंद्रयान-3 की सफलता के पीछे केवल वैज्ञानिक ज्ञान ही नहीं था, बल्कि टीमवर्क भी बहुत महत्वपूर्ण था। इसरो ने स्वयं इस मिशन को collaborative effort के रूप में वर्णित किया है। अलग-अलग केंद्रों और विभागों के वैज्ञानिकों तथा इंजीनियरों ने spacecraft, propulsion, navigation, sensors, communications, mission operations और scientific instruments से संबंधित अलग-अलग जिम्मेदारियां निभाईं। कल्पना कलहस्ती जैसे वैज्ञानिकों का काम इसी विशाल प्रणाली के भीतर अलग-अलग टीमों के बीच समन्वय

और मिशन की आवश्यकताओं पर लगातार ध्यान देना था।

चंद्रयान-3 की उपलब्धि का एक महत्वपूर्ण संदेश यह भी था कि अंतरिक्ष विज्ञान में महिलाओं की भूमिका लगातार बढ़ रही है। इस मिशन में अनेक महिला वैज्ञानिक और इंजीनियर अलग-अलग तकनीकी क्षेत्रों में काम कर रही थीं। इसरो की प्रकाशित सामग्री में स्वयं यह उल्लेख किया गया है कि मिशन में पुरुषों और महिलाओं ने मिलकर काम किया। कल्पना कलहस्ती ने इसे टीम की सामूहिक उपलब्धि के रूप में देखा और कहा कि वैज्ञानिक तथा इंजीनियरिंग कार्यों के अलावा प्रशासन, वित्त, fabrication और अन्य क्षेत्रों में भी महिलाओं का योगदान रहा।

चंद्रयान-3 के सफल touchdown के बाद कल्पना कलहस्ती ने इसे टीम के लिए अत्यंत यादगार क्षण बताया। उनके लिए यह केवल एक व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं थी। उन्होंने पूरी टीम की मेहनत और समर्पण को सफलता का आधार माना। इसरो द्वारा प्रकाशित उनके वक्तव्य में मिशन के सफल touchdown को वह क्षण बताया गया जब

वर्षों की मेहनत का परिणाम सामने आया।

कल्पना कलहस्ती की कहानी की खास बात यह है कि इसमें अंतरिक्ष विज्ञान के साथ-साथ निरंतर सीखने की भावना भी दिखाई देती है। चंद्रयान-2 से मिली सीख को चंद्रयान-3 में इस्तेमाल किया गया। अंतरिक्ष अभियानों में कोई भी मिशन पूरी तरह सरल नहीं होता। लाखों किलोमीटर दूर काम कर रहे अंतरिक्ष यान से संबंधित निर्णय पृथ्वी पर मौजूद वैज्ञानिकों को उपलब्ध आंकड़ों और प्रणालियों के आधार पर लेने पड़ते हैं। इसलिए छोटी-सी तकनीकी जानकारी भी अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकती है।

चंद्रयान-3 की यात्रा में कोविड-19 महामारी का दौर भी आया। मिशन की तैयारी और विकास के दौरान दुनिया भर में काम करने के तरीकों में बड़े बदलाव हुए थे। इसके बावजूद इसरो की टीम ने मिशन पर काम जारी रखा। उपलब्ध स्रोतों में कल्पना कलहस्ती की भूमिका को मिशन की निरंतरता और उसके विस्तृत तकनीकी काम से जोड़ा गया है।

उनका करियर यह भी दिखाता है कि भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम केवल रॉकेट लॉन्च करने तक सीमित नहीं है। इसरो में वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को उपग्रहों, संचार प्रणालियों, पृथ्वी अवलोकन, मिशन डिजाइन, navigation, spacecraft operations और अन्य तकनीकी क्षेत्रों में काम करना पड़ता है। कल्पना कलहस्ती के बारे में प्रकाशित विवरणों में उनके satellite programmes और पूर्व अंतरिक्ष अभियानों से जुड़े अनुभव का उल्लेख मिलता है।

चंद्रयान-3 की सफलता के बाद कल्पना कलहस्ती का नाम उन भारतीय महिला वैज्ञानिकों की सूची में प्रमुखता से सामने आया जिन्होंने देश के अंतरिक्ष कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में योगदान दिया। हालांकि किसी बड़े अंतरिक्ष मिशन को केवल किसी एक वैज्ञानिक की उपलब्धि कहना उचित नहीं है।

**कल्पना कलहस्ती का नाम
चंद्रयान-3 के ऐतिहासिक मिशन
के साथ देशभर में चर्चा में आया,
लेकिन उनका अंतरिक्ष कार्यक्रम से
जुड़ाव केवल इसी मिशन तक सीमित
नहीं था। उपलब्ध सार्वजनिक स्रोतों
के अनुसार उन्होंने इससे पहले भी
भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम से जुड़े
कई महत्वपूर्ण कार्यों और अभियानों
में योगदान दिया था। उनके अनुभव
में चंद्रयान-2 और मंगलयान जैसे
मिशन भी शामिल रहे। यही पिछला
अनुभव चंद्रयान-3 के लिए महत्वपूर्ण
बना, क्योंकि चंद्रयान-2 के अनुभव
से इसरो ने अनेक तकनीकी और
संचालन संबंधी सबक सीखे।**

चंद्रयान-3 हजारों लोगों के संयुक्त प्रयास का परिणाम था। फिर भी मिशन के प्रमुख पद पर कार्य करने वाली कल्पना कलहस्ती जैसी वैज्ञानिकों की जिम्मेदारी और निर्णयों का महत्व अलग स्तर का था।

आज जब भारत चंद्रमा के बाद सूर्य, मानव अंतरिक्ष उड़ान और भविष्य के अन्य अंतरिक्ष अभियानों की ओर बढ़ रहा है, तब कल्पना कलहस्ती की कहानी नई पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए एक उपयोगी उदाहरण बन सकती है। अंतरिक्ष विज्ञान में सफलता केवल प्रतिभा से नहीं मिलती। इसके लिए गणित, भौतिकी, इंजीनियरिंग, प्रयोग, परीक्षण, अनुशासन और लगातार सीखने की आवश्यकता होती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि किसी असफलता के बाद प्रयास बंद नहीं होना चाहिए।

चंद्रयान-3 की सफलता ने यह भी दिखाया कि वैज्ञानिक उपलब्धियां अचानक नहीं होतीं। एक सफल landing के पीछे वर्षों की तैयारी, हजारों परीक्षण, अनेक calculations, simulations, reviews और लगातार सुधार होते हैं। जब 23 अगस्त 2023 को विक्रम लैंडर चंद्रमा

की सतह पर सुरक्षित उतरा, तब उस कुछ मिनट के ऐतिहासिक दृश्य के पीछे वर्षों की मेहनत छिपी हुई थी। उस मेहनत में कल्पना कलहस्ती और उनकी टीम का भी महत्वपूर्ण योगदान था। इसरो की आधिकारिक जानकारी उन्हें चंद्रयान-3 की Associate Project Director के रूप में दर्ज करती है।

कल्पना कलहस्ती की कहानी इसलिए याद रखने योग्य है क्योंकि वह हमें बताती है कि अंतरिक्ष की ऊंचाइयों तक पहुंचने के लिए केवल बड़े सपने देखना पर्याप्त नहीं है। उन सपनों को विज्ञान, तकनीक, मेहनत और टीमवर्क में बदलना पड़ता है। चंद्रयान-3 ने भारत को चंद्रमा पर सफल soft landing कराने वाले देशों की सूची में स्थापित किया और इस उपलब्धि के पीछे काम करने वाली वैज्ञानिक टीम में कल्पना कलहस्ती का नाम भी दर्ज हुआ। उनकी यात्रा भारत की उस वैज्ञानिक परंपरा का हिस्सा है जिसमें अलग-अलग पीढ़ियों के वैज्ञानिक लगातार नई चुनौतियों को स्वीकार करते हुए देश के अंतरिक्ष कार्यक्रम को आगे बढ़ाते रहे हैं।

कल्पना कलहस्ती की कहानी का सबसे बड़ा संदेश शायद यही है कि विज्ञान में किसी एक दिन की सफलता के पीछे कई वर्षों की असफलताएं, सीख और तैयारी होती हैं। चंद्रयान-2 से मिली सीख ने चंद्रयान-3 की तैयारी को प्रभावित किया और अंततः भारत ने चंद्रमा की सतह पर सफल सॉफ्ट लैंडिंग की। इस यात्रा में कल्पना कलहस्ती जैसी वैज्ञानिकों ने जिस जिम्मेदारी के साथ काम किया, वह भारत की अंतरिक्ष यात्रा के इतिहास का महत्वपूर्ण हिस्सा है। आने वाले वर्षों में भारत जब चंद्रमा, सूर्य और मानव अंतरिक्ष उड़ान से जुड़े नए मिशनों की ओर बढ़ेगा, तब ऐसी वैज्ञानिकों की मेहनत नई पीढ़ी को विज्ञान और तकनीक की दुनिया में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती रहेगी।

दूर की दुनिया की तलाश

क्या ब्रह्मांड में पृथ्वी जैसी कोई और दुनिया है?



संज्ञय

रात के आकाश में दिखाई देने वाले तारे लंबे समय से मानव जिज्ञासा का केंद्र रहे हैं। लेकिन आज वैज्ञानिकों की नजर केवल तारों पर नहीं, बल्कि उन तारों के आसपास घूमने वाले ग्रहों पर भी है। हमारे सौरमंडल के बाहर मौजूद इन ग्रहों को एक्सोप्लैनेट कहा जाता है। 1995 में सूर्य जैसे एक तारे की परिक्रमा करने वाले पहले एक्सोप्लैनेट की खोज के बाद इस क्षेत्र में तेजी से प्रगति हुई और 2025 तक 6,000 से अधिक एक्सोप्लैनेट की पुष्टि हो चुकी थी।

इन दूरस्थ दुनियाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वैज्ञानिक उन्हें सामान्य कैमरे से सीधे देखना अक्सर संभव नहीं पाते। अधिकांश एक्सोप्लैनेट अपने तारे की तुलना में बेहद धुंधले होते हैं। इसलिए वैज्ञानिक उनकी मौजूदगी का पता लगाने के लिए अलग-अलग तकनीकों का इस्तेमाल करते हैं। इनमें एक महत्वपूर्ण तरीका “ट्रांजिट” है- जब कोई ग्रह अपने तारे के सामने से गुजरता है तो तारे की चमक में बेहद मामूली कमी आती है। इस बदलाव का विश्लेषण करके ग्रह के आकार और उसकी कक्षा के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इस खोज को एक नई दिशा देने वाला उपकरण है जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप। 25 दिसंबर 2021 को प्रक्षेपित यह अंतरिक्ष दूरबीन मुख्य रूप से इन्फ्रारेड प्रकाश में ब्रह्मांड का अध्ययन करती है। इसका 6.5 मीटर का



विशाल प्राथमिक दर्पण और अत्याधुनिक उपकरण वैज्ञानिकों को दूरस्थ ग्रहों तथा उनके वायुमंडल का अध्ययन करने में मदद करते हैं।

वेब की सबसे महत्वपूर्ण क्षमताओं में से एक एक्सोप्लैनेट के वायुमंडल का अध्ययन करना है। ग्रह जब अपने तारे के सामने से गुजरता है, तब तारकीय प्रकाश का एक छोटा हिस्सा उसके वायुमंडल से होकर गुजरता है। इस प्रकाश का स्पेक्ट्रम वैज्ञानिकों को यह पता लगाने में मदद कर सकता है कि वायुमंडल में कौन-से रासायनिक पदार्थ मौजूद हैं। पानी के वाष्प जैसे संकेत भी इस तरह के अध्ययनों में महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

हालांकि किसी ग्रह पर वायुमंडल या पानी की मौजूदगी का अर्थ यह नहीं है कि वहां जीवन अवश्य मौजूद है। जीवन की खोज कहीं अधिक जटिल प्रक्रिया है। वैज्ञानिकों को ग्रह का तापमान, वायुमंडलीय संरचना, तारे से उसकी दूरी, विकिरण और कई अन्य परिस्थितियों को एक साथ समझना होगा। इसी कारण “हैबिटेबल जोन” यानी वह क्षेत्र जहां परिस्थितियां तरल पानी के अनुकूल हो सकती हैं, वैज्ञानिकों के लिए विशेष रुचि का विषय है।

दिलचस्प बात यह है कि हर नई खोज हमारी पृथ्वी को और बेहतर तरीके से समझने में भी मदद करती है। कुछ एक्सोप्लैनेट अपने तारों के बेहद करीब हैं, कुछ गैसीय दानव हैं, जबकि कुछ चट्टानी ग्रह पृथ्वी के आकार के करीब हैं। हाल की खोजों में वैज्ञानिकों ने ऐसे अत्यंत गर्म और असामान्य ग्रहों का भी अध्ययन किया है जिनकी परिस्थितियां हमारे सौरमंडल से बिल्कुल अलग हैं।

भविष्य में अंतरिक्ष दूरबीनों की क्षमता बढ़ने के साथ वैज्ञानिकों की खोज केवल “नए ग्रह” ढूंढने तक सीमित नहीं रहेगी। लक्ष्य यह समझना होगा कि ये ग्रह कैसे बनते हैं, उनका वातावरण कैसे विकसित होता है और क्या उनमें जीवन के लिए आवश्यक परिस्थितियां मौजूद हो सकती हैं। संभव है कि आने वाले दशकों में मानव पहली बार किसी दूरस्थ पृथ्वी-सदृश दुनिया के वातावरण में ऐसे रासायनिक संकेत देखे, जो जीवन की संभावना की ओर इशारा करें। फिलहाल यह एक वैज्ञानिक संभावना है, प्रमाणित तथ्य नहीं-लेकिन ब्रह्मांड की विशालता को देखते हुए सवाल अभी खुला है: क्या हमारी पृथ्वी वास्तव में अकेली है?

टकराव के बीच अमेरिका- चीन मिलन के कूटनीतिक समझौते



सौरभ वाण्येय

वरिष्ठ पत्रकार, चिंतक

विश्व राजनीति में अमेरिका और चीन के संबंध इस समय एक ऐसे दौर से गुजर रहे हैं, जहां टकराव और संवाद दोनों साथ-साथ दिखाई दे रहे हैं। एक ओर दोनों देश व्यापार, तकनीक, ताइवान, दुर्लभ खनिज, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और वैश्विक प्रभाव के विस्तार को लेकर एक-दूसरे के सामने खड़े हैं, तो दूसरी ओर आर्थिक हित उन्हें बातचीत की मेज पर भी ला रहे हैं। यही विरोधाभास आज के बदलते वैश्विक शक्ति संतुलन की सबसे बड़ी तस्वीर है। अमेरिका और चीन की हालिया नजदीकी को केवल मित्रता के रूप में देखना जितना गलत होगा, उतना ही इसे महज दिखावटी कूटनीति मान लेना भी उचित नहीं होगा। वास्तविकता यह है कि दोनों महाशक्तियां यह समझ रही हैं कि लगातार बढ़ता टकराव किसी एक पक्ष के हित में नहीं है। दुनिया की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच व्यापारिक तनाव बढ़ने का असर केवल वाशिंगटन और बीजिंग तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उसका प्रभाव पूरी वैश्विक अर्थव्यवस्था, आपूर्ति श्रृंखलाओं, निवेश और विकास की गति पर पड़ता है।

यही कारण है कि तीखे बयानों और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा के बावजूद संवाद के दरवाजे खुले रखे जा रहे हैं। अमेरिका अपनी आर्थिक और तकनीकी बढ़त को सुरक्षित रखना चाहता है, जबकि चीन अपने औद्योगिक



सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आज अमेरिका और चीन की प्रतिस्पर्धा केवल व्यापार तक सीमित नहीं रह गई है। तकनीक इस संघर्ष का नया केंद्र बन चुकी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सेमीकंडक्टर, दूरसंचार, इलेक्ट्रिक वाहन, उन्नत विनिर्माण और दुर्लभ खनिज जैसे क्षेत्र अब आर्थिक विकास के साथ-साथ राष्ट्रीय सुरक्षा से भी जुड़े हुए हैं। अमेरिका चीन की तकनीकी क्षमता और औद्योगिक विस्तार को लेकर सतर्क है, वहीं चीन अमेरिकी तकनीकी प्रतिबंधों को अपने विकास के रास्ते में बाधा के रूप में देखता है।

विस्तार, निर्यात बाजार और तकनीकी विकास के लिए स्थिर अंतरराष्ट्रीय वातावरण चाहता है। दोनों के हितों में टकराव है, लेकिन उनकी आर्थिक आवश्यकताएं उन्हें एक-दूसरे से पूरी तरह अलग होने की अनुमति नहीं देती।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आज अमेरिका और चीन की प्रतिस्पर्धा केवल व्यापार तक सीमित नहीं रह गई है। तकनीक इस संघर्ष का नया केंद्र बन चुकी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सेमीकंडक्टर, दूरसंचार, इलेक्ट्रिक वाहन, उन्नत विनिर्माण और दुर्लभ खनिज

जैसे क्षेत्र अब आर्थिक विकास के साथ-साथ राष्ट्रीय सुरक्षा से भी जुड़े हुए हैं। अमेरिका चीन की तकनीकी क्षमता और औद्योगिक विस्तार को लेकर सतर्क है, वहीं चीन अमेरिकी तकनीकी प्रतिबंधों को अपने विकास के रास्ते में बाधा के रूप में देखता है।

इसके बावजूद दोनों देशों के बीच बातचीत का जारी रहना अपने आप में महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ यह नहीं कि दोनों के बीच रणनीतिक अविश्वास समाप्त हो गया है। बल्कि इसका अर्थ यह है कि दोनों देश अपने

मतभेदों को नियंत्रित रखने और उन क्षेत्रों में समझ बनाने की कोशिश कर रहे हैं जहां परस्पर हित जुड़े हुए हैं।

ताइवान का मुद्दा इस रिश्ते की सबसे संवेदनशील परीक्षा है। व्यापार और आर्थिक मामलों में समझ विकसित हो सकती है, लेकिन ताइवान को लेकर अमेरिका और चीन की रणनीतिक सोच में मूलभूत अंतर मौजूद है। इसी तरह दक्षिण चीन सागर, तकनीकी प्रतिस्पर्धा और वैश्विक प्रभाव के विस्तार को लेकर भी दोनों देशों के बीच मतभेद आसानी से समाप्त होने वाले नहीं हैं। इसलिए वर्तमान नजदीकी को स्थायी दोस्ती की शुरुआत मानना जल्दबाजी होगी।

असल में अमेरिका और चीन के संबंधों में एक नई तरह की कूटनीति दिखाई दे रही है। प्रतिस्पर्धा के साथ सह-अस्तित्व की कूटनीति। दोनों देश एक-दूसरे के प्रभाव को सीमित करना चाहते हैं, लेकिन पूर्ण टकराव से भी बचना चाहते हैं। वे व्यापार करना चाहते हैं, लेकिन रणनीतिक निर्भरता कम करना चाहते हैं। वे संवाद चाहते हैं, लेकिन अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा और तकनीकी हितों से समझौता करने के लिए तैयार नहीं हैं। यही स्थिति आने वाले समय की विश्व राजनीति को भी प्रभावित करेगी। यदि अमेरिका और चीन के बीच व्यापारिक तनाव नियंत्रित रहता है तो वैश्विक बाजारों को कुछ स्थिरता मिल सकती है। इसके विपरीत यदि शुल्क युद्ध फिर तेज होता है तो उसका असर विकासशील देशों पर भी पड़ेगा। महंगाई, आपूर्ति शृंखला और निर्यात बाजारों में अस्थिरता बढ़ सकती है।

भारत के लिए इस बदलते समीकरण को समझना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। भारत अमेरिका के साथ रणनीतिक और आर्थिक संबंधों को आगे बढ़ा रहा है, वहीं चीन भारत का पड़ोसी और एक महत्वपूर्ण व्यापारिक साझेदार है। ऐसे में भारत के लिए किसी एक शक्ति-गुट का हिस्सा बनने के बजाय अपने राष्ट्रीय हितों के आधार पर संतुलित और स्वतंत्र विदेश नीति को आगे बढ़ाना अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

अमेरिका और चीन के बीच यदि तनाव कम



फोटो : एआई

होता है तो भारत के लिए वैश्विक आर्थिक स्थिरता का वातावरण बन सकता है। वहीं यदि दोनों देशों के बीच प्रतिस्पर्धा बनी रहती है तो भारत के सामने विनिर्माण, आपूर्ति शृंखला और निवेश के क्षेत्र में अवसर भी पैदा हो सकते हैं। लेकिन इन अवसरों को हासिल करने के लिए भारत को अपनी उत्पादन क्षमता, तकनीकी दक्षता और निर्यात प्रतिस्पर्धा को मजबूत करना होगा।

सबसे बड़ा सवाल यह है कि अमेरिका और चीन की यह नजदीकी कितने समय तक टिकती है। क्या यह वास्तविक समझ की दिशा में कदम है या केवल तत्काल आर्थिक दबावों को कम करने की रणनीति? इसका उत्तर आने वाला समय देगा। दोनों देशों के बीच कई ऐसे मुद्दे हैं जिन पर सहमति बनना आसान नहीं है। इसलिए किसी एक बैठक या अस्थायी समझौते को स्थायी परिवर्तन का संकेत मानना उचित नहीं होगा।

फिर भी एक बात स्पष्ट है आज की दुनिया में महाशक्तियां भी एक-दूसरे से पूरी तरह कटकर नहीं चल सकतीं। आर्थिक परस्पर निर्भरता, वैश्विक व्यापार, तकनीकी विकास और साझा चुनौतियां उन्हें संवाद के लिए मजबूर करती हैं। यही कारण है कि अमेरिका और चीन के बीच टकराव के

बावजूद बातचीत का सिलसिला जारी है।

अमेरिका और चीन की वर्तमान नजदीकी का सबसे बड़ा संदेश यही है कि विश्व राजनीति अब केवल शक्ति प्रदर्शन से नहीं, बल्कि शक्ति और आवश्यकता के संतुलन से संचालित हो रही है। दोनों देश प्रतिस्पर्धी हैं, लेकिन एक-दूसरे की आर्थिक और वैश्विक भूमिका की अनदेखी नहीं कर सकते। इसलिए इस नजदीकी को दोस्ती या दुश्मनी के पुराने पैमाने पर देखने के बजाय बदलती विश्व व्यवस्था के संकेत के रूप में समझना चाहिए। आने वाले वर्षों में अमेरिका और चीन के बीच संबंधों का स्वरूप वैश्विक राजनीति की दिशा तय करने वाले प्रमुख कारकों में रहेगा। भारत के लिए चुनौती यह होगी कि वह इस बदलते समीकरण में अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए आर्थिक और कूटनीतिक अवसरों का अधिकतम लाभ उठाए।

अमेरिका और चीन की नजदीकी इसलिए केवल दो देशों के रिश्तों की कहानी नहीं है। यह बदलती विश्व व्यवस्था की कहानी है। जहां प्रतिद्वंद्विता खत्म नहीं हुई है, लेकिन टकराव को नियंत्रित करने की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है।

सूत्र वाक्य

अशोक मानव

- प्रकृति का हर अंदाज एक आनन्द है जो स्वाभाव बनकर गतिमान हो जाता है।
- हर मोड़ स्वरसायन मिलान का परिणाम है जिसमें बनने वाली ऊर्जा स्वतः अपना अग्रिम मार्ग बना लेती है।
- प्रकृति बीजत्व की पूर्णता में गुणात्मकता भोग से पदार्थ का निर्माण करती है।
- विचार मानव का मानसिक विज्ञान है जो अवस्था विशेष को सही गलत की परिभाषा से आदर्श विशेष की चारित्रिक दुनिया बनाना चाहता है जबकि प्रकृति जो जिस विजतत्व धारण करता है उसे पूरा करती है, अनन्त ब्रह्माण्ड विचार शून्य एक एहसास है जो जिस गुण को धारण करता है उसी का एहसास कर सकता है।
- प्रकृति प्रवृत्ति की धारा से हर जीव के स्वभाव से गतिमान होते हुए आनन्द देती है जिससे एक गुण विज्ञान का निर्माण होता है जो प्रकृति बनकर हर गुण निर्माण में सहायक हो जाती है।
- अपने स्वभाव का जीवन जीने के बाद हर व्यक्ति अमृत की बूँद बना सकता है जो उसके जीवन को सरलतम मार्ग से गतिमान करता है, अन्य मार्ग सिर्फ कठिनाई है।
- सौरऊर्जा का प्राकृतिक तापमान एक होता है पर यही तापमान जब व्यक्तिगत हो जाता है तो सबका अलग - अलग हो जाता है जो स्व विषय को पूर्ण करने का रासायनिक योग बनाता है जो व्यक्तिगत सौरऊर्जा बन जाता है।
- ज्ञात नयन प्रकृति की वह नेत्रा है जो जिस विषय से जुड़ती है उसे पूर्ण करने की जानकारी रखती है उसे ही 'ज्ञान' कहते हैं।
- मानसिक मार्ग का नयन बनाकर अपने वजूद को सिद्धांत करने वाला जीव 'मानव' है।
- रहस्य प्रकृति की पर्दा प्रणाली है जो दूसरे के मण्डल में जाने से रोककर स्वमंडल में अपनी अवस्था को दिखाता है।

जागा तो क्या पाया? सोया तो क्या खोया?



अशोक मानव

कौन सो रहा है? कौन सोयेगा? समय कहां रूकता है जो सोने देगा। प्रकृति गतिमान है जो कभी नहीं रूकती है फिर सोना कहां। सोना तो एक प्राकृतिक क्रिया है जो जीव को सुरक्षित कर ऊर्जा केन्द्रित करने हेतु होती है जिसमें व्यक्ति नकारात्मक ऊर्जा खत्म करके अपने विकास की तरफ बढ़ता है।

प्रकृति निर्माण के लिए दिन और रात का निर्माण होता है। इसी क्रिया का परिणाम जगना और सोना होता है। दोनों जीवन निर्माण की आवश्यकता है। जागृत अवस्था में व्यक्ति कर्ता होता है। और सोने की अवस्था में दृष्टा होता है। दोनों क्रिया अपने कार्य को पूरा कर, शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आवश्यक है। दोनों अवस्था में व्यक्ति कुछ प्राप्त करता है खोता नहीं है। अपना क्या है? जो खो जायेगा सब प्रकृति का है, आवश्यकता पड़ने पर मिलता है। कार्य पूरा होने के बाद प्रकृति में चला जाता है। यह क्रिया प्राकृतिक होती है, जो होती रहती है। यह तो प्राकृतिक विकास की आवश्यकता है सोना तो खोना नहीं बल्कि वह क्रिया है जो जागने में नहीं मिल पता है। वह सोने में मिल जाता है। सोना जागना दोनो एक दूसरे के पूरक हैं। एक विचार के लिए शरीर को तैयार करता है तो दूसरा विचार को छोड़कर कार्य पूरा करने की जमीन तैयार करता है। जागना भी पाना है, तो सोना भी पाना है। यह भ्रम अवैज्ञानिक है, जो ऐसा सोचता है कि जो सोता है वह खोता है। सोना भी जीवन के लिए उतना ही आवश्यक है जितना की जागना। सोना जागना प्राकृतिक जीवन जीने की एक कला है सोना जागना जीवन को सुचारू रूप से चलाने की एक आवश्यकता है। कम सोना शरीर की बिमारी का कारण बन जाता है इसकी आवश्यकता हर जीव को पड़ती है। यहां तक की निर्जीव भी इस क्रिया को करते हैं। जो दिन रात होने से पूरा होता



है। जीवन एक निश्चित चक्र घूमने तक होता है। चक्र के घूमने की क्रिया व्यक्ति की सक्रियता पर निर्भर करता है। जब व्यक्ति ज्यादा सोचने लगता है, तो चक्र तेज घूमने लगता है। जो उम्र को कम करता है। तेज विचार शरीर की गति होती है, जो चक्र को तेज घुमाने लगती है। सोना शरीर की गति को शान्त कर देता है। जिससे चक्र प्राकृतिक गति से घूमने लगता है। जिससे व्यक्ति एक निश्चित जीवन जी पाता है। गुफा में रहने वाले साधु संत की उम्र बढ़ जाती है क्योंकि वे लोग अपनी साधना में रहने के कारण हमेशा शान्त रहते हैं। हमेशा अपनी सोने जैसी अवस्था बनाए रखते हैं जिससे उनका जीवन चक्र धीमी गति से चलता रहता है। अधिक ध्यान करने से भी जीवन चक्र धीमी गति से चलता है जो उम्र को बढ़ाने में सहायक होता है जो लोग शारीरिक ज्यादा कार्य करते हैं, विचार कम चलता है उनको नींद अच्छी आती है कम सो के भी आवश्यकता की पूर्ति कर लेते हैं। जो मानसिक कार्य ज्यादा करते हैं, उन्हें ज्यादा नींद की जरूरत पड़ती है। इसीलिए वे लोग ज्यादा देर तक सोते हैं। जीवन चक्र का घूमना मानसिक कार्य करने से ज्यादा तेज चलता है। शारीरिक कार्य करने से कम तेज चलता है। जीवन चक्र सामान्य गति से चलता रहे तो इसके लिए जागना जितना जरूरी है उससे

ज्यादा सोना आवश्यक है। सोना जागना जीवन की आवश्यकता है। इसीलिए दोनों में कुछ प्राप्त होता है। कुछ खोता नहीं है।

जगते समय 'मन' (जीवन प्रकाश) शरीर में रहता है जो शरीर को सक्रिय बनाये रखता है। इसके रहने से शरीर की ज्ञानेन्द्रियां सक्रिय रहती हैं। जो घटना को देखती हैं। आँख देखकर, कान सुनकर, नाक गंध से जिह्वा स्वाद से और शरीर के अन्य अंग स्पर्श से एहसास करती हैं। जिसके बाद इसका संकेत आज्ञाचक्र पर पहुँचता है। मन अपने प्रकाश से उसका सही स्वरूप अंकित करता है। इस अंकन के बाद आज्ञाचक्र सही गलत का निर्णय लेता है जो जीवन के लिये उपयोगी होता है। उसकी इच्छा पैदा होती है। जिसके लिए विचार चलता है, जो सही लगता है, उसे व्यक्ति पाना चाहता है, उसके लिए भाव पैदा होता है। शरीर से उत्पन्न होने वाली गति भाव को मजबूत करने लगती है। यदि भाव शरीर को एहसास देता है। एहसास शरीर में रासायनिक परिवर्तन करके ऊर्जा तैयार करता है। यही ऊर्जा प्रकृति में निकल जाती है। जो विषय को पूरा करने के लिए सक्रिय हो जाती है और शरीर से वैसा कार्य करने लगती है जिससे विषय की प्राप्ति हो सके यह निरन्तरता तब तक जारी रहती है, जब तक विषय की प्राप्ति न हो जाए। ऊर्जा

विषय प्राप्ति के लिए उचित जलवायु का निर्माण करती है। जब उस विषय की पूर्ति की जलवायु तैयार हो जाती है तो उस विषय को पूरा होने का समय आ जाता है जो विषय को पूरा कर देता है विषय पूर्ति की कुछ वैज्ञानिकता होती है। जिस पर चलकर विषय को अवश्य पूरा किया जा सकता है। इसकी वैज्ञानिकता होती है दृढ़ इच्छाशक्ति। विषय प्राप्ति के प्रति सकारात्मक चिंतन किसी के कहने या परिस्थिति से निराशा न पैदा होने देना और अधिक से अधिक समय विषय के प्रति सकारात्मक चिंतन करते रहना। ऐसा करने से व्यक्ति के अंदर से निकलने वाली ऊर्जा विषय प्राप्ति का मार्ग दिखाने लगती है और उस विषय प्राप्ति के लिये जिस कर्म की आवश्यकता होती है। उसे करा लेती है। यही अवधिक ऊर्जा जिससे कार्य होना होता है, उसके अंदर प्रवेश कर विषय पूरा कर देने का भाव बना लेती है। जिससे विषय की प्राप्ति हो जाती है। कमजोर इच्छाशक्ति निराशजनक विचार (होगा की नहीं) विषय को पूरा होने में बाधा पैदा करते हैं। ऐसा विचार होने से नकारात्मक ऊर्जा बढ़ जाती है। जो विषय को पूरा होने नहीं देती है। कुछ ऐसे विषय भी लोग बनाते हैं जो प्रकृति को हानि पहुँचाने वाले होते हैं उस विषय को पूरा होने के लिए उचित जलवायु नहीं मिल पाती है। प्राकृतिक रूप से व्यक्ति की इच्छाशक्ति कमजोर हो जाती है। जिससे विषय पूरा करने के लिए शक्तिशाली ऊर्जा तैयार नहीं हो पाती है। व्यक्ति की जागृत अवस्था कर्ता की होती है जिसमें विषय तय करता है उसके लिए विचार पैदा करके भाव बनाता है और व्यवहारिक रूप से कर्म करता है। यह विषय पूर्ति की आवश्यक क्रिया है। ऐसा करने के बाद ही विषय की प्राप्ति होती है। जागृत अवस्था में व्यक्ति अनेकों विषयों से प्रभावित होता रहता है जिसके कारण एक विषय पर दृढ़ इच्छाशक्ति नहीं बन पाती है जो विषय प्राप्ति में रूकावट बनती है विषय प्राप्ति के लिए विषय चुनने में चाहे जितना विचार कर लो पर विषय चुनने के बाद उसी विषय प्राप्ति तक उसके लिए ही सकारात्मक विचार छोड़ते रहने से विषय की प्राप्ति होती है जागृत अवस्था विषय चुनने उसकी प्राप्ति के लिए ऊर्जा छोड़ने का कर्म करने का प्राकृतिक तरीका है। यदि इसे वैज्ञानिकता से किया जाये तो विषय प्राप्त होता है, जगते हुए व्यक्ति यही प्राप्त करते हैं।

जागृत अवस्था में छोड़ी गयी ऊर्जा से व्यक्ति के शरीर में थकान पैदा करती है जिसे दूर करने के लिए सोने की जरूरत पड़ती है। सोते समय शरीर शान्त होकर ऊर्जा लेता है। यह ऊर्जा थकान पैदा करने वाली ऊर्जा को खत्म करके शरीर को ऊर्जावान बनाकर सक्रिय कर देती

“जागृत अवस्था की नजर टोस है जो टोस अवस्था को देखती है पर आंतरिक नजर सूक्ष्म होती है जो सोते समय सूक्ष्म अवस्था को देखती है।”

है। जागृत अवस्था में व्यक्ति ऊर्जा अनेकों क्षेत्र में खर्च होती रहती है। पर सोते समय उसकी एक एक विषय को निपटाती है। इस समय मन एक ही विषय पर तब तक लगा रहता है जब तक उसे पूरा नहीं कर लेता। अर्थात् सोते समय व्यक्ति की ऊर्जा केन्द्रित हो जाती है। प्रकृति में एक सहयोगी और एक विरोधी ऊर्जा होती है। सहयोगी ऊर्जा विषयात्मक कार्य को आगे बढ़ाने में कार्य करती है और विरोधी ऊर्जा कार्य में रूकावट पैदा करने का कार्य करती है। विरोधी ऊर्जा का जन्म विरोधी लोगों द्वारा होता है। प्रकृति में विरोधी ऊर्जा भी विरोधी ऊर्जा बनकर रूकावट पैदा करती है। जब व्यक्ति विचारों से विषय की योजना बनाता है और उसे प्राप्त करने का भाव छोड़ता है, तो विरोधी ऊर्जा उसे रोकने का कार्य करने लगती है जिसके घर्षण से थकान पैदा हो जाती है। जागृत अवस्था में व्यक्ति अनेकों विषय के बारे में सोचता रहता है जिसके कारण शरीर की ऊर्जा केन्द्रित नहीं हो पाती है उसकी ताकत कमजोर पड़ जाती है इसीलिए विरोधी ऊर्जा खत्म नहीं हो पाती है। सोते समय ऊर्जा केन्द्रित होती है। जो जागृत अवस्था में बनाये गये विषयों को पूरा करती है। इस समय मन शरीर से बाहर निकलकर विषय पूर्ति का मार्ग बनाता है जो विरोधी ऊर्जा रूकावट बन रही होती है उसे खत्म करता है। सहयोगी लोगों की तलाश करता है जो क्रिया इस समय होती है, वह मानसिक पटल पर आती रहती है जिसे स्वजन कहते हैं। इस क्रिया से विषय विरोधी ऊर्जा खत्म हो जाती है जिससे व्यक्ति की थकान मिट जाती है। इतनी क्रिया व्यक्ति की आवश्यकता होती है। जो लोग कम सोते हैं वह हमेशा थके से रहते हैं। स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है रोग भी होने लगता है। कम सोने के कारण विरोधी ऊर्जा नहीं खत्म हो पाती है जिसके कारण से इस तरह की परेशानियाँ होने लगती है। ज्यादा सोना लाभदायक होता है। सोने की शुरुआत में मन विरोधी ऊर्जा को खत्म करता है उसके बाद सहयोगी की तलाश करता है। विषय प्राप्ति का मार्ग बनता है। जो हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है। उसके बाद का सोना भविष्य के बारे में देखता है। रूकावट को खत्म करता है और इच्छित विषय की प्राप्ति देखकर शरीर में उत्साह पैदा करता है। जिससे व्यक्ति उमंगित होता है। कम सोना हानिकारक

होता है और ज्यादा सोना लाभदायक होता है। यह क्रिया तो वैज्ञानिक है पर व्यवहारिकता में भी लोग इस बात की अनुभूति करते हैं कि सोते समय ही व्यक्ति तनाव मुक्त होता है। दुनियादारी की कोई चिन्ता नहीं रहती है। इसे यूँ कहा जाये कि सोना ही सोना है तो ज्यादा नहीं होगा। कम सोने वालों की कार्य करने की क्षमता कम होती है और ज्यादा सोने वालों की कार्य करने की क्षमता ज्यादा होती है।

व्यक्ति के जीवन में कभी-कभी ऐसी दुर्घटना हो जाती है कि सोना चाहते हुए भी नींद नहीं आती है या नकारात्मक विचार बढ़ जाने के कारण तनाव ज्यादा हो जाता है। जिसके कारण नींद कम आने लगती है। चूँकि व्यक्ति कम सोने लगता है। जिस कारण से विरोधी ऊर्जा खत्म नहीं हो पाती है जो नींद नहीं आने देती है। ऐसे समय में दुर्घटना में होने वाले नुकसान का समाधान ढूँढ़ ले और निराशा जनक विचार छोड़कर सकारात्मक सोचना शुरू कर दे। ऐसा करने से जो विरोधी ऊर्जा बढ़ रही होती है, वह रूक जाती है और धीरे-धीरे स्थिति सामान्य होने लगती है। जिससे नींद आने लगती है। प्रश्न तभी तक उद्बलित करता है। जब तक प्रश्न रहता है उत्तर ढूँढ़ने लेने के बाद प्रश्न खत्म हो जाता है और मन उत्तर की तरफ चलने लगता है। जिससे मन शान्त हो जाता है। हर व्यक्ति के जीवन में सुख दुःख आता है। कुछ लोग दुःख में भी रास्ता निकाल कर अपनी स्थिति सामान्य बना लेते हैं और कुछ लोग दुःख में ही खो जाते हैं। ऐसे लोग भी सकारात्मक चिंतन से अपना रास्ता निकाल सकते हैं। जीवन एक अनुभूति है जो एहसास में व्यक्त होती है। यही व्यक्ति की ऊर्जा है जो प्रकृति और आने वाले समाज के काम आती है। हमारे पूर्वज आपस में ही लड़ते रहे जो सुगन्ध कम छोड़ पाये या इस वैज्ञानिकता को नहीं पहचान पाये। जिसका दुःख आज उठाना पड़ रहा है पर हम लोग अपना एहसास अच्छा बनाकर आने वाली पीढ़ी के लिये सुगन्ध छोड़ें। जिससे उन्हें दुःख न उठाना पड़े। सोना जागना दोनों आवश्यक हैं, दोनों से कुछ मिलता है। कुछ खोता नहीं है। दोनों प्राकृतिक हैं और जीवन को आगे बढ़ाने के लिये आवश्यक है। किसी सोते को अनावश्यक न जगायें। यदि आवश्यक हो तो विशेष परिस्थिति में ही जगायें। सोना प्रकृति की एक आवश्यक क्रिया है। इस वैज्ञानिकता को पहचानें और दोनों को बराबर महत्व दें। गाड़ी एक पहिये से नहीं दो पहिये से चलती है। दोनों को बराबर समय दें। ऐसा करने से बीमारी और रूकावट स्वतः खत्म हो जाती है।

प्रश्न हमारे उत्तर श्री अशोक मानव जी के

प्रश्न : मानव अपनी यात्रा कैसे पूर्ण करता है?

उत्तर : तत्व रसायन का गंधीय विज्ञान तरंग बनकर स्वईधन को अपनी भूमि से जोड़कर अपनी यात्रा को पूर्ण करता है।

प्रश्न : दबाव क्या है?

उत्तर : दबाव प्रकृति की वह वैज्ञानिक क्रिया है जिसमें विषय को पूर्ण करने का कण विज्ञान बनता है।

प्रश्न : चित्त किसे कहते हैं?

उत्तर : चरणगति से स्वईधन जोड़कर तत्व निर्माण करने की क्रिया को 'चित्त' कहते हैं।

यदि किसी पाठक के मन में कोई भी सामाजिक या प्राकृतिक प्रश्न उठ रहा है वह उस प्रश्न का निदान चाहते हैं तो पाठक हमें अपना प्रश्न निम्न पते पर भेज सकते हैं। निदान प्रश्न के अगले अंक में दिया जाएगा।

आप अपना प्रश्न डाक द्वारा या ईमेल पर भेज सकते हैं

डाक पता : प्रकृति मेल, सर्या आश्रम, मानव नगर (निकट आई.आई. एस.ई.),

कल्याणपुर, लखनऊ-226022, उ० प्र०

ईमेल-info@parkritimail.com, editor.parkritimail@gmail.com

9807636072, 7376495194

चातुर्मास : बदलते मौसम में कैसे निरोग रखें



गोवर्द्धन दास बिन्नाणी 'राजा बाबू'
बीकानेर

साधारणतया जब सन्त कहते हैं कि चातुर्मास अर्थात् आषाढ़ शुक्ल पक्ष की एकादशी से कार्तिक शुक्ल पक्ष की ग्यारस तक प्रभु विष्णु योग निद्रा में चले गये, जिसका यह अर्थ कदापि नहीं कि वे सो गये हैं इस तथ्य को समझने से पहले आप सभी के ध्यानार्थ एक चौपाई, जिसका गोस्वामी तुलसीदासजी ने रामचरितमानस में उल्लेख किया है -

“क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा,
पञ्च तत्त्व रचि अधम शरीरा”

इसका अर्थ है : शरीर पाँच तत्वों (क्षिति - पृथ्वी, जल, पावक - अग्नि, गगन - आकाश, और समीरा - वायु) से बना है।

अब आगे बढ़ने से पहले निम्न लोकोक्ति, जो हमारे सनातन पञ्चाङ्ग वाले आषाढ़ माह से जुड़ी हुयी है, को ध्यान में रखना उचित रहेगा क्योंकि यह लोकोक्ति बारिश के पूर्वानुमान से सम्बन्धित है -

“वोरा आठौं भीगै कांकर, ग्यारस देव सोइये जाकर”

उपरोक्त लोकोक्ति स्पष्ट करती है कि आषाढ़ के उजाले पखवाड़े की अष्टमी (वोरा आठौं) को बारिश होने पर कांकर (छोटे पत्थर या कंकड़) भीग जाते हैं, और एकादशी [ग्यारस] को देव सो जाते हैं, जिसका अर्थ है मांगलिक कार्यों का स्थगन।

अब वापस आते हैं चातुर्मास जिसे चौमासा भी कहते हैं वाले मसले पर। चूँकि बारिश का आगमन हो चुका है जिसके फलस्वरूप पाँचों तत्वों [क्षिति - पृथ्वी, जल, पावक - अग्नि,



गगन - आकाश, और समीरा - वायु] के स्वभाव में बदलाव दिखने लगता है। अर्थात् धरती पर अनेकों प्रकार की वनस्पतियाँ उग आती हैं साथ में जगह-जगह जल भर जाने से मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं जिसके कारण विभिन्न प्रकार के रेंगने वाले जहरीले जीव, बिलों में पानी भर जाने से सतह पर आ जाते हैं। अग्नि मन्द पड़ जाती है। अधिकांश जल स्तोत्र दूषित हो जाते हैं तथा वायु में भी लगभग चालीस प्रतिशत पानी की मात्रा हो जाती है। आकाश में बादल छाये रहने के कारण धूप धरती तक नहीं पहुँच पाती है।

अतः ऐसे समय में किसी भी प्रकार के सामाजिक [विवाह आदि] अथवा मांगलिक कार्य करने में अनेक तरह के संकटों से सामना [रूबरू] होना स्वाभाविक है। इसके अलावा हमारा शरीर भी तो इन पाँच तत्वों से मिलकर ही बना है, इसलिये जो प्रभाव बाहर है वही हमारे शरीर के अन्दर भी होंगे। इसका मतलब बाहर विद्यमान लक्षण से मन्दाग्नि की समस्या उत्पन्न हो जाने का खतरा रहता है अर्थात् हमारे शरीर की भी अग्नि (पाचन क्षमता) कमजोर पड़ जाती है। अतः शरीर का पाचन तन्त्र भोजन को ठीक से पचाने में कमजोर हो जाने के चलते भोजन को पचाने में अधिक समय लेता है और इसके कारण कुछ मामलों में अपच, गैस, और अन्य पाचन सम्बन्धी समस्याएँ उत्पन्न

होने का खतरा बढ़ जाता है। इन सभी का ध्यान रख हमारे पूर्वजों ने देवशयनी ग्यारस से लेकर देवउठनी ग्यारस (शरद ऋतु) तक को चातुर्मास का रूप देकर, देवता विश्राम काल मानते हुए...लम्बी यात्राओं, सामाजिक तथा विशेष मांगलिक कार्यक्रमों पर धार्मिक आवरण पहना कर रोक लगा दी।

चूँकि हम सभी सनातनी शुरू से ही धर्मप्रधान समाज का हिस्सा रहे हैं, अतः यह तथ्य हमने मन से स्वीकार कर लिया और अपने - अपने स्थान पर रहते हुए, अपने - अपने व्यावसायिक कर्म के साथ व्यक्तिगत धार्मिक उपासना को प्राथमिकता दी। गाँव - गाँव में, मन्दिरों - चौपालों पर सावन-भादों माह में सामूहिक रूप से योगवासिष्ठ, शिवपुराण, रामचरित मानस या अन्य धार्मिक ग्रन्थों का वाचन करते हैं।

उपरोक्त सभी का ध्यान रखते हुये आज भी यह आवश्यक है कि हम सभी अपने धर्म का पालन करें। इन सोये हुए देवताओं अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु से सहयोग करें। जिसका मतलब यही है कि हम इन पंचतत्वों की रक्षा का, इस समय कोई न कोई संकल्प अवश्य लें। यही सनातनी विज्ञान है अर्थात् हमारे सनातन में विज्ञान को भी, धर्म के आधार पर ही समझाया गया है। अतः, यह विज्ञान से जुड़ा हुआ तथ्य है और जैसा हम सभी जानते हैं कि हमारे सनातन धर्म की सारी की सारी मान्यतायें आज के विज्ञान पर एकदम खरी उतरती हैं।

अन्त में सभी से आग्रह करता हूँ - इस चातुर्मास वाले समय का लाभ उठाते हुवे हम सभी अपने-अपने स्थान पर या उसके आस-पास पौधे लगायें, पानी रोकें, नदियों, पहाड़ों, जलस्रोतों के साथ-साथ जंगल की रक्षा करें।

पौधों की बीमारी पहचान लेगा कैमरा



मानवेंद्र

लखनऊ

कृषि में पौधों की बीमारी की पहचान आमतौर पर तब होती है, जब पत्तियों पर दाग दिखाई देने लगते हैं, रंग बदल जाता है या पौधा मुरझाने लगता है। लेकिन तब तक संक्रमण काफी आगे बढ़ चुका हो सकता है। इसी चुनौती से निपटने की दिशा में अमेरिका की Cornell University के वैज्ञानिकों ने 'HyperBird' नाम की अत्याधुनिक इमेजिंग प्रणाली विकसित की है। यह अंगूर की बेलों में कुछ बीमारियों से जुड़े सूक्ष्म बदलावों का अध्ययन उनके स्पष्ट लक्षण दिखाई देने से पहले कर सकती है। Cornell ने सितंबर 2026 में इस तकनीक के बारे में जानकारी प्रकाशित की।

HyperBird को विशेष रूप से अंगूर की बेलों में पाउडरी मिल्ड्यू और डाउन्य मिल्ड्यू जैसी बीमारियों के शुरुआती संकेतों के अध्ययन के लिए विकसित किया गया है। इसका महत्व केवल शुरुआती बीमारी पहचान तक सीमित नहीं है। वैज्ञानिक इसके माध्यम से रोग-प्रतिरोधी पौधों की किस्मों के विकास, फफूंदनाशकों के प्रभाव के अध्ययन और भविष्य में अधिक लक्षित रोग नियंत्रण की संभावनाओं पर काम कर सकते हैं। HyperBird को समझने के लिए सामान्य कैमरे और हाइपरस्पेक्ट्रल कैमरे के बीच अंतर समझना जरूरी है। सामान्य डिजिटल कैमरा मुख्य रूप से लाल, हरे और नीले रंग से संबंधित दृश्य प्रकाश को रिकॉर्ड करता



फोटो : एआई

HyperBird केवल एक hyperspectral camera नहीं है, बल्कि इसे high-throughput phenotyping microscope के रूप में विकसित किया गया है। इसका उद्देश्य बड़ी संख्या में पौधों के नमूनों की तेजी से जांच करना है। Cornell के अनुसार यह प्रणाली कुछ ही घंटों में सैकड़ों leaf samples को disease resistance से जुड़े traits के लिए process कर सकती है।

है। इसके विपरीत हाइपरस्पेक्ट्रल इमेजिंग किसी वस्तु से परावर्तित प्रकाश को सैकड़ों संकरी wavelength bands में रिकॉर्ड कर सकती है। इससे ऐसी जानकारी मिल सकती है जो सामान्य तस्वीर में दिखाई नहीं देती।

संक्रमण शुरू होने के बाद पौधे के भीतर पानी की मात्रा, रंगद्रव्य, सतह की संरचना, मोम जैसी परत और ऊतकों की दूसरी विशेषताओं में सूक्ष्म बदलाव हो सकते हैं। इन बदलावों का असर पत्ती से परावर्तित प्रकाश के spectral pattern पर पड़ सकता है। HyperBird इन्हीं optical signatures

को रिकॉर्ड करने की कोशिश करती है। इसलिए यह केवल यह नहीं देखती कि पत्ती आंखों को कैसी दिखाई दे रही है, बल्कि यह भी पता लगाने का प्रयास करती है कि वह अलग-अलग wavelengths के प्रकाश के प्रति कैसी प्रतिक्रिया दे रही है।

2026 में Plant Disease में प्रकाशित एक अध्ययन में वैज्ञानिकों ने अंगूर की पत्तियों को grapevine downy mildew के रोगजनक Plasmopara viticola के संपर्क में रखा और 0.5, 1.5 तथा 3.5 दिन बाद hyperspectral imaging

की। शुरुआती दो समय बिंदुओं पर बीमारी के दिखाई देने वाले sporulation लक्षण नहीं थे, जबकि 3.5 दिन पर untreated samples में sporulation दिखाई दी। शुरुआती spectral data पर प्रशिक्षित random-forest classifier ने बाद में sporulation की भविष्यवाणी में 0.78 accuracy और 0.77 ROC-AUC हासिल किया।

हालांकि इन आंकड़ों को समझना जरूरी है। ये एक विशेष शोध प्रयोग और उसके नमूनों से संबंधित हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि HyperBird हर फसल और हर बीमारी को 78 प्रतिशत सटीकता से पहचान सकती है। व्यापक कृषि उपयोग के लिए अलग-अलग फसलों, रोगों और पर्यावरणीय परिस्थितियों में अतिरिक्त परीक्षण आवश्यक होंगे।

HyperBird केवल एक hyperspectral camera नहीं है, बल्कि इसे high-throughput phenotyping microscope के रूप में विकसित किया गया है। इसका उद्देश्य बड़ी संख्या में पौधों के नमूनों की तेजी से जांच करना है। Cornell के अनुसार यह प्रणाली कुछ ही घंटों में सैकड़ों leaf samples को disease resistance से जुड़े traits के लिए process कर सकती है।

इस तकनीक की जड़ें Cornell के पहले 'Blackbird' प्रोजेक्ट में हैं। 2021 में विकसित Blackbird मुख्य रूप से RGB imaging पर आधारित था। HyperBird ने इसी अवधारणा को आगे बढ़ाते हुए hyperspectral information को जोड़ा। Cornell के अनुसार HyperBird प्रत्येक pixel के लिए Blackbird की तुलना में लगभग 200 गुना अधिक spectral resolution उपलब्ध कराती है। इससे पत्ती के बेहद छोटे क्षेत्रों में होने वाले optical बदलावों का अधिक विस्तार से अध्ययन किया जा सकता है।

Cornell के शोध के अनुसार HyperBird की मदद से ऐसी accuracy लगभग तीसरे दिन हासिल करने की संभावना दिखाई दी, जिसके लिए पारंपरिक प्रक्रिया में छठे या नौवें दिन तक इंतजार करना पड़ सकता था। इससे वैज्ञानिक पौधों की विभिन्न किस्मों और treatments की तुलना अधिक तेजी से कर सकते हैं। इस प्रणाली का उपयोग fungicide और biofungicide treatments के प्रभाव के अध्ययन में भी किया गया है।

HyperBird का एक संभावित महत्वपूर्ण उपयोग रोग-प्रतिरोधी पौधों की किस्मों के विकास में है। वैज्ञानिक बड़ी संख्या में पौधों की पत्तियों का परीक्षण करके ऐसे optical signatures तलाश सकते हैं जो leaf pigments, wax structure, water content और internal anatomy जैसे traits से जुड़े हों। इससे पौधों के genetic differences और उनके observable traits के बीच संबंध समझने में सहायता मिल सकती है।

लेकिन इतनी विस्तृत imaging के साथ बहुत बड़ी मात्रा में data भी पैदा होता है। Cornell से संबंधित एक proof-of-principle अध्ययन में automated hyperspectral imaging system ने एक दिन में लगभग 9 terabytes high-quality images एकत्र कीं। इसलिए इस तकनीक के लिए केवल camera ही नहीं, बल्कि बड़ी storage capacity, powerful computing और machine-learning systems की भी आवश्यकता होती है।

फिलहाल HyperBird ऐसा commercial camera नहीं है जिसे किसान बाजार से खरीदकर सीधे खेत में लगा सके। यह research और experimental imaging platform है। वर्तमान व्यवस्था में technicians को खेत से पत्ती के

samples लेकर उनकी जांच करनी पड़ती है। Cornell के अनुसार sample collection को automated बनाने के लिए robotics पर भी काम किया जा रहा है।

भविष्य में यदि hyperspectral technology को छोटा, सस्ता और अधिक automated बनाया जा सके तो इसका उपयोग agricultural robots, drones और खेतों में लगाए गए sensors के साथ किया जा सकता है। Artificial intelligence इनसे मिलने वाले spectral data का विश्लेषण करके बीमारी के शुरुआती संकेतों की पहचान में सहायता कर सकती है। इससे precision agriculture को बढ़ावा मिल सकता है और संभावित रूप से उन हिस्सों पर अधिक लक्षित उपचार किया जा सकता है जहां शुरुआती संकेत मिलें।

हालांकि इसके सामने कई चुनौतियां हैं। खेत में सूर्य का प्रकाश, छाया, धूल, नमी, तापमान और पत्ती का कोण imaging results को प्रभावित कर सकते हैं। किसी एक बीमारी के लिए विकसित spectral model दूसरी बीमारी या दूसरी फसल पर उसी accuracy से काम करेगा, यह जरूरी नहीं है। इसलिए बड़े पैमाने पर उपयोग से पहले अलग-अलग फसलों, क्षेत्रों और पर्यावरणीय परिस्थितियों में विस्तृत वैज्ञानिक परीक्षण जरूरी होंगे।

इसके बावजूद HyperBird कृषि अनुसंधान में एक महत्वपूर्ण दिशा की ओर संकेत करती है। यह तकनीक बीमारी को केवल तब पहचानने के बजाय, जब वह आंखों को दिखाई देने लगे, उससे पहले पौधे में होने वाले सूक्ष्म बदलावों को समझने की कोशिश करती है। यदि भविष्य में hyperspectral imaging, artificial intelligence, robotics और automated data analysis को सफलतापूर्वक जोड़ा जाता है, तो पौधों की बीमारी की निगरानी अधिक तेज, सूक्ष्म और लक्षित हो सकती है।

योग्य व्यक्तियों की प्रतिष्ठा अथवा योगदान का अवमूल्यन समाज के लिए घातक



सीताराम गुप्ता

पीतमपुरा, दिल्ली

गोस्वामी तुलसीदास का एक दोहा है—
“तुलसी जे कीरति चहहिं, पर की कीरति खोइ,
तिनके मुँह मसि लागिहैं, मिटिहि न मरिहै
धोइ।” इस दोहे में तुलसीदास कहते हैं कि
जो लोग दूसरों की कीर्ति, मान-मर्यादा अथवा
प्रतिष्ठा नष्ट करके स्वयं प्रतिष्ठित होना चाहते
हैं, उनके मुँह पर ऐसी कालिख पुत जाती है
जो न तो कभी जीते जी मिट पाती है और न ही
मरने पर उसका कलंक धुल पाता है। वर्तमान
परिस्थितियों में भी यह दोहा कम प्रासंगिक
नहीं, क्योंकि आज समाज में ऐसे लोगों की
कमी नहीं जो दूसरों की प्रतिष्ठा को कम करके
स्वयं प्रतिष्ठित होना चाहते हैं। यह अलग
बात है कि ऐसे लोगों के मुँह पर ऐसी कालिख
पुतेगी या नहीं जो कभी नहीं मिट सकेगी,
लेकिन दूसरों की प्रतिष्ठा को कम करके स्वयं
प्रतिष्ठित होना अथवा दूसरों के योगदान को
नकारकर उसका श्रेय स्वयं को ले लेना समाज
के लिए अत्यंत घातक होता है। इससे समाज
में सकारात्मक उदात्त जीवन मूल्य कमजोर
होकर नकारात्मकता बढ़ने लगती है।

दुनिया में कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो
कीर्ति, मान-मर्यादा अथवा प्रतिष्ठा प्राप्त करना
नहीं चाहेगा? हम सब प्रसिद्ध होना चाहते हैं।
कोई किसी क्षेत्र में प्रसिद्धि पाना चाहता है तो
कोई किसी दूसरे क्षेत्र में। कोई अधिक धन-
दौलत कमाकर प्रसिद्धि पाना चाहता है तो कोई



बिना प्रयास अथवा परिश्रम के हम कुछ नहीं प्राप्त कर सकते हैं। एक कलाकार जीवनभर साधना करने के उपरांत ही मान-सम्मान अथवा प्रतिष्ठा अर्जित कर पाता है। एक खिलाड़ी भी निरंतर अभ्यास के बल पर ही जीत हासिल करके खेल जगत में अपना विशेष स्थान बना पाता है। कहने का तात्पर्य यही है कि जीवन में कुछ करने के बाद ही सफलता मिलती है और सफलता से ही प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

दान-पुण्य करके प्रसिद्ध होना चाहता है। कोई राजनीति में मान-सम्मान प्राप्त करना चाहता है तो कोई समाजसेवा के क्षेत्र में। कोई खेल जगत में कीर्तिमान स्थापित करके प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहता है तो कोई साहित्य, संस्कृति अथवा कला के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करके प्रसिद्धि पाना चाहता है। वास्तविकता यही है कि इस संसार में कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जिसमें कुछ नया, कुछ अद्वितीय करके प्रसिद्धि प्राप्त करने की संभावना न हो। इसमें कोई

बुराई भी नहीं, लेकिन इसके लिए अथक प्रयास करने की आवश्यकता होती है। इसे अनुचित साधनों से नहीं प्राप्त किया जा सकता और यदि ऐसा किया जाता है तो वह सबके लिए घातक है।

बिना प्रयास अथवा परिश्रम के हम कुछ नहीं प्राप्त कर सकते हैं। एक कलाकार जीवनभर साधना करने के उपरांत ही मान-सम्मान अथवा प्रतिष्ठा अर्जित कर पाता है। एक खिलाड़ी भी निरंतर अभ्यास के बल पर

ही जीत हासिल करके खेल जगत में अपना विशेष स्थान बना पाता है। कहने का तात्पर्य यही है कि जीवन में कुछ करने के बाद ही सफलता मिलती है और सफलता से ही प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। यदि हम आज की स्थितियों पर नजर डालें तो पाते हैं कि हर कोई सफल और प्रतिष्ठित तो होना चाहता है, लेकिन अनेक लोग ऐसे भी हैं जो सफलता व प्रतिष्ठा के लिए परिश्रम नहीं करना चाहते। उन्हें तो बस किसी भी कीमत पर सफलता चाहिए। किसी भी कीमत पर नाम चाहिए। कुछ लोग इसके लिए कई अनुचित रास्ते अपनाने को तैयार हो जाते हैं, सिवाय परिश्रम के। उन्हें प्रतिष्ठा तो चाहिए लेकिन उदात्त जीवन मूल्यों का विकास किए बिना ही। वे बिना त्याग व उदात्त जीवन मूल्यों का विकास किए ही दुनिया में नाम कमाना चाहते हैं।

आज देखने-सुनने में आता है कि खेल जगत में समय-समय पर प्रतिबंधित दवाओं के सेवन के मामले सामने आते रहे हैं। खिलाड़ियों के चयन में पक्षपात की खबरों से अखबार भरे रहते हैं। समाजसेवा के नाम पर अनेक लोग समाजसेवा का दिखावा करते हैं और इसकी आड़ में झूठी प्रतिष्ठा अथवा पैसा कमाना ही उनका प्रमुख उद्देश्य होता है। कुछ लोग दूसरे व्यक्तियों पर अनुचित दोषारोपण करके उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाकर स्वयं प्रसिद्ध होने के प्रयासों में लगे रहते हैं। वर्तमान समय में ऐसी प्रवृत्तियों के उदाहरण भी देखने को मिलते हैं, लेकिन इनके परिणाम कभी अच्छे नहीं हो सकते। अच्छे लोग वही होते हैं जो यथासंभव अच्छा करते हैं और दूसरों के योगदान को महत्व देते हैं। जो लोग दूसरों के योगदान को नकारकर उन पर मिथ्या दोषारोपण करते हैं, उनका ऐसा आचरण अनुचित और निंदनीय है। उनके इस प्रकार के कृत्यों से समाज सबसे अधिक प्रभावित होता है। समाज में ऐसे स्वार्थपूर्ण आचरण करने वाले लोगों की कमी नहीं जो अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए अनुचित रास्ते अपनाने को तैयार रहते हैं।



फोटो : एआई

सबसे बड़ी बात तो ये है कि जब हम अनुचित रीति से सफलता अथवा प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं तो इसका ये अर्थ है कि हम दूसरे योग्य व्यक्तियों से उनका उचित स्थान छीन रहे हैं, जिसका समाज पर सबसे बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे योग्य व्यक्ति आगे नहीं आ पाते, जिससे समाज उनके योगदान से वंचित रह जाता है। प्रतिभाशाली और समाज के लिए कुछ करने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति कुंठित हो जाते हैं और वे समाज के हित में प्रयास करना छोड़ देते हैं। कुछ लोग अच्छे व्यक्तियों की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाकर स्वयं प्रतिष्ठित होने के लिए ऐसे व्यक्तियों का महिमामंडन करने में लगे रहते हैं जिनका आचरण समाज के लिए आदर्श नहीं है। वे न केवल ऐसे व्यक्तियों को उत्कृष्ट व्यक्तियों से अच्छा सिद्ध करने के प्रयासों में लगे रहते हैं, अपितु इसमें सफल भी हो जाते हैं। उनकी ये सफलता समाज व राष्ट्र के लिए अत्यंत अहितकर होती है। इससे अच्छे-बुरे का भेद मिटने लगता है व समाज में सकारात्मक उदात्त जीवन मूल्यों का हास होने लगता है।

जब अनुचित आचरण करने वाले व्यक्ति प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेते हैं तो इससे उन्हें तो

लाभ होता है, लेकिन अच्छे व्यक्ति पदों के पीछे चले जाते हैं और गलत व्यक्ति समाज के रोल मॉडल बन जाते हैं। जब कोई अनुचित आचरण करने वाला व्यक्ति प्रतिष्ठित होकर हमारा रोल मॉडल बनेगा तो उसके अनुचित आचरण को भी हमारे व्यवहार का हिस्सा बनते देर नहीं लगेगी। इस प्रकार से धीरे-धीरे पूरे समाज से नैतिकता का हास हो जाएगा और उसके स्थान पर अनैतिकता का प्रभाव बढ़ सकता है। धीरे-धीरे जीवन के हर क्षेत्र में यही अनैतिकता स्वीकृत होती चली जाएगी, जिससे संपूर्ण समाज का चारित्रिक पतन हो सकता है। एक उत्कृष्ट व सभ्य समाज के लिए इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है? समाज व व्यक्ति के हित में गलत परंपराओं और अनुचित मूल्यों को रोकने का प्रयास करना अनिवार्य है। इसके लिए दूसरों की देखा-देखी ऐसे व्यक्तियों को न केवल कभी महत्व नहीं देना चाहिए, अपितु उनके आचरण और कार्यों की वास्तविकता को लोगों के सामने लाने का प्रयास करना चाहिए, जो अच्छे लोगों को पीछे धकेलकर स्वयं उनका स्थान लेने का प्रयास करते हैं।



विकास की अति : पेड़ों की निर्मम क्षति!

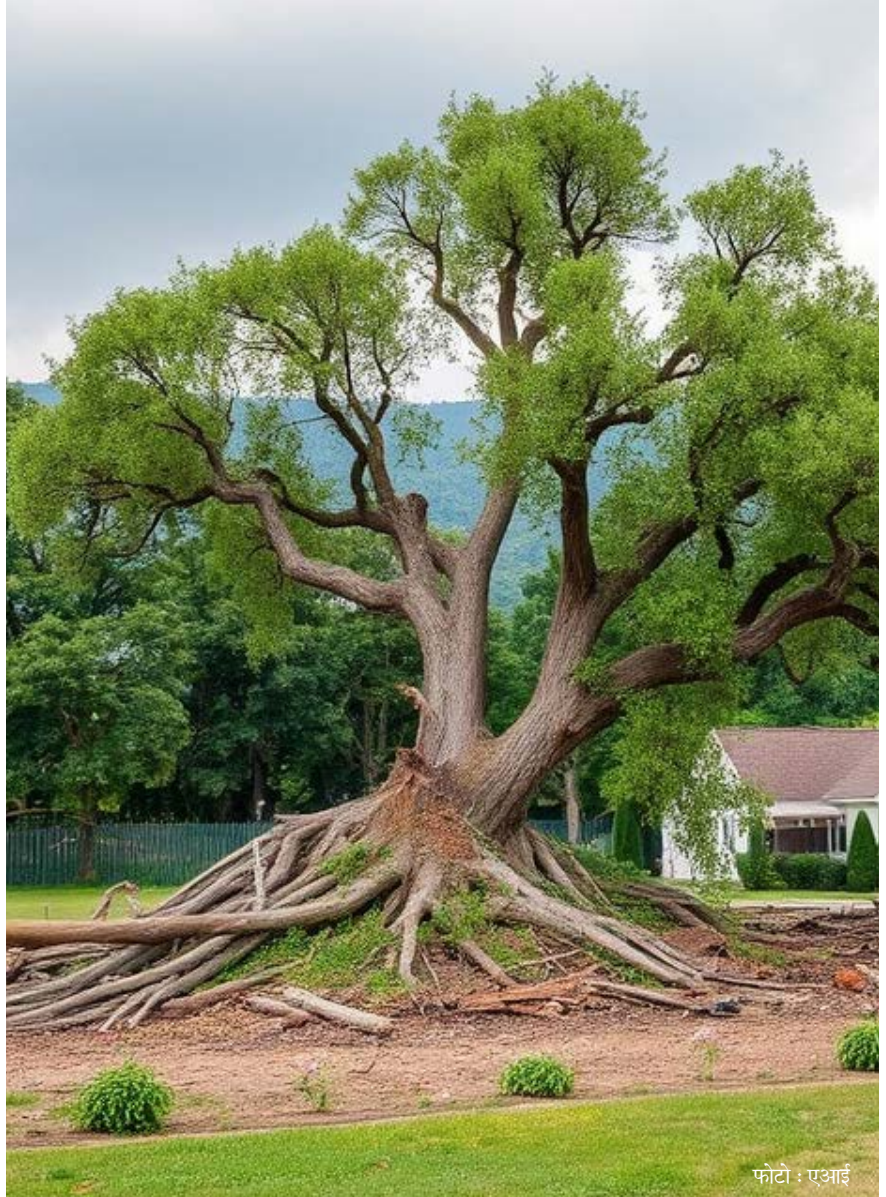


गिरीश पंकज

रायपुर

विकास की अति..पेड़ों की क्षति। पर्यावरण की दुर्गति, आखिर यह कैसी है प्रगति? देश के हर राज्य पेड़ों की बेहिसाब कटाई की खबरें इन दिनों देखने-सुनने को मिल रही हैं। देखकर धरती की छाती हिल रही है। ऐसा क्यों हो रहा है, पूछने पर सिस्टम का जवाब होता है कि विकास के लिए पेड़ों की बलि बहुत जरूरी है। हम एक पेड़ काटते हैं तो दस पेड़ लगाते भी हैं। सिस्टम सही कहता है, लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि दस पेड़ लगते तो हैं, मगर इन पेड़ों को कुछ ही दिनों बाद या तो बकरी खा लेती हैं या कोई और जानवर।

कंक्रीट के जंगलों के विस्तार, चौड़े होते राष्ट्रीय राजमार्गों, विशालकाय खदानों और औद्योगिक गलियारों के बीच आज कुल्हाड़ियों की गूंज सबसे मुखर है। देश के किसी भी कोने का समाचार पत्र उठाकर देख लीजिए, उत्तराखंड और हिमाचल की पहाड़ियों में चारधाम ऑल वेदर रोड के नाम पर हजारों देवदार-बांज के पेड़ धराशायी हो रहे हैं, मध्यप्रदेश के बक्सवाहा में हीरों की खोज के लिए सदियों पुराने वन उजाड़े जा रहे हैं, छत्तीसगढ़ के हसदेव अरण्य में कोयला खनन के लिए सघन जंगल कट रहे हैं, तो वहीं मुंबई की आरे कॉलोनी से लेकर दिल्ली के दिल तक किसी-न-किसी 'महत्वाकांक्षी परियोजना' (?) की खातिर हरियाली का कत्लेआम हो रहा है। जब



फोटो : एआई

एक परिपक्व वृक्ष मात्र लकड़ी का खंभा नहीं होता; वह अपने आप में एक संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र यानी इकोसिस्टम होता है। वह अनगिनत पक्षियों का बसेरा, कीट-पतंगों का आश्रय, मिट्टी को बांधकर रखने वाला लंगर और भूजल को रीचार्ज करने वाला प्राकृतिक पंप होता है। एक वयस्क पेड़ प्रतिवर्ष लगभग 20 से 22 किलोग्राम कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषित करता है और सैकड़ों लीटर ऑक्सीजन देता है। एक सौ वर्ष पुराने विशालकाय वृक्ष को काटकर उसकी जगह प्लास्टिक की थैलियों में लगे दस छोटे पौधे रोप देना प्रकृति के साथ क्रूर मजाक के अलावा कुछ नहीं है।



भी समाज या पर्यावरणविद इस विध्वंस पर सवाल उठाते हैं, तो व्यवस्था का एक तयशुदा, रटा-रटाया उत्तर सामने आता है, “विकास के लिए पेड़ों की बलि अपरिहार्य है। राष्ट्र की प्रगति के लिए यह आवश्यक त्याग है। हम एक पेड़ काट रहे हैं, तो बदले में दस पौधे लगा भी तो रहे हैं।”.

कागजों पर यह दलील जितनी संतुलित और न्यायसंगत दिखती है, धरातल पर उतनी ही खोखली और भयावह है। यह तर्क प्रकृति के साथ एक ऐसा भ्रामक सौदा है, जिसमें मुनाफा सिर्फ फाइलों में दर्ज होता है और वास्तविक नुकसान आने वाली पीढ़ियों अपनी सांसों से चुकाती हैं।

क्षतिपूरक वनीकरण का नियम व्यवस्था का सबसे सुविधाजनक ढाल बन चुका है। वन संरक्षण कानूनों के अनुसार, यदि किसी विकास परियोजना के लिए प्राकृतिक वन भूमि का डायवर्जन किया जाता है, तो परियोजना प्रस्तावक को उसकी भरपाई के लिए अन्यत्र पेड़ लगाने और उनका रख-

रखाव करने के लिए धन देना होता है। व्यवस्था दावा करती है कि उसने एक काटा तो दस लगाए। लेकिन सवाल यह है कि क्या एक सौ साल पुराने बरगद, पीपल, साल या महुआ के पेड़ की तुलना नर्सरी से लाई गई एक नई पौध से की जा सकती है?

एक परिपक्व वृक्ष मात्र लकड़ी का खंभा नहीं होता; वह अपने आप में एक संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र यानी इकोसिस्टम होता है। वह अनगिनत पक्षियों का बसेरा, कीट-पतंगों का आश्रय, मिट्टी को बांधकर रखने वाला लंगर और भूजल को रीचार्ज करने वाला प्राकृतिक पंप होता है। एक वयस्क पेड़ प्रतिवर्ष लगभग 20 से 22 किलोग्राम कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषित करता है और सैकड़ों लीटर ऑक्सीजन देता है। एक सौ वर्ष पुराने विशालकाय वृक्ष को काटकर उसकी जगह प्लास्टिक की थैलियों में लगे दस छोटे पौधे रोप देना प्रकृति के साथ क्रूर मजाक के अलावा कुछ नहीं है। वे पौधे उस विशाल वृक्ष के पारिस्थितिकीय कार्यों की बराबरी

करने में कम से कम पचास वर्ष लेंगे, बशर्ते वे जीवित रहें। इस पूरी प्रक्रिया की सबसे त्रासद सच्चाई वह है, जिसकी ओर नीति-निर्माता जानबूझकर आँखें मूंद लेते हैं। हर साल मानसून के मौसम में सरकारी अमला, विभिन्न विभाग और संस्थाएं लाखों-करोड़ों पौधे रोपने का भव्य उत्सव मनाते हैं। कैमरों की चमक के बीच पौधे गद्दों में डाले जाते हैं, आंकड़े दर्ज होते हैं और बजट पास हो जाता है। लेकिन जैसे ही कैमरा हटता है, उन पौधों की सुध लेने वाला कोई नहीं बचता। न वहां ट्री-गार्ड होते हैं, न सिंचाई की स्थायी व्यवस्था, और न ही फेंसिंग। परिणाम यह होता है कि कुछ ही हफ्तों में रोपे गए पौधे या तो पानी के अभाव में सूख जाते हैं, या फिर उन्हें सड़क पर चरने वाली बकरियां, गायें और अन्य मवेशी खा जाते हैं। कई मामलों में तो यह भी देखा गया है कि एक ही खाली जमीन पर हर साल ‘नया’ पौधरोपण अभियान चला दिया जाता है, क्योंकि पिछले साल लगाए गए पौधे कभी बचे ही नहीं।

आंकड़ों की बाजीगरी में जंगल 'बढ़' रहे होते हैं, लेकिन जमीन पर सिर्फ बंजर धूल उड़ रही होती है। सिस्टम पेड़ तो 'लगाता' है, लेकिन पेड़ को 'बचाने' की कोई जवाबदेही तय नहीं करता। वनरोपण को केवल संख्यात्मक लक्ष्य मान लिया गया है, जीवन की रक्षा का दायित्व नहीं। जब व्यवस्था यह दावा करती है कि उसने लाखों पेड़ लगा दिए, तो वहां एक और गंभीर वैज्ञानिक विसंगति सामने आती है। प्राकृतिक वन 'बायोडायवर्सिटी' यानी जैव विविधता का भंडार होते हैं, जहां सैकड़ों किस्म के पेड़, झाड़ियां, लताएं और वन्यजीव एक-दूसरे पर निर्भर होकर सह-अस्तित्व में रहते हैं। क्षतिपूरक वनीकरण के नाम पर अक्सर यूकेलिप्टस, बबूल या सागौन जैसी तेजी से बढ़ने वाली प्रजातियों के एक-रंग बागान खड़े कर दिए जाते हैं। यूकेलिप्टस या विलायती बबूल पर न तो स्थानीय पक्षी घोंसला बनाते हैं, न ही स्थानीय वन्यजीव इनके पत्तों को खा सकते हैं। यूकेलिप्टस जैसी प्रजातियां जमीन का पानी इतनी तेजी से सोखती हैं कि आसपास का जलस्तर और नीचे चला जाता है। फॉरेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया की रिपोर्टों में ऐसे बागानों को भी 'ग्रीन कवर' मान लिया जाता है। सैटेलाइट इमेज में वह हरा दिखता है, लेकिन पर्यावरण की दृष्टि से वह एक 'हरा मरुस्थल' ही होता है, जिसमें जीवन स्पंदित नहीं होता। प्रकृति के इस अंधाधुंध संहार का परिणाम अब कोई अमूर्त चेतावनी नहीं, बल्कि हमारे दैनिक जीवन की कड़वी हकीकत बन चुका है।

जंगलों के कटने से मानसून का चक्र पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो चुका है। कुछ ही घंटों में बादल फटने जैसी भीषण बारिश और फिर महीनों तक सूखा—यह असंतुलन पेड़ों की कमी की सीधी देन है। जब हम वन्यजीवों के मूल प्राकृतिक आवास को एक्सप्रेसवे और खदानों के लिए चीर देते हैं, तो हाथी, तेंदुए और बाघ रिहायशी बस्तियों का रुख करते

जंगलों के कटने से मानसून का चक्र पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो चुका है। कुछ ही घंटों में बादल फटने जैसी भीषण बारिश और फिर महीनों तक सूखा—यह असंतुलन पेड़ों की कमी की सीधी देन है। जब हम वन्यजीवों के मूल प्राकृतिक आवास को एक्सप्रेसवे और खदानों के लिए चीर देते हैं, तो हाथी, तेंदुए और बाघ रिहायशी बस्तियों का रुख करते हैं। परिणाम स्वरूप इंसानी जान-माल का नुकसान होता है और अंततः निर्दोष जानवरों को 'आदमखोर' घोषित कर मार दिया जाता है।

हैं। परिणाम स्वरूप इंसानी जान-माल का नुकसान होता है और अंततः निर्दोष जानवरों को 'आदमखोर' घोषित कर मार दिया जाता है। शहरों से पुराने छायादार पेड़ों को हटाकर कांच और कंक्रीट के टावर खड़े किए जा रहे हैं। गर्मियों में शहर भट्टियों की तरह तप रहे हैं, पारा 48 से 50 डिग्री सेल्सियस पार करने लगा है। उत्तर भारत के शहर सर्दियों में गैस चैंबर बन जाते हैं। हवा को साफ करने वाले और बारिश के पानी को रिसकर जमीन में उतारने वाले पेड़ ही नहीं बचेंगे, तो हवा और पानी का संकट सुरसा के मुंह की तरह बढ़ा होना स्वाभाविक है।

सवाल यह नहीं है कि देश को सड़कें, रेलमार्ग, अस्पताल या कारखाने चाहिए या नहीं। विकास आधुनिक समाज की अनिवार्य आवश्यकता है। लेकिन सवाल यह है कि क्या विकास की अवधारणा में प्रकृति के लिए कोई सम्मान बचा है? महात्मा गांधी ने चेतावनी दी थी, "प्रकृति के पास हर मनुष्य की जरूरत पूरी करने के लिए पर्याप्त साधन है लेकिन किसी एक के भी लालच को संतुष्ट करने के लिए नहीं।" आज जो हो रहा है, वह जरूरत नहीं बल्कि अनियंत्रित और अदूरदर्शी लालच है। यदि व्यवस्था

वास्तव में गंभीर है, तो उसे अपनी नीतियों में बुनियादी बदलाव करने होंगे। पौधरोपण के फंड तभी जारी होने चाहिए, जब 3 से 5 साल बाद रोपे गए पौधों के जीवित रहने का स्वतंत्र सामाजिक और वैज्ञानिक ऑडिट हो। सिर्फ गड्ढा खोदकर पौधा लगाने से जिम्मेदारी पूरी नहीं मानी जानी चाहिए। पुराने और विशाल पेड़ों को काटने के बजाय आधुनिक तकनीकों का उपयोग कर उन्हें अन्यत्र सुरक्षित स्थानांतरित करने को पहली प्राथमिकता दी जानी चाहिए। क्या सड़क को चार फीट मोड़कर सौ साल पुराने बरगद को बचाया नहीं जा सकता? इंजीनियरिंग का काम केवल लकीर पीटना नहीं, बल्कि पर्यावरण के साथ सामंजस्य बिठाना भी होना चाहिए। जिन क्षेत्रों में क्षतिपूरक वनीकरण के पौधे मवेशियों द्वारा खा लिए जाएं या लापरवाही से सूख जाएं, वहां संबंधित अधिकारियों और एजेंसियों पर वित्तीय व प्रशासनिक दंड लगाया जाना चाहिए। सड़कें, इमारतें और खदानें तभी उपयोगी हैं जब उन पर चलने, रहने और सांस लेने के लिए इंसान जीवित और स्वस्थ रहे। यदि हम आबोहवा, पानी और धरती की उर्वरा शक्ति को ही बेचकर कंक्रीट के ढेर खड़े कर रहे हैं, तो यह विकास नहीं, बल्कि सामूहिक आत्महत्या की सुविचारित योजना है। प्रकृति को कागजी आंकड़ों की नहीं, हरी-भरी छांव और धड़कते जंगलों की जरूरत है। अगर यह समझ अब भी नहीं आई, तो वह दिन दूर नहीं जब व्यवस्था के पास अपनी फाइलों में दर्ज हरियाली तो होगी, लेकिन सांस लेने के लिए शुद्ध हवा नहीं बचेगी। पता नहीं देश चलाने वाले लोग कब इस सच्चाई को समझ सकेंगे? सिस्टम में बैठे लोग तो कुछ वर्षों बाद मर-खप जाएंगे मगर आने वाली पीढ़ी पर्यावरण के विनाश को और अधिक पीड़ा के साथ भोगेगी।



श्यामल बिहारी महतो
बोकारो, झारखंड

मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि अपनी सर्विस काल में कभी चुनाव डियूटी में भी जाना होगा और कड़ी सुरक्षा के बीच मतदान कराने का एक अहम रोल निभाना होगा। कहा जाता है कि होनी और अनहोनी के बीच ही मनुष्य अपने जीवन का सफ़र तय करता है। मेरे साथ ऐसा ही कुछ हुआ था। चुनाव डियूटी में जाना मेरे लिए यातना शिविर में दी जाने वाली किसी सज़ा से कम नहीं थी।

हालांकि इस बार नक्सली संगठनों की ओर से जब चुनाव बहिष्कार की घोषणा अंतिम समय तक नहीं हुई तो उस क्षेत्र के लोगों ने राहत की सांस ली थीं। डरे हुए चेहरों पर आशा की एक नई किरण सी देखने को मिली थीं। क्षेत्र की अधिकांश जनता चुनाव के पक्ष में थीं। पर खुल कर और चुनाव के पक्ष में कोई आगे आने को तैयार नहीं था। नक्सली खौफ़ घरों के साथ साथ दिलों में भी समाये हुए थे। कहा जाता है उस क्षेत्र में नक्सलवाद का उदय अचानक नहीं हुआ था। अचानक कुछ होता भी नहीं है, हर मूवमेंट के पीछे एक बड़ा कारण भी छुपा होता है। भूख और बेरोजगारी ने उस क्षेत्र में उग्रवाद को रोपने का काम किया था। और सरकार की उदासीनता और उसकी दोहरी नीति ने उस पर खाद पानी डालने का काम किया था। लोग यहीं से सरकार और उनकी दोषपूर्ण नीतियों के विरुद्ध होते चले गए थे। नब्बे के दशक के बाद से ही दूर दराज के ग्रामीण क्षेत्रों में धीरे धीरे अलगाववादी संगठनों

उजाले की ओर



फोटो : एआई

के पांव जमने शुरू हो गये थे। इसका असर सीधे सीधे मत और मतदान केंद्रों में भी पड़ना शुरू हो गया था। मतदान केंद्रों में मतदाता कम आने लगे। बम बारूद का डर लोगों को सताने लगे। रात के अंधेरे में स्कूल और घर के दीवारों में मत बहिष्कार संबंधित पोस्टर चिपके होते। किसी किसी में लिखा होता, “पहला वोट, पहली गोली” इतना ही नहीं किसी किसी पोस्टर में यह भी लिखा होता “वोट डालने वालों को दो इंच छोटा कर दिया जायेगा” लोगों ने मतदान केंद्रों पर जाना छोड़ दिया। जान है तो जहान है। आगे चलकर यह वोट बहिष्कार का रूप ले लिया। वोट का सीजन आते ही लोग घरों में दूबक जाते। सुना गया एक बार बम बारूद विस्फोट कर कोनार डेम पुल को भी क्षतिग्रस्त करने की कोशिश की गई थी। चुनाव के दौरान मतदान कराने जा रही

वाहनों को डायनामाइट से उड़ाने की खबरें भी बीच बीच में उड़ती रही।

इस तरह वोट बहिष्कार के कारण कोई जनप्रतिनिधि भी उन नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में कदम रखने से डरते थे। सो क्षेत्र का विकास भी रुका पड़ा था। सड़क पुल पुलिया सभी का कबाड़ा हाल था। उस क्षेत्र के हर गाँव में जैसे नक्सलियों का कब्जा था। कोई उनके विरुद्ध मुंह खोलने से डरते थे। शाम होते ही नक्सली गाँव में घूमते नज़र आते। कंबल ओढ़कर बदलते हालात का जायजा लेते। पिछले तीन चुनाव में गाँव में एक भी वोट नहीं पड़े थे। कहां तक सच है, दस साल पहले लोक सभा चुनाव में कुछ युवाओं ने वोट डालने की हिम्मत की थी, उसी रात दो युवाओं के उठा ले गए थे नक्सली, तब से गाँव में एक भी वोट नहीं पड़े थे।

परन्तु कब तक ? युवा परेशान थे, बंदूक राज व्यवस्था से अब वे भी उब चुके थे और अब वे बदलाव चाहते थे। उन्हें शिक्षा और रोजगार चाहिए था। और यह बंदूक के बल पर संभव नहीं था। यह वोट से ही हासिल हो सकता था। किसानों को खेती के लिए हल बैल और बीज चाहिए होता है। लेकिन उसकी जगह उनके हाथों गोली बंदूक पकड़ा देने से वो खेती नहीं कर सकते। बहुत से नक्सली युवा भी बिहड़ों के जीवन से उब चुके थे। उन्हें शिक्षा रोजगार और एक सुकून का जीवन चाहिए था। और यह उसे समाज की मुख्य धारा से जुड़ने पर ही मिल सकता था। क्षेत्र में भी सड़क पुल पुलिया और रोजगार की मांग उठने लगी थी। वक्त तेजी से बदल रहा था। अलगाववादी नक्सली अपने ही घरों में अलग थलग पड़ने लगे थे। उनके घरों में जिस चूल्हे पर खाना पकते थे। वहीं से अब शिक्षा रोजगार और भविष्य का धूँआ उठने लगा,

“ इस तरह की जिंदगी के कितना भरोसा ? तोर बाद हमनी के की गति होतय..? थाना में बंदुक्वा काहे नाही जमा कर देहक, सरकार पैसा भी देतो और रोजगार भी ” रोटी के साथ साथ पत्नियां उनके सामने भविष्य भी परोसने लगी थीं। क्षेत्र के बदलते हालात को नक्सलियों ने भी भांपना शुरू कर दिए थे। उनकी समझ में भी यह बात आ गयी थी कि उनके बंदूक राज ज्यादा दिन चलने वाला नहीं है। और अब वो भी बंदूक पॉलिसी की जगह सरेंडर पॉलिसी को ज्यादा महत्व देने लगे थे। बहुतों ने तो राजनीति की मुख्य धारा से भी जुड़ने का मन बना लिए थे। अंधेरे को भी उजियारे की चाहत होती है।

पांच साल बाद फिर चुनाव की तारीख घोषित कर दिया गया था। सोचा ये जा रहा था कि नक्सली फिर चुनाव बहिष्कार की घोषणा कर देंगे। लेकिन इस बार उधर से जब कोई अधिकारिक घोषणा नहीं हुई। न विरोध में न पक्ष में, तो जनता और पशोपेश में पड़ गई। जो डर था। डर बना रहा।

पचीस साल नौकरी करने के बाद अचानक से मेरा चुनाव डियूटी लगा था। आफिस के बड़ा बाबू ने खुद का नाम काट मेरे नाम को आगे धकेल दिया था। अधिकारी से मिल कर मैंने विरोध जताया, पर कुछ हल न निकला, दोनों की मिली भगत थी। पहले लोक सभा चुनाव में हिस्सा लेना पड़ा। शहरी क्षेत्र था। किसी बात का डर नहीं था। न किसी तरह की दिक्कत हुई थी। लेकिन विधानसभा चुनाव डियूटी में जाना इतना आसान नहीं था। सर पे कफन बांधकर जाने जैसा था। बंदूक के साथे मैं चुनाव डियूटी करना सहज नहीं होता। यह बात तब जाना, जब हम कलस्टर में पहुंचे और पता चला हमारी डियूटी गोमिया विधानसभा के चतरोचट्टी थाना क्षेत्र में पड़ी है। यह इलाका अति संवेदनशील अर्थात् घोर नक्सल प्रभावित क्षेत्र के रूप में जाना जाता था। फोन पर बेटे को जगह का नाम बताया। बताना भी जरूरी था। सुन कर वह भी कुछ चिंतित हो उठा। मैंने ढाढस बंधाया “ चिंता की कोई बात नहीं है, माँ की कृपा है मुझपर, कोई अनहोनी नहीं होगी..! ” पता नहीं यह दिलाशा खुद के लिए था या बेटे के लिए।

उसके दो दिन पहले बैंक जाकर मैंने बेटे का नाम नोमिनी के रूप में अपने खाते में जोड़वा आया था। क्या भरोसा जीवन का आज है कल नहीं रहेंगे !

रह रह कर मुझे पिछले चुनाव के वो वारदात याद आ रहे थे, जब एक पहाड़ी क्षेत्र में हेलीकाप्टर चुनाव कर्मियों को लिए जा रहा था और नीचे से नक्सली उस पर दनादन गोलियां बरसाने लगे थे। हमें तो बस लेकर जाने वाली थीं। सो चिंता की चादर सबने ओढ़ ली थीं।

मुझे याद है, कलस्टर से हमारी बस खुलने के पहले अपने गुरु भाई महेन्द्र को मैंने फोन किया था। उनके पिता जी हमारे बचपन के गुरु थे। महेन्द्र पटना में एक सरकारी विभाग में कर्मचारी था। मैं डरा हुआ था। उसे अपनी हालत और हालात दोनों बताया। देर तक वह

मेरी बात सुनता रहा। वह उसी गाँव का था। जहां हमें जाना था। उसने बड़े इतमिनान से कहा था “ दादा, डरने की कोई बात नहीं है, इस बार नक्सली चुनाव में कोई बाधा नहीं डालेंगे, गाँव में ऐसा कह दिया गया है। आप बेखौफ जाइए, बाकी चन्द्रदेव आपकी मदद करेगा, वह भी आपको जानता है, उसका फोन नंबर मैं आपको वाटशप करता हूँ.. कोई बात हुई तो फोनर हमें फोन कीजिएगा, नमस्कार ! ”

मैं राहत की सांस ले सकता था। फिर भी डर तो डर था। मन के एक कोने में बैठा रहा। मैंने बेटे को फिर फोन लगाया और महेन्द्र की बात बतायी। उसने झट से कहा “ यह बड़ी बात है बप्पा, मैं कहा करता था न कि नक्सली हालात के मारे होते हैं लेकिन है तो इंसान ही, अब चिंता की कोई बात नहीं है..! ”

सुब आठ बजे कलस्टर से बस खुलनी थी। अभी खुली नहीं थी कि तभी टीम कप्तान मजिस्ट्रेट का मुंह खुल गया, “ जिनको भी, पेशाब या फिर खाना पीना करना हो, वो जल्दी जल्दी कर लें, मतदान केंद्र पहुंचने के पहले बीच में बस नहीं रूकेगी, बाद में बोलना नहीं कि कहा नहीं गया था..! ”

“ सर, हम चुनाव कराने जा रहे हैं कि जंग लड़ने, इतना सख्त नियम..? ” मैं चुप न रह सका।

“ नक्सल प्रभावित क्षेत्र में चुनाव कराना जंग लड़ने जैसा ही होता है..! ”

“ सर, अगर रास्ते में किसी का पेट खराब हो जाए और उसे जाना हो..? ” एक अन्य बोल उठा, जो पेट से भरा पुरा था।

“ उसके लिए आपात बस लैंडिंग होगी, और कुछ..? ”

“ नो सर, थैंक्यू सर..! ”

बस में सवार सभी हंस पड़े। माहौल खुशनुमा हो उठा। लेकिन चुनाव डियूटी किसी जंग से कम नहीं होता यह सभी को मान लेना पड़ा था।

कलस्टर से बस चली तो एक साथ सभी

जोर से बोल उठे, “ हर हर महादेव, हर हर महादेव... ! “

मुझे अच्छा नहीं लगा उन्मादी होना सही नहीं है। बस में सवार दूसरे लोगों की भावनाओं का ख्याल रखना भी अच्छे इंसान की पहचान होती है। खैर बस चल पड़ी तो लगातार चार घंटे चलती रही। कोई विराम नहीं कोई अल्पविराम नहीं। अचानक नरकी मोड़ के आगे चीखती हुई सड़क के किनारे बस खड़ी हो गई। इसी के साथ,

“ आप लोगों के पास पांच मिनट समय है, जल्दी से हल्का हो लीजिए.. ! “ मजिस्ट्रेट का आदेश गुंज उठी। सभी हडबडा कर बस से नीचे उतरे। घना जंगल शुरू हो चुका था। देखा सामने बीआईएसएफ जवान गस्ती कर रहे हैं। अभी तक हमारी बस मात्र आधे दर्जन सुरक्षा बलों के साथ चल रही थी। पूछने से पता चला अब हमें पारा मिलिट्री फोर्स के साथ चलना होगा। इसी के साथ आगे आगे मिलिट्री वाहन और उसके पीछे तीन तीन बसें एक साथ आगे बढ़ी थीं। भूख भी लगी थी। लेकिन खाने का भी समय नहीं था। सब डरे और सहमें हुए बस की सीट से चिपक गए थे।

जैसे जैसे मतदान केंद्र के नजदीक हम आते जा रहे थे, डर का पारा मीटर उसी अनुपात बढ़ता जा रहा था। जैसे ही बसें कोनार डेम पार की अचानक से बसें रूक गई। बस की खिड़की से बाहर झांका। विशाल डेम को दूबारा देखा। डेम में पानी आधा रह गया था। छह माह पहले जब मैं बचपन के गुरु जी से मिलने उनके गाँव चिलगो गया था तब इसी रास्ते से होकर गया था। तब डेम भरा पूरा था। हां रास्ता तब भी खराब था आज भी खराब था। लेकिन चिंता फिकिर की कोई बात नहीं थी। तभी गुरु भाई महेन्द्र की बात कानों में गुंजने लगी थी, “ दादा, मेरा घर पहुंचने में थोड़ी दिक्कत होगी। मामू लोग के कारण पिछले बीस सालों से रास्ते में कोई काम नहीं हुआ है। जरा संभल कर बाइक चलाना... ! “

आज भी हम उसी रास्ते, उसी चिलगो गाँव

जा रहा था। लेकिन चिंता और फिकिर से जुझता हुआ। जाने गाँव में किस तरह हमारा स्वागत हो, क्या पता अचानक से नक्सली ही आ धमके ? सड़क का पता नहीं, बड़े बड़े बोल्टर रोड़ पर बिखरे पड़े थे, जगह जगह गढ़े बन आये थे उसी पर बस हिचकोले खाते हुए आगे बढ़ रही थीं और हम सब अपने माता पिता को याद कर रहे थे। ऐसी बात भी नहीं थी कि डर केवल मुझे ही आ रहा था। बस में बैठे सभी सशक्त और भीतर से सहमे हुए थे। मेरे बगल में एक बाबू मोशाय तपन घोष भी बैठा था वो भी पोलिंग आफिसर था। कई बार मुझसे अपना डर बता चुका था, “ कि होबेय महतो जी, नक्सली कहीं अचानक से. ? “

मैं चुप रहा, सभी लोग चुप थे। सिर्फ बसों की धिर् धिर् की आवाजें आती रही। अब बसें बीच गाँव में प्रवेश कर चुकी थीं। आगे की दो बसें आगे बढ़ गईं। सामने ही सड़क किनारे एक स्कूल के सामने, हमारी बस रूक गई। एक टीम उतरी। बस फिर आगे बढ़ी। तीन किलो मीटर चल कर बस फिर रूकी। बस के रूकते ही इस बार तडतडा कर जोर से पांच-छह आवाजें हुईं। यह गोलियों की आवाजें थीं या फिर पटाखों की, हम समझ नहीं पाए। डर से देह के साथ साथ सभी की रूहें तक कांप गईं। चूहेदानी में फंसे चूहों जैसी हमारी हालत हो गई थी। अगर नक्सलियों का यह प्लान है तो कोई नहीं बचेंगे। बस में महज आधा दर्जन फोर्स सवार थे। मजिस्ट्रेट “ शाम को मिलेंगे “ कह दूसरी बस से आगे निकल गए थे। आधे दर्जन फोर्स हमारी रक्षा करेंगे कि अपनी ! नेपाल का अमेरिका से लड़ने जैसा हाल ! हम सभी आधे घंटे तक बस में दुबके रहे। जवानों ने भी अपनी अपनी पोजीशन ले लिए थे। लेकिन कोई हलचल नहीं, कोई सामने नहीं आये। डर चरम पर पहुँच चुका था। मन की शंका प्रबल होती चली गयी थी। तभी मुझे गुरु भाई महेन्द्र की याद आई। उसने वाटशप में किसी चन्द्रदेव का नंबर भेजने की बात कही थी। वाटशप खोला। सचमुच एक

नंबर सेंड किया हुआ था। कागज़ में उस नंबर को नोट किया, फिर मोबाइल पर डाल कॉल लगा दिया, “ मैं अभी हेलो ! कहने ही वाला था, कि उससे पहले उधर से आवाज आई, “ श्यामल दा, जोहार जोहार ! आप पहुँच गए क्या.. ? “

“ जोहार भाई, चन्द्रदेव बोल रहा है.. ? “

“ हां दादा, मैं चन्द्रदेव ही बोल रहा है, आप सब पहुँच गए.. ? “

“ हां, हां भाई, हम सब पहुँच गए हैं। कहाँ हो तुम ? यहाँ सभी डरे हुए हैं। जल्दी आओ न.. ! “

“ हम पांच मिनट में पहुँच रहे हैं, डरने की कोई बात नहीं है दादा.. ! “ चन्द्रदेव ने कहा और फोन काट दिया।

“ कौन था ? “ एक जवान सामने आया।

“ इसी गाँव के युवा है.. ! “

इतने में ही दो मोटरसाइकिल पे सवार छह लडके वहाँ आ पहुँचे। सब हमउम्र के थे। इसी बीच हम सभी बस से नीचे उतर आये थे। जवान भी नीचे आ गए थे। वे खतरों को सूँघ रहे थे और हम लडकों में अपनी सुरक्षा ढूँढ रहे थे। इतने में एक लडका आगे बढ़ कर मेरा पांव छूकर प्रणाम किया। बोला “ आप ही श्यामल दा है न। फेसबुक में आपका फोटो देखा था। तभी पहचान गया। “

“ हम लोग यहाँ पहुँचे तब गोलियों जैसी तडतडा कर आवाजें आई थीं। यह कैसी आवाजें थीं चन्द्रदेव.. ? “

“ आप लोग डरे नहीं, निश्चित रहें, वो गोलियों की नहीं, पटाखों की आवाज थीं। वोट बहिष्कार नहीं हुआ, इस खुशी में लडकों ने पटाखे फोड़े हैं। कोई खतरा नहीं है। रिकार्ड वोट पड़ेंगे। बेफिक्र रहें आप सब। शाम को आऊंगा, बी ई लो आपके खाने का इंतजाम कर दूँगा.. ! “ कह चन्द्रदेव पुनः मोटरसाइकिल पर जा बैठा “ दादा शाम को मिलता हूँ। “

हम सबने राहत की सांस ली। सामने ही स्कूल था। सभी अपना अपना समान उठाने लगे थे।

आसीम संसार में कितने सीमित हम



उमेश मानव



फोटो : एआई

प्रकृति ने हमें सब कुछ दिया है। हम सभी के जीवन यापन के लिए हमें कुछ नहीं करना।

परन्तु हमने क्या किया, हमने वह सब किया जो इस प्राकृतिक उपहार को नष्ट कर रहा है। हम ज्ञान की खोज में रहे, उसे अर्जित किया और असंख्य चीजों का निर्माण किया। अब जरा पशुओं के बारे में सोचें। उन्होंने कुछ नहीं बनाया कोई ज्ञान अर्जन नहीं किया। वे हमसे ज्यादा आनन्दित और शांत हैं। यहाँ तक प्रकृति ने हमें हमारे खाने के लिए भी सब दिया है। इतना दिया है कि हम सब के लिए पूरा हो सके। परन्तु हमने चीजों को अप्राकृतिक रूप से पकाया और पका कर बर्बाद करने के लिए चीजें बनाई।

गुरुवर की कही बातों में यूं तो हर क्षण आनन्द, सहज वास्विकता और स्पष्टता का एहसास होता है। लेकिन कभी अचानक ही उनके द्वारा बोले गये शब्द यूं तो आम बातचीत से लगते हैं पर मुस्कराते हुए अपने मुख से जो जोरदार धमाका मनुष्य समाज की इस व्यवस्था पर करते हैं, मत पूछिये। उससे भी जोरदार झटका जो हमारी परम्परा, समझ, शिक्षा, आधुनिकता, हमारे अहम को लगता है वह शर्मसार कर देने वाला होता है। ऐसी ही बात ने कुछ तो असर छोड़ा है जो यहाँ आप से साझा करने की इच्छा से हूँ। गुरुवर के कहे का असर होता है, अनकहे का तो और भी सूक्ष्म व्यापक असर होता है। मानव समाज अपने को कितना विकसित और सभ्य मान कर चलता है यह तो जाहिर है। आज की समझ ऐसी है कि हमने बड़ी बुद्धिमत्ता, साहस और परिश्रम से यह समाजिक व्यवस्था खड़ी की है। लगता भी ऐसा ही है कि इससे बेहतर क्या होता? यह सब हमने अपनी सुविधा और आनन्द के लिए ही तो किया है? गुरुवर इस पर दो टूक कहते

हैं कि “ जानवरों ने तो ऐसा कुछ भी नहीं किया पर वे तो हमेशा आनन्द में रहते हैं और हमसे ज्यादा शांत रहते हैं। इसके लिए उन्होंने कौन सी किताब पढ़ी या कॉलेज गये? अपने आनन्द के लिए उन्होंने कौन सा किसी का शोषण किया या दुःख पहुँचाया। प्रकृति को हानि पहुँचाकर कौन सा उन्होंने महल बना लिया है। पशुओं ने जो एक काम किया है वह यह कि वे प्रकृति के अनुकूल रहे और अपने स्वभाव पर ही चले। वहीं मानव जहाँ से चला, बिगाड़ता ही रहा।

जो कुछ झकझोरना वाला गुरुमुख से निकला वह यह था कि ‘जानवरों के नाम एक इंच जमीन नहीं है, कही भी आराम कर लेते हैं। वहीं मानव जमीन बाँट कर, नाप जोख कर इतना समसदर हो गया है कि किसी और की जमीन पर आराम भी नहीं कर सकता है। सरकारी पार्क आदि में भी जाकर नहीं सो सकता है। ब्रह्माण्ड के सभी जीव अपनी इच्छा के अनुसार जब चाहे, जहाँ चाहे, जैसे चाहे बैठ सकते हैं, आराम कर सकते हैं। जिनके नाम एक इंच जमीन नहीं है, उनका पूरा ब्रह्माण्ड है।

कही भी, कभी भी आने जाने के लिए स्वतंत्र है। “ गुरुवर आगे जो कहते हैं उस पर थोड़ा ठहर कर विचार अवश्य करिएगा, गुरुवर कहते हैं कि “ हम सब बुद्धिजीवी लोग हैं इंच इंच में बटे हुए हैं। हमारी स्थिति यह है कि हम पूरे ब्रह्माण्ड का आनन्द नहीं ले सकते हैं। हम सिर्फ उतने का आनन्द ले सकते हैं, ‘ जतनी हम खरीद चुके हैं। ‘ उनका इतना कहना ही मनुष्य कि आज तक की सभी उपलब्धियों पर पानी डाल देने वाला था। अब यदि आप सभी ठहरे हो तो तनिक विचार करिए कि मानव जाति जो कि इतनी ज्ञानी बनती है आखिर उसने क्या बनाया है। उसकी बनाई चीजों में आखिर क्या है जिससे सच्चे अर्थों में संतुष्टि मिलती हो? क्या ही है जो हमें आनन्द में रखता है। जिसके बन जाने से हमें वास्तव में शांति मिली हो। शायद ऐसा कुछ भी नहीं है। जो भी कुछ आज का मनुष्य कर पाया है वह हमारे अंदर हलचल ही कर रहा है। जिस आनन्द और आराम की चाहत में मानव साभ्यता यहाँ तक बढ़ आई है, शायद आज भी हमें उसी की तलाश है। प्रश्न आता है कि फिर अब तक जो किया वह क्या था? एक प्रश्न यह भी है कि क्या वास्तव में हम लाभ में रहे? जहाँ एक ओर पशु जगत जो कि मानव जाति से निम्न माना जाता है वह असीम ब्रह्माण्ड का भोग करके आनन्दित है। वहीं मानव समाज! अधिकार करके बांटवारा करके पूरे ब्रह्माण्ड में कुछ इंच का हिस्सेदार बनकर रह गये। जहाँ पूरा ब्रह्माण्ड प्राकृतिक तौर पर हम सबों के लिए है वहीं हम सीमित रह गये। यह लाभ की बात है या हानि की?

प्रकृति ने हमें सब कुछ दिया है। हम सभी के जीवन यापन के लिए हमें कुछ नहीं करना। परन्तु हमने क्या किया, हमने वह सब किया जो इस प्राकृतिक उपहार को नष्ट कर रहा है। हम ज्ञान की खोज में रहे, उसे अर्जित किया और असंख्य चीजों का निर्माण किया। अब जरा पशुओं के बारे में सोचें। उन्होंने कुछ नहीं बनाया कोई ज्ञान अर्जन नहीं किया। वे हमसे ज्यादा आनन्दित और शांत हैं। यहाँ तक प्रकृति

यदि हम अपने स्वभाव पर चलें, अपने एहसास से निर्णय ले और किसी से भी बलपूर्वक मिलान न करें तो आनन्दित रह सकते हैं। गुरुवर कहते हैं कि इसी प्रकार पशु जगत दूसरों को पढ़ लेते हैं। होने वाली घटनाओं के बारे में पहले जान लेते हैं। सहज स्वभाव में रहते हैं इसीलिए दुख दर्द से परे रहते हैं। शांति और आनन्द में रहते हैं। वहीं मानव ने गुणा गणित लगाकर, अप्राकृतिक मिलान करके, अपना पराया किया, सुख दुख के फेर में स्वयं को फंसाया। सब पाने कि चातुराई में सब गवां बैठा है आजका मानव समाज ।

ने हमें हमारे खाने के लिए भी सब दिया है। इतना दिया है कि हम सब के लिए पूरा हो सके। परन्तु हमने चीजों को अप्राकृतिक रूप से पकाया और पका कर बर्बाद करने के लिए चीजें बनाई। आज हमारा क्या हाल है। जिन चीजों में हमने हाथ लगाया वो हमारे लिए ही विषैली हो गई है। फसलों की कई गुना पैदावार होने के बाद भी, विज्ञान की तरक्की और इतने आधुनिक होने के बाद भी आज लाखों लोग भुखमरी का शिकार होते हैं। हमसे निकृष्ट माने जाने वाले पशु तो प्रकृति के मीठे फलों का आनन्द ले जा रहे हैं। उन्हें कोई तकलीफ क्यों नहीं? वे तो खेती नहीं करते, उन्होंने तो बड़े-बड़े घर, दफ्तर नहीं बनवाये। हाँ पशुओं के जीवन में हमने जहाँ जहाँ हस्तक्षेप किया है वहाँ स्वाभाविकता नहीं दिखती, कुछ अलग आचरण पशुओं में भी दिख जाते हैं। अन्यथा प्राकृतिक परिवेश में उन्होंने कोई विष वाली स्थिति पैदा नहीं की है।

गुरुवर बताते हैं कि यह सब होने का कारण यही है कि ‘मानव ज्ञान की तलाश में पड़ गया। ‘ अपनी सहजवृत्ति त्याग कर अहं भाव में पड़ अपने ही स्वभाव से अलग चल पड़ा। प्रकृति ने मानव जाति को अपनी सहजवृत्ति पर चलते हुए निर्माण करने के लिए बनाया था। परन्तु अहं भाव में आकर वह विनाश करता रहा। हम स्वयं से विचार करें आखिर हम मानव ने जो भी कुछ अब तक अर्जित किया है, क्या वह बिना किसी शोषण के किया है? क्या वह आप्रकृतिक तो नहीं? क्या हमें उससे आनन्द की अनुभूति भी हुई? बहुत ही सरल अर्थों में देखे तो लगेगा जैसे हम खेल में हारे हुए खीजे

हुए से बच्चे हैं। जहाँ सारा खेल हमारे हिसाब से हो रहा था, सब कुछ हमारा ही था वहाँ हमने अपने को संकुचित कर डाला। आलिशान असीम ईश्वरीय उपहार में हम सीमित होकर रह गये। हमने आलीशान बंगले बनाये लाखों सुविधाएं तैयार की और न जाने क्या-क्या। फिर भी हमें जब भी मौका मिला हम, दो पल के लिए ही सही भागकर शांति और सुकून की खोज में प्रकृति के समीप जाकर रहने लगे। हर व्यक्ति छुट्टियों में ऐसा ही करना चाहता है। शहरों के शोर से दूर दिमाग को शांत करने वाली प्रकृति की मोहक छटा के बीच रहकर हमें सबसे ज्यादा आराम मिलता है। हो सकता है इस वजह से क्योंकि प्रकृति के सबसे दुलारे हम ही हैं और हमारा असली घर वही है न कि दिखावे के घुटन भरे जंजाल में।

गुरुवर अभी भी कहते हैं कि यदि हम अपने स्वभाव पर चलें, अपने एहसास से निर्णय ले और किसी से भी बलपूर्वक मिलान न करें तो आनन्दित रह सकते हैं। गुरुवर कहते हैं कि इसी प्रकार पशु जगत दूसरों को पढ़ लेते हैं। होने वाली घटनाओं के बारे में पहले जान लेते हैं। सहज स्वभाव में रहते हैं इसीलिए दुख दर्द से परे रहते हैं। शांति और आनन्द में रहते हैं। वहीं मानव ने गुणा गणित लगाकर, अप्राकृतिक मिलान करके, अपना पराया किया, सुख दुख के फेर में स्वयं को फंसाया। सब पाने कि चातुराई में सब गवां बैठा है आजका मानव समाज। प्रकृति ने हम पर सब वार दिया है, हम हैं कि इतने सीमित और संकुचित हो गये हैं कि अपनी दोनो बहें पूरी फैला कर उसे गले भी नहीं लगा पा रहे हैं।



अवनीश कुमार गुप्ता

प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

भारत में स्कूली शिक्षा की बहस लंबे समय तक विद्यालयों की संख्या, नामांकन और बुनियादी सुविधाओं के इर्द-गिर्द घूमती रही। अब प्रश्न बदल रहा है। बच्चा विद्यालय में पहुंच रहा है या नहीं, यह महत्वपूर्ण है, लेकिन उससे बड़ा प्रश्न यह है कि विद्यालय पहुंचने के बाद वह सीख क्या रहा है, उसकी जिज्ञासा कितनी विकसित हो रही है और भविष्य की चुनौतियों के लिए उसकी तैयारी कैसी है। प्रधानमंत्री स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया यानी पीएम श्री योजना इसी बदलाव को संस्थागत रूप देने का प्रयास है। सितंबर 2022 में शुरू हुई यह केंद्र प्रायोजित योजना 2022-23 से 2026-27 तक चलनी है और 14,500 से अधिक मौजूदा विद्यालयों को नई शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप अनुकरणीय संस्थानों के रूप में विकसित करने का लक्ष्य रखती है। इसका कुल परियोजना व्यय 27,360 करोड़ रुपये है, जिसमें केंद्रीय हिस्सा 18,128 करोड़ रुपये है।

जुलाई 2026 तक 13,092 विद्यालय पीएम श्री के लिए चयनित किए जा चुके थे। सरकार के अनुसार ये विद्यालय राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के साथ-साथ केंद्रीय विद्यालय संगठन, नवोदय विद्यालय समिति और एनसीईआरटी से संबंधित संस्थानों को भी शामिल करते हैं। लक्ष्य की तुलना में यह लगभग 90 प्रतिशत उपलब्धि है। चयनित विद्यालय 725 जिलों और 8,340 ब्लॉकों तथा शहरी स्थानीय निकाय क्षेत्रों तक पहुंच चुके हैं। उत्तर प्रदेश 1,888 विद्यालयों के साथ सबसे आगे है, जबकि महाराष्ट्र में 946 और मध्य प्रदेश में 944 विद्यालय चयनित हैं।

स्कूलों की चमक से आगे सीखने की गुणवत्ता



फोटो : एआई

सरकार का अनुमान है कि योजना से 20 लाख से अधिक विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष लाभ मिलेगा।

लेकिन किसी शिक्षा योजना की सफलता का मूल्यांकन केवल इस आधार पर नहीं किया जा सकता कि कितने विद्यालय चयनित हुए। असली सवाल यह है कि इन विद्यालयों में शिक्षा की प्रकृति कितनी बदली है। पीएम श्री की मूल अवधारणा ही यह है कि चयनित विद्यालय अपने आसपास के दूसरे विद्यालयों के लिए अनुकरणीय संस्थान बनें और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए नेतृत्व तथा मार्गदर्शन उपलब्ध कराएं। यानी योजना का उद्देश्य केवल कुछ विद्यालयों को बेहतर बनाना नहीं, बल्कि उनके माध्यम से व्यापक विद्यालयी व्यवस्था में परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू करना है।

यहीं से योजना की सबसे बड़ी संभावनाएं और सबसे कठिन चुनौतियां दोनों सामने आती हैं। पीएम श्री में शिक्षा को नई शिक्षा नीति के 5+3+3+4 ढांचे के अनुरूप विकसित करने, अनुभवात्मक और गतिविधि आधारित अधिगम को बढ़ाने तथा पाठ्यक्रम को बहुविषयी और विद्यार्थी-केंद्रित बनाने पर जोर है। इसका लक्ष्य बच्चे को केवल पाठ

याद कराने के बजाय उसे प्रश्न पूछने, प्रयोग करने, समस्या समझने और समाधान खोजने की क्षमता देना है। विद्यालयों में डिजिटल संसाधन, स्मार्ट कक्षाएं, सूचना एवं संचार तकनीक, विज्ञान तथा कौशल प्रयोगशालाओं जैसी सुविधाओं को भी इसी व्यापक उद्देश्य से जोड़ा गया है। हाल के सरकारी विवरण में सीखने के परिणाम, समावेशी शिक्षा, हरित विद्यालय, अनुभवात्मक अधिगम और भविष्य के कौशल को पीएम श्री के प्रमुख आयामों के रूप में रेखांकित किया गया है।

यह परिवर्तन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि रोजगार की दुनिया तेजी से बदल रही है। आने वाले समय में केवल पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान से काम नहीं चलेगा। रचनात्मकता, डिजिटल साक्षरता, तार्किक सोच, समस्या-समाधान, नेतृत्व, संवाद और नैतिक निर्णय जैसी क्षमताएं भी आवश्यक होंगी। इसलिए विद्यालय को परीक्षा केंद्र से सीखने के केंद्र में बदलना समय की मांग है।

भाषा के स्तर पर भी योजना में महत्वपूर्ण संभावनाएं हैं। यूडीआईएसई+ 2025-26 के आंकड़ों के अनुसार पीएम श्री विद्यालयों

में संस्कृत के 6,102, उर्दू के 1,994 और विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के 9,152 शिक्षक दर्ज हैं। यह तथ्य बताता है कि बहुभाषिकता को केवल सांस्कृतिक मुद्दा नहीं, बल्कि सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा बनाने की कोशिश हो रही है।

हालांकि भाषा संबंधी यह उपलब्धि तभी सार्थक होगी जब स्थानीय भाषा और मातृभाषा का प्रयोग वास्तव में कक्षा-कक्ष की शिक्षण पद्धति में दिखाई दे। केवल अलग भाषा के शिक्षक की नियुक्ति पर्याप्त नहीं है। बच्चे को अपनी भाषा में प्रश्न पूछने, विचार व्यक्त करने और अवधारणाओं को समझने का अवसर मिलना चाहिए। भाषा शिक्षा की सुविधा नहीं, ज्ञान तक पहुंच का माध्यम है।

योजना की एक और निर्णायक कड़ी शिक्षक हैं। अच्छी इमारत, स्मार्ट बोर्ड और इंटरनेट सुविधा शिक्षक का विकल्प नहीं बन सकते। पीएम श्री के अंतर्गत जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के माध्यम से क्षमता निर्माण पर जोर दिया गया है। प्रत्येक डायट को क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के लिए तीन लाख रुपये तक और शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए प्रति शिक्षक 2,500 रुपये तक की सहायता का प्रावधान है। प्रधानाचार्यों को नेतृत्व और विद्यालय प्रबंधन का प्रशिक्षण देने की भी व्यवस्था है।

लेकिन शिक्षक प्रशिक्षण की असली सफलता प्रशिक्षण की संख्या से नहीं, कक्षा में उसके प्रभाव से मापी जानी चाहिए। यदि शिक्षक प्रशिक्षण के बाद भी वही पुरानी रटत पद्धति अपनाता है, तो प्रशिक्षण प्रमाणपत्र बनकर रह जाएगा। शिक्षा सुधार का सबसे कठिन हिस्सा उपकरण खरीदना नहीं, शिक्षण संस्कृति बदलना है।

योजना की चयन प्रक्रिया भी विचारणीय है। पीएम श्री विद्यालयों का चयन चुनौती पद्धति के माध्यम से किया जाता है। राज्य या केंद्रशासित प्रदेश को समझौता ज्ञापन करना होता है, इसके बाद यूडीआईएसई+ के आधार पर पात्रता जांच और प्रतिस्पर्धात्मक मूल्यांकन होता है। इसके बाद भौतिक सत्यापन किया जाता है। उपलब्ध

विवरण के अनुसार शहरी विद्यालयों के लिए न्यूनतम 70 प्रतिशत और ग्रामीण विद्यालयों के लिए 60 प्रतिशत अंक की कसौटी रखी गई है।

यह प्रतिस्पर्धात्मक व्यवस्था गुणवत्ता सुनिश्चित करने का प्रयास है, लेकिन इसके भीतर एक अंतर्निहित प्रश्न भी है। जो विद्यालय पहले से अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति में हैं, उनके लिए मानकों पर खरा उतरना आसान हो सकता है। सबसे पिछड़े विद्यालय, जिनके पास आधारभूत संसाधन और संस्थागत क्षमता कम है, वे इस प्रतिस्पर्धा में पीछे रह सकते हैं। यदि ऐसा हुआ तो योजना अनजाने में उन विद्यालयों को प्राथमिकता दे सकती है जो पहले ही कुछ बेहतर स्थिति में हैं। इसलिए उत्कृष्ट विद्यालय बनाने के साथ-साथ कमजोर विद्यालयों के लिए समानांतर सुधार रणनीति आवश्यक है।

सबसे गंभीर प्रश्न परिणामों का है। सरकार ने गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए स्कूल क्वालिटी असेसमेंट फ्रेमवर्क विकसित किया है, जिसमें पाठ्यक्रम, शिक्षण, मूल्यांकन, शिक्षक क्षमता, समावेशन, लैंगिक समानता, आधारभूत संरचना और विद्यार्थियों के सीखने के परिणाम जैसे पहलू शामिल हैं।

फिर भी वास्तविक परीक्षा यही होगी कि इन मानकों का स्वतंत्र मूल्यांकन कितनी कठोरता से होता है। विद्यालय में स्मार्ट कक्षा स्थापित हो जाना उपलब्धि है, लेकिन यदि बच्चा गणित की मूल अवधारणा नहीं समझ पा रहा, तो वह सुविधा अधूरी है। नई प्रयोगशाला बन जाना अच्छी बात है, लेकिन यदि उसमें प्रयोग नहीं हो रहे तो उसका शैक्षिक मूल्य सीमित है। रंगीन दीवारें, सुंदर फर्नीचर और डिजिटल स्क्रीन विद्यालय को आधुनिक दिखा सकते हैं; आधुनिक शिक्षा तब बनेगी जब विद्यार्थी की सोच आधुनिक होगी।

योजना का संघीय पक्ष भी महत्वपूर्ण है। केंद्र प्रायोजित योजना होने के कारण केंद्र और राज्यों के बीच वित्तीय तथा प्रशासनिक समन्वय इसकी सफलता की बुनियादी शर्त है। राज्यों की आर्थिक क्षमता, प्रशासनिक संरचना

और स्थानीय शैक्षिक परिस्थितियां अलग-अलग हैं। इसलिए पूरे देश में एक समान मॉडल लागू करने के बजाय राष्ट्रीय मानकों के साथ स्थानीय जरूरतों के लिए पर्याप्त लचीलापन आवश्यक है।

सबसे बड़ा जोखिम यह है कि पीएम श्री विद्यालय उत्कृष्टता के अलग-अलग द्वीप बन जाएं। यदि कुछ हजार विद्यालय आधुनिक संसाधनों से लैस हो जाएं लेकिन उनके आसपास के हजारों विद्यालय उसी पुराने ढांचे में चलते रहें, तो योजना का व्यापक प्रभाव सीमित हो जाएगा। इसलिए चयनित विद्यालयों से वास्तविक ज्ञान-साझाकरण, शिक्षक सहयोग, संसाधन-साझाकरण और मार्गदर्शन की व्यवस्था को मजबूत करना होगा। तभी 'मॉडल स्कूल' की अवधारणा 'मॉडल व्यवस्था' में बदल सकेगी।

पीएम श्री योजना को इसलिए केवल विद्यालय उन्नयन की योजना मानना उसके महत्व को छोटा करना होगा। यह भारतीय शिक्षा व्यवस्था में उस बदलाव का संकेत है जिसमें ध्यान केवल पहुंच से गुणवत्ता, संसाधन से परिणाम और पाठ्यक्रम से दक्षता की ओर ले जाने की कोशिश की जा रही है। लेकिन यह परिवर्तन अपने आप नहीं होगा।

अंततः किसी विद्यालय की पहचान उसके भवन से नहीं, वहां से निकलने वाले विद्यार्थियों से होती है। यदि पीएम श्री विद्यालय ऐसे विद्यार्थी तैयार कर पाते हैं जो प्रश्न पूछते हैं, तर्क करते हैं, असहमति को समझते हैं, तकनीक का विवेकपूर्ण उपयोग करते हैं, अपनी भाषा और संस्कृति से जुड़े रहते हैं और बदलती दुनिया में नए कौशल सीखने के लिए तैयार रहते हैं, तभी योजना को सफल कहा जाएगा। भारत को केवल आदर्श विद्यालयों की सूची नहीं चाहिए; उसे ऐसी शिक्षा व्यवस्था चाहिए जिसमें हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण सीखने का अवसर मिले। पीएम श्री की असली अग्निपरीक्षा इसी अंतर को पाटने में है।



इस त्रिपाठी

वाराणसी

De-individualization (जिसे मनोविज्ञान में 'वि-वैयक्तिकीकरण' या 'व्यक्तिहीनता' कहते हैं यह एक ऐसी मनोवैज्ञानिक स्थिति है जिसमें कोई व्यक्ति किसी भीड़ या समूह में शामिल होने के बाद अपनी व्यक्तिगत पहचान, आत्म-जागरूकता (self-awareness) और जिम्मेदारी की भावना को खो देता है। जब लोग इस स्थिति में होते हैं, तो वे वह काम भी कर बैठते हैं जो वे अकेले होने पर कभी नहीं करते। दे-इंडिविजुअलाइजेशन के मुख्य कारण निम्न हो सकते हैं।

गुमनामी (Anonymity): भीड़ में व्यक्ति को लगता है कि उसे कोई पहचान नहीं पाएगा। जिम्मेदारी का बंटवारा (Diffusion of Responsibility): व्यक्ति सोचता है कि किसी भी गलत काम के लिए केवल वह अकेले जिम्मेदार नहीं है, बल्कि पूरी भीड़ जिम्मेदार है।

समूह की ऊर्जा (Group Presence): भीड़ का जोश और उत्तेजना व्यक्ति को अपने नियंत्रण से बाहर कर देती है। इसके उदाहरण भीड़ द्वारा हिंसा (Mob Lynching) या दंगे: आम तौर पर शांत रहने वाले लोग भी भीड़ का हिस्सा बनकर तोड़-फोड़ या हिंसा करने लगते हैं। सोशल मीडिया पर ट्रोलिंग: इंटरनेट पर अपनी असली पहचान छुपाकर (गुमनाम रहकर) लोग दूसरों के लिए अभद्र भाषा का इस्तेमाल करते हैं।

सेना या पुलिस की वर्दी: यूनीफॉर्म पहनने के बाद व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत सोच को छोड़कर समूह के आदेशों का पालन करने लगता है। आधुनिक युग में मानसिक स्वास्थ्य

व्यक्तिहीनता



आज का समाज अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक और परिणाम-उन्मुख हो गया है। व्यक्ति लगातार मशीनी जिंदगी जीने के लिए मजबूर है। इस भागदौड़ में मानवीय संवेदनाएं पीछे छूट रही हैं, जिससे व्यक्ति समाज के बीच रहकर भी खुद को अकेला और अलग-थलग (Alienated) महसूस करता है। यह सामाजिक अलगाव धीरे-धीरे आत्म-अलगाव या व्यक्तिहीनता में बदल जाता है

से जुड़ी कई ऐसी जटिलताएं उभरकर सामने आई हैं, जो व्यक्ति के अस्तित्व और उसके आत्म-बोध को गहराई से प्रभावित करती हैं। इन्हीं में से एक गंभीर स्थिति है 'व्यक्तिहीनता' (Depersonalization)। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से व्यक्तिहीनता एक ऐसी अवस्था है, जिसमें व्यक्ति को अपने ही शरीर, विचारों और अस्तित्व से एक अलगाव या अजनबीपन महसूस होने लगता है। उसे ऐसा प्रतीत होता है जैसे वह अपने जीवन का मुख्य पात्र न होकर, केवल एक बाहरी दर्शक या रोबोट की तरह उसे देख रहा है। हालांकि इसे अक्सर एक व्यक्तिगत मानसिक समस्या माना जाता है, लेकिन इसके उद्भव और बढ़ने में समाज की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। व्यक्तिहीनता का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण में को अक्सर एक रक्षा तंत्र (Defense Mechanism) के रूप में देखा जाता है। जब कोई व्यक्ति अत्यधिक मानसिक तनाव, आघात (Trauma), या

तीव्र चिंता (Anxiety) से गुजरता है, तो उसका मस्तिष्क इस असहनीय दर्द से बचने के लिए खुद को पर्यावरण या स्वयं की चेतना से अलग कर लेता है। यह मन की एक ऐसी स्थिति है जहां वह भावनाओं को 'सुन्न' कर देता है ताकि व्यक्ति उस तात्कालिक संकट को झेल सके। हालांकि, जब यह स्थिति लंबे समय तक बनी रहती है, तो यह 'डीपर्सनलाइजेशन-डीरियलाइजेशन डिसऑर्डर' का रूप ले लेती है। इसमें व्यक्ति का वास्तविकता से संपर्क तो नहीं टूटता (वह जानता है कि जो वह महसूस कर रहा है वह केवल एक अहसास है, भ्रम नहीं), लेकिन उसके भीतर का आत्म-बोध पूरी तरह से खंडित हो जाता है। समाज की भूमिका और प्रभाव व्यक्तिहीनता केवल मस्तिष्क के रसायनों में असंतुलन का परिणाम नहीं है, बल्कि यह उस सामाजिक ताने-बाने से भी गहराई से जुड़ी है जिसमें हम सांस लेते हैं। वर्तमान सामाजिक परिवेश इस स्थिति को कई तरीकों से बढ़ावा दे रहा है:

आधुनिक जीवन की तीव्र गति और

अलगाव: आज का समाज अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक और परिणाम-उन्मुख हो गया है। व्यक्ति लगातार मशीनी जिंदगी जीने के लिए मजबूर है। इस भागदौड़ में मानवीय संवेदनाएं पीछे छूट रही हैं, जिससे व्यक्ति समाज के बीच रहकर भी खुद को अकेला और अलग-थलग (Alienated) महसूस करता है। यह सामाजिक अलगाव धीरे-धीरे आत्म-अलगाव या व्यक्तिहीनता में बदल जाता है।

अवास्तविक सामाजिक मानक: सोशल मीडिया और डिजिटल संस्कृति के इस दौर में समाज ने सफलता, सुंदरता और खुशी के कुछ कृत्रिम मानक तय कर दिए हैं। इन मानकों पर खरा उतरने का लगातार दबाव व्यक्ति को अपनी वास्तविक पहचान को छिपाने और एक 'नकली पहचान' या मुखौटा पहनने पर मजबूर करता है। जब व्यक्ति लंबे समय तक अपनी असलियत से दूर रहता है, तो वह अंततः खुद से ही अनभिज्ञ हो जाता है।

सामुदायिक समर्थन की कमी: पारंपरिक समाजों में संयुक्त परिवार और मजबूत सामुदायिक नेटवर्क संकट के समय एक सुरक्षा कवच का काम करते थे। इसके विपरीत, आधुनिक शहरी समाजों में व्यक्तिवादी संस्कृति के बढ़ने से यह भावनात्मक सहारा कमजोर हुआ है। जब किसी व्यक्ति को सामाजिक स्तर पर अपनी भावनाओं को साझा करने का सुरक्षित स्थान नहीं मिलता, तो वह मानसिक रूप से टूटने लगता है।

सामूहिक आघात और अनिश्चितता: सामाजिक, आर्थिक और वैश्विक स्तर पर लगातार बनी रहने वाली अनिश्चितताएं (जैसे महामारी, युद्ध, या आर्थिक मंदी) भी सामूहिक स्तर पर मानसिक असुरक्षा की भावना पैदा करती हैं। समाज में व्याप्त यह निरंतर भय और अनिश्चितता व्यक्ति के भीतर चिंता के स्तर को बढ़ा देती है, जो व्यक्तिहीनता की स्थिति को ट्रिगर करने में मुख्य भूमिका निभाती है। कॉर्पोरेट माहौल 'व्यक्तिहीनता'

(Depersonalization) को बढ़ावा देने वाला एक बड़ा कारक बनकर उभरा है। जब एक कर्मचारी अपनी ही भावनाओं, शरीर और काम से पूरी तरह कट जाता है और खुद को एक मशीन के पुर्जे की तरह महसूस करने लगता है, तो वह व्यक्तिहीनता का शिकार हो जाता है। कॉर्पोरेट संस्कृति किस प्रकार इस मानसिक स्थिति को जन्म देती है, इसे निम्नलिखित मुख्य बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है: अत्यधिक मशीनीकरण और उत्पादकता का दबाव (Hyper-Productivity & Mechanization) कॉर्पोरेट जगत में व्यक्ति का मूल्यांकन अक्सर उसकी मानवीय क्षमताओं के बजाय केवल 'संख्याओं' (Numbers), 'केपीआई' (KPIs) और 'टारगेट्स' के आधार पर होता है। जब किसी कर्मचारी को लगातार यह महसूस कराया जाता है कि उसका महत्व केवल उसकी उत्पादकता तक सीमित है, तो वह धीरे-धीरे अपनी मानवीय संवेदनाओं को दबाने लगता है। यह स्थिति उसे खुद को एक इंसान के बजाय केवल एक 'संसाधन' (Resource) या मशीन के रूप में देखने पर मजबूर करती है।

भावनाओं का श्रम और मुखौटा संस्कृति (Emotional Labor & Masking) कॉर्पोरेट संस्कृति में 'पेशेवर व्यवहार' (Professionalism) के नाम पर कर्मचारियों से अक्सर अपनी वास्तविक भावनाओं को छिपाने की अपेक्षा की जाती है। चाहे ग्राहक से बात करनी हो या वरिष्ठ अधिकारियों से, एक कर्मचारी को लगातार सकारात्मकता का मुखौटा पहनना पड़ता है, भले ही वह भीतर से अत्यधिक तनाव या दुःख में हो। मनोविज्ञान में इसे 'इमोशनल लेबर' कहा जाता है। लंबे समय तक अपनी वास्तविक भावनाओं को दबाने और नकली पहचान जीने से व्यक्ति का अपने वास्तविक 'स्व' (Self) से संपर्क टूट जाता है। बर्नआउट और क्रोनिक स्ट्रेस (Burnout and Chronic Stress)

काम के अनिश्चित घंटे, लगातार बनी रहने वाली समय-सीमाएं (Deadlines) और हर समय उपलब्ध रहने की संस्कृति (Always-on Culture) कर्मचारियों को 'क्रोनिक स्ट्रेस' की स्थिति में धकेल देती है। जब तनाव असहनीय हो जाता है, तो मस्तिष्क एक रक्षा तंत्र (Defense Mechanism) के रूप में काम करना शुरू करता है। वह खुद को उस दर्दनाक माहौल से मानसिक रूप से अलग कर लेता है। इसी अलगाव को व्यक्तिहीनता कहा जाता है, जहां कर्मचारी काम तो करता है, लेकिन वह मानसिक रूप से वहां उपस्थित नहीं होता।

पहचान का संकट (Identity Crisis) कॉर्पोरेट संस्कृति अक्सर व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन और व्यावसायिक जीवन के बीच की सीमाओं को धुंधला कर देती है। जब किसी व्यक्ति की पूरी पहचान केवल उसके पद (Designation) और कंपनी तक सीमित हो जाती है, तो वह अपने मूल अस्तित्व (शौक, रिश्ते, व्यक्तिगत मूल्य) को भूलने लगता है। काम से अलग होने या असफल होने पर उसे अपने अस्तित्व में एक बड़ा शून्य महसूस होता है, जो व्यक्तिहीनता के अहसास को तीव्र करता है।

अतः हम कह सकते हैं कि व्यक्तिहीनता की स्थिति से निपटने के लिए केवल व्यक्तिगत स्तर पर चिकित्सा या परामर्श ही पर्याप्त नहीं है। इसके लिए सामाजिक दृष्टिकोण में भी बदलाव की नितांत आवश्यकता है। हमें एक ऐसे समाज का निर्माण करना होगा जो केवल उत्पादकता और कृत्रिम प्रदर्शन को महत्व न देकर, मानवीय संवेदनाओं, मानसिक स्वास्थ्य और वास्तविक आत्म-अभिव्यक्ति को भी स्वीकार करे। जब समाज व्यक्ति को उसकी कमियों के साथ स्वीकार करने और उसे एक संवेदनशील माहौल देने में सक्षम होगा, तभी इस प्रकार के गहरे मानसिक अलगाव से बचा जा सकेगा।

आयुर्वेदिक चिकित्सा वैश्विक पथ की प्रगति पर अग्रसर



डॉ. बी.आर. नलवाया
मन्दसौर (म.प्र.)

(आयुर्वेद से जीवेत् शरदः शतम्)

विश्व की प्राचीन चिकित्सा पद्धतियों में आयुर्वेद चिकित्सा का गौरवशाली इतिहास रहा है। अब इस पुरातन चिकित्सा पद्धति को आधुनिकता की ओर ले जाने में केंद्र सरकार की अहम भूमिका बनी हुई है। आयुर्वेद के करीब दो हजार वर्ष बाद प्रचलन में आई एलोपैथी प्रयोग और अनुसंधान के दम पर काफी आगे निकल गई। जिस एलोपैथी चिकित्सा पद्धति का आज बोलबाला है, 17वीं शताब्दी तक इसकी कोई पहचान नहीं थी। आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति सबसे पुरानी पद्धति है और इन दिनों काफी प्रिय हो रही है। इसकी एक विशेषता यह है कि प्राकृतिक तरीके से रोगी का उपचार किया जाता है। वैश्विक स्तर पर इसकी स्वीकार्यता बढ़ गई है। वैसे भारत में आयुर्वेद, होम्योपैथी या यूनानी की मान्यता और इसके प्रति लोगों का भरोसा प्राचीन काल से ही रहा है। अब इस आयुर्वेद चिकित्सा विधा के बढ़ते विश्वास से आयुष उद्योग भी लगातार बढ़ रहे हैं। आठ-दस साल पहले 20 हजार करोड़ रुपये का कारोबार था, जो बढ़कर 1.50 लाख करोड़ तक पहुंच गया है।

केंद्र सरकार ने अब आयुर्वेद दिवस 23 सितंबर को मनाने का फैसला विगत वर्ष में



आयुष के क्षेत्र में असीम संभावनाएं जन्म ले रही है। औषधीय पौधों की खेती से लेकर स्टार्टअप तक आयुष इंडस्ट्री की बड़ी ताकत है। भारत में इस समय आयुष इंडस्ट्री पर आधारित करीब 40 हजार लघु उद्योग कार्यरत हैं प्रतिवर्ष 14 -15 प्रतिशत भारतीय आयुष उद्योग के आगे बढ़ने का अनुमान है। इससे अधिक रोजगार की संभावनाएं बनती हैं। उम्मीद है, कि 5.5 लाख नौकरियां आयुर्वेदिक इंडस्ट्री से उत्पन्न हो सकती है।

ही लिया है। पहले इसे हर साल धन्वंतरि जयंती (धनतेरस) के दिन मनाया जाता था। आयुष राज्य मंत्री प्रतापराव जाधव ने कहा, “आयुर्वेद केवल इलाज की पद्धति नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला है।” गोवा में 302 करोड़ रुपये से बन रहे भारतीय आयुर्वेद संस्थान को चिकित्सा पर्यटन के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। गोवा में आयुर्वेदिक चिकित्सा का यह परिसर 50 एकड़ का होगा। यह अत्याधुनिक संस्थान होगा। इस संस्थान में अध्ययन, अध्यापन और आधुनिक चिकित्सा से

संबंधित सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

आयुष के क्षेत्र में असीम संभावनाएं जन्म ले रही हैं। औषधीय पौधों की खेती से लेकर स्टार्टअप तक आयुष इंडस्ट्री की बड़ी ताकत है। भारत में इस समय आयुष इंडस्ट्री पर आधारित करीब 40 हजार लघु उद्योग कार्यरत हैं। प्रतिवर्ष 14-15 प्रतिशत भारतीय आयुष उद्योग के आगे बढ़ने का अनुमान है। इससे अधिक रोजगार की संभावनाएं बनती हैं। उम्मीद है कि 5.5 लाख नौकरियां आयुर्वेदिक इंडस्ट्री से उत्पन्न हो सकती हैं।

आयुर्वेद के सिद्धांतों के पालन से रोग-

प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, क्योंकि आयुर्वेद में लहसुन, हल्दी, मुलेठी, तुलसी के सेवन के अलावा गर्म पानी का सेवन, भाप और अणु तेल से बेहतर स्वास्थ्य प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए आयुर्वेद विशेषज्ञ से सलाह लेना बेहतर होगा। आयुर्वेदाचार्य डी. परमेश्वर अरोड़ा के अनुसार 4 मुनक्का, 4 काली मिर्च और एक चुटकी हल्दी रात में दूध के साथ पिएं। इसके अलावा शीतोपलादि चूर्ण, च्यवनप्राश का सेवन भी लाभदायक होगा। कुछ भी खाएं, लेकिन उसकी गुणवत्ता, मात्रा, संयोजन, सेवन के तरीके और सेवन के समय की जानकारी के साथ ही लें, तभी उसका लाभ मिलेगा।

आयुर्वेद का मानना है कि पूरा ब्रह्मांड पांच तत्वों से मिलकर बना है। इनमें वायु, जल, आकाश, पृथ्वी व अग्नि शामिल हैं। आयुर्वेद में इन्हें पंचमहाभूत कहा गया है। मनुष्य के शरीर में तीन विकार पैदा होते हैं—पित्त दोष, वात दोष व कफ दोष। इन्हें त्रिदोष कहा जाता है, जो पांच उपदोषों के साथ मिलकर शारीरिक क्रिया को नियंत्रित करते हैं। आयुर्वेद का मानना है कि मनुष्य के शरीर में सप्तधातु (सात ऊतक) हैं—रस, मेद, रक्त, मज्जा, अस्थि, मांस व शुक्र। इनके अलग-अलग काम हैं और रोगों के निदान में भी इनकी महती भूमिका होती है।

दुनिया के 50 फीसदी लोगों को ही आवश्यक चिकित्सा मिल रही है। महज 250 साल पुरानी एलोपैथी चिकित्सा से भारत में सिर्फ 40 फीसदी लोग ही इलाज पा रहे हैं। सभी लोगों का इलाज करने का एकमात्र रास्ता और सुलभ तरीका आयुर्वेद है। बड़े-बड़े नर्सिंग होम में आज भी 80 फीसदी से ज्यादा आयुर्वेद चिकित्सक ही सेवा दे रहे हैं। भारत में 60 फीसदी मरीजों की चिकित्सा व्यवस्था भी आयुष चिकित्सा द्वारा की जा रही है। वैसे तो आयुर्वेद के जो चिकित्सक सर्जरी करने में सक्षम हैं, वे जरूर कर रहे हैं।



दुनिया के 50 फीसदी लोगों को ही आवश्यक चिकित्सा मिल रही है। महज 250 साल पुरानी एलोपैथी चिकित्सा से भारत में सिर्फ 40 फीसदी लोग ही इलाज पा रहे हैं। सभी लोगों का इलाज करने का एक मात्र रास्ता और सुलभ तरीका आयुर्वेद है। बड़े-बड़े नर्सिंग होम में आज भी 80 फीसदी से ज्यादा आयुर्वेद चिकित्सक ही सेवा दे रहे हैं। भारत में 60 फीसदी मरीजों की चिकित्सा व्यवस्था भी आयुष चिकित्सा द्वारा की जा रही है। वैसे तो आयुर्वेद के जो चिकित्सक सर्जरी करने में सक्षम हैं, वे जरूर कर रहे हैं।

आयुर्वेद चिकित्सा को बढ़ावा देने के लिए सरकारी प्रयास निरंतर जारी हैं। फिर भी कई डॉक्टरों ने अपनी-अपनी प्रतिक्रिया में आयुर्वेद चिकित्सा के प्रति नकारात्मक व सकारात्मक चिंतन भी किया है। चिंतन का तथ्य यह है कि लंबा समय बीत जाने के बाद इस पद्धति को बढ़ावा नहीं मिला। उल्टे एलोपैथी को ही प्रोत्साहन मिल रहा है। किसी ने कहा, आयुर्वेद सिर्फ अभियान और बयानबाजी तक सीमित है। अब आयुर्वेद को देश के गौरव के रूप में आगे ले जाना चाहिए, क्योंकि आयुर्वेद भारत की प्राचीन धरोहर है।

आम जनता में आयुर्वेद के प्रति जागरूकता के लिए स्कूलों, कॉलेजों, सरकारी दफ्तरों में आयुर्वेद पद्धति के कैंपों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। क्योंकि आयुर्वेद सिर्फ औषधियों के सेवन पर जोर नहीं देता, बल्कि यह हमें ऋतुओं के अनुकूल जीवनयापन सीखने में भी मदद करता है, जिससे शरीर निरोगी रहे।

आज आवश्यकता इस बात की है

कि आयुर्वेद की प्राचीन ज्ञान परंपरा को आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान, प्रमाण-आधारित अध्ययन और तकनीकी नवाचार के साथ जोड़ा जाए। औषधीय पौधों की खेती, आयुर्वेदिक औषधियों के गुणवत्तापूर्ण उत्पादन, शोध, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार से इस क्षेत्र में नई संभावनाएं पैदा हो सकती हैं। साथ ही आम लोगों को आयुर्वेदिक उपचार अपनाने से पहले योग्य आयुर्वेद चिकित्सक की सलाह लेने के लिए जागरूक करना भी जरूरी है। भारत की इस प्राचीन चिकित्सा परंपरा की वास्तविक शक्ति तभी सामने आएगी, जब परंपरागत ज्ञान, आधुनिक अनुसंधान और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं एक-दूसरे के पूरक बनें। इससे आयुर्वेद को देश में मजबूत आधार मिलने के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर भी इसकी उपयोगिता और विश्वसनीयता को आगे बढ़ाने का अवसर मिलेगा।

वन्यजीव संरक्षण के अग्रदूत एडवर्ड जेम्स 'जिम' कार्बेट

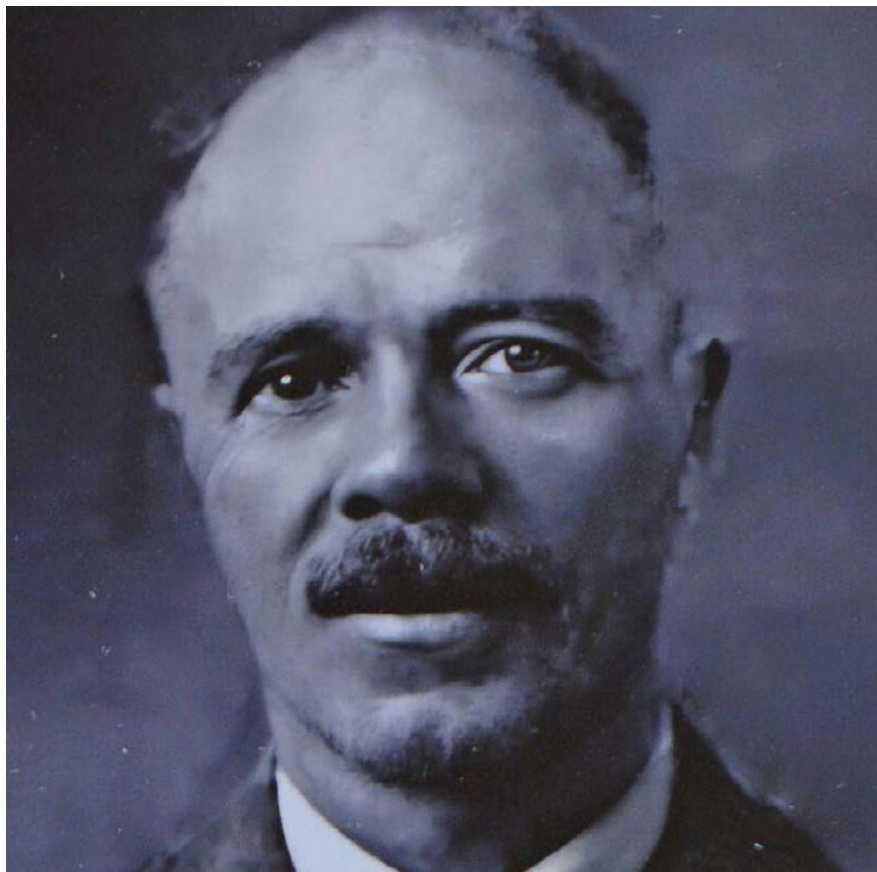


गौरीशंकर तैय्य विनम्र

लखनऊ

प्रकृति के अमर उपासक एडवर्ड जेम्स “जिम” कार्बेट का नाम भारत के वन्यजीव संरक्षण के इतिहास में अत्यंत सम्मान और गौरव के साथ लिया जाता है। सामान्यतः लोग उन्हें आदमखोर बाघों और तेंदुओं का शिकारी मानते हैं, किंतु यह उनकी पहचान का केवल एक पक्ष है। वास्तव में वे एक कुशल प्रकृतिविद्, लेखक, दार्शनिक, वन्यजीव संरक्षक, उत्कृष्ट फोटोग्राफर तथा प्रकृति-प्रेमी थे। उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर यह संदेश दिया कि बाघ जन्म से आदमखोर नहीं होता, अपितु परिस्थितियाँ—जैसे चोट, वृद्धावस्था अथवा प्राकृतिक शिकार की कमी—उसे मनुष्य पर आक्रमण करने के लिए विवश करती हैं। यही विचार आगे चलकर उनके संरक्षणवादी दृष्टिकोण की आधारशिला बना।

एडवर्ड जेम्स कार्बेट का जन्म 25 जुलाई 1875 को उत्तराखण्ड के नैनीताल में हुआ। उनका बचपन कुमाऊँ की पर्वतीय वादियों और घने जंगलों के बीच बीता। प्रकृति के निकट रहने के कारण उन्होंने पशु-पक्षियों की गतिविधियों, जंगल की भाषा और वन्यजीवन को निकट से समझा। प्रारम्भिक जीवन में उन्होंने रेलवे सेवा में कार्य किया, परन्तु जंगलों से उनका लगाव कभी कम नहीं हुआ। बाद में वे ब्रिटिश भारतीय सेना से भी जुड़े। वह न केवल एक वन्य - जीव



संरक्षक थे, अपितु चमड़े का काम करने वाले, जंगली जानवरों की फोटो खींचने वाले तथा कुशल बर्दई भी थे। वे आजीवन अविवाहित रहे। स्वतंत्रता के बाद वे केन्या चले गए, जहाँ 19 अप्रैल 1955 को उनका निधन हुआ।

आदमखोरों के शिकारी से वन्यजीव संरक्षक तक : बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों में कुमाऊँ और गढ़वाल क्षेत्र में अनेक बाघ और तेंदुए आदमखोर बन चुके थे, जिनके कारण ग्रामीणों का जीवन संकट में था। जिम कार्बेट ने रुद्रप्रयाग का आदमखोर तेंदुआ सहित चंपावत की आदमखोर बाघिन, जो 436 लोगों की जान ले चुकी थी, कई खतरनाक जानवरों का शिकार किया। स्थानीय

जनता और प्रशासन के अनुरोध पर जिम कार्बेट ने केवल उन्हीं पशुओं का शिकार किया जो वास्तव में मनुष्यों के लिए घातक बन चुके थे।

समय के साथ उन्होंने अनुभव किया कि अधिकांश आदमखोर बाघ किसी न किसी चोट, बीमारी या वृद्धावस्था के कारण सामान्य शिकार नहीं कर पाते थे। इस अनुभूति ने उनके विचारों में गहरा परिवर्तन किया। उन्होंने बंदूक से अधिक कैमरे और लेखनी को महत्व देना प्रारम्भ किया तथा वन्यजीवों के संरक्षण का अभियान चलाया।

वन्यजीव संरक्षण में योगदान : जिम कार्बेट भारत में संगठित वन्यजीव संरक्षण के

अग्रदूतों में गिने जाते हैं। उनका मानना था कि यदि जंगल नष्ट होंगे तो वन्यजीव भी समाप्त हो जाएंगे और अंततः मानव जीवन भी संकट में पड़ जाएगा।

अतः उन्होंने वनों के संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया, बाघों एवं अन्य वन्यजीवों के प्राकृतिक आवास सुरक्षित रखने की वकालत की, अनियंत्रित शिकार का विरोध किया। वन्यजीवों के वैज्ञानिक अध्ययन और संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। प्रकृति के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाने के लिए उन्होंने लेखन और व्याख्यानों का सहारा लिया। उनकी प्रेरणा से भारत में वन्यजीव संरक्षण के प्रति नई चेतना विकसित हुई, जिसका प्रभाव आगे चलकर राष्ट्रीय उद्यानों और बाघ संरक्षण कार्यक्रमों पर भी पड़ा।

बाघों के प्राकृतिक आवास बचाने हेतु संदेश: जिम कार्बेट बाघ को जंगल का राजा ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण वन-परिस्थितिकी का संरक्षक मानते थे। उनके अनुसार, बाघ खाद्य श्रृंखला के सर्वोच्च शिकारी हैं। उनकी उपस्थिति स्वस्थ वन-परिस्थितिकी का संकेत है। उन्होंने माना कि जहाँ बाघ सुरक्षित हैं, वहाँ वन, जलस्रोत, जैव विविधता तथा अन्य जीव भी सुरक्षित रहते हैं। अतः जंगलों का विनाश अंततः मानव सभ्यता के लिए भी घातक सिद्ध होगा।

आज जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई तथा मानव-वन्यजीव संघर्ष की बढ़ती घटनाओं के बीच कार्बेट का यह संदेश पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है कि “प्रकृति का संरक्षण ही मानव का संरक्षण है।”

हेली नेशनल पार्क (वर्तमान जिम कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान) की स्थापना में योगदान

उनके अथक प्रयासों से भारत का पहला राष्ट्रीय उद्यान वर्ष 1936 में हेली नेशनल पार्क के नाम से स्थापित हुआ। इस उद्यान की स्थापना के पीछे जिम कार्बेट की प्रेरणा, सुझाव और सक्रिय सहयोग का महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। बाद में इसका नाम रामगंगा राष्ट्रीय उद्यान रखा गया और अंततः उनके सम्मान में

वर्ष 1957 में इसका नाम जिम कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान कर दिया गया।

यह राष्ट्रीय उद्यान आज उत्तराखण्ड के नैनीताल और पौड़ी गढ़वाल जिलों में फैला हुआ है तथा देश के सबसे महत्वपूर्ण बाघ अभयारण्यों में से एक है। यह पार्क रायल बंगाल टाइगर, हाथियों, तेंदुओं और पक्षियों की सैकड़ों प्रजातियों का आवास है। वन्य - जीव - प्रकृति प्रेमियों एवं पर्यटकों के यह पार्क के लिए अत्यंत रुचिकर है तथा प्रायः यहाँ भीड़ बनी रहती है। वर्ष 1973 में भारत सरकार ने इसी क्षेत्र को प्रोजेक्ट टाइगर के प्रथम टाइगर रिजर्व के रूप में भी चुना। इस प्रकार जिम कार्बेट की दूरदृष्टि ने भारत के वन्यजीव संरक्षण को स्थायी दिशा प्रदान की।

‘मैन-ईटर्स ऑफ कुमाऊँ’ : एक कालजयी कृति - उन्होंने अपने अनुभवों पर आधारित कई प्रसिद्ध शिकार - कथाएँ लिखीं, किन्तु सन् 1944 में प्रकाशित “Man-Eaters of Kumaon” (मैन-ईटर्स ऑफ कुमाऊँ) जिम कार्बेट की विश्वभर में सर्वाधिक प्रसिद्ध पुस्तक है। इसमें उन्होंने कुमाऊँ क्षेत्र के आदमखोर बाघों और तेंदुओं के शिकार के वास्तविक अनुभवों का अत्यंत रोचक एवं तथ्यपूर्ण वर्णन किया है।

इस पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ हैं—

- ◆ वास्तविक घटनाओं पर आधारित रोचक शैली।
- ◆ कुमाऊँ के प्राकृतिक सौन्दर्य का सजीव चित्रण।
- ◆ ग्रामीण जीवन एवं स्थानीय संस्कृति का वर्णन।
- ◆ वन्यजीवों के व्यवहार का वैज्ञानिक अवलोकन।

इस पुस्तक में यह स्पष्ट संदेश दिया गया है कि अधिकांश आदमखोर परिस्थिति वश बने।

यह पुस्तक केवल शिकार-कथा नहीं, अपितु प्रकृति, मानव और वन्यजीवों के संबंधों का गहन अध्ययन भी है। इसी कारण इसका अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ और आज

भी यह विश्वभर के प्रकृति-प्रेमियों द्वारा पढ़ी जाती है।

जिम कार्बेट के कार्यों की वर्तमान प्रासंगिकता : आज जब विश्व जैव विविधता संकट, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई तथा मानव-वन्यजीव संघर्ष जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब जिम कार्बेट के विचार और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं। उनके संदेश आज हमें सिखाते हैं कि विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन आवश्यक है। साथ ही वन्यजीवों के प्राकृतिक आवासों की रक्षा करना प्रत्येक नागरिक का दायित्व है। इसके लिए केवल कानून नहीं, अपितु जन-जागरूकता भी संरक्षण का आधार है। प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व ही मानव सभ्यता का भविष्य है। यह वैज्ञानिक सोच, संवेदनशीलता और पर्यावरणीय नैतिकता के बिना सतत विकास संभव नहीं।

भारत में आज बाघ संरक्षण, राष्ट्रीय उद्यानों का विस्तार, जैव विविधता संरक्षण तथा पर्यावरण शिक्षा जैसे अनेक प्रयास कहीं न कहीं जिम कार्बेट की दूरदर्शी सोच को आगे बढ़ाते हैं।

एडवर्ड जेम्स (जिम) कार्बेट का जीवन साहस, संवेदनशीलता और प्रकृति-प्रेम का अनुपम उदाहरण है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि सच्चा वीर वही है जो केवल संकट का समाधान ही नहीं करता, अपितु उसके मूल कारणों को भी समझता है। शिकारी से संरक्षणवादी बनने की उनकी यात्रा मानव चेतना के विकास की प्रेरक कहानी है। उनके जीवन का संदेश है कि यदि हम जंगलों, बाघों और जैव विविधता की रक्षा करेंगे, तभी पृथ्वी का प्राकृतिक संतुलन सुरक्षित रहेगा। जिम कार्बेट का व्यक्तित्व हमें यह प्रेरणा देता है कि प्रकृति के प्रति प्रेम, करुणा और उत्तरदायित्व ही मानव सभ्यता की वास्तविक पहचान है।

भारत के आधुनिक वन्यजीव संरक्षण की नींव रखने वाले जिम कार्बेट को उनकी जन्म - जयंती पर भावपूर्ण स्मरणांजलि।

बदलते परिवेश में प्रगति की राह



फोटो : एआई



सुषमा त्रिपाठी

परिवर्तन ही संसार का नियम है और यही नियम हमारे समाज पर भी पूरी तरह लागू होता है। आज हम जिस समाज में रह रहे हैं, वह कल जैसा नहीं था और आने वाला कल आज के जैसा नहीं होगा। समय के साथ विचारों, तकनीकों और जीवन-शैली में आने वाला बदलाव ही समाज को जीवंत रखता है। किसी भी समाज के अस्तित्व और जीवन-शैली में आने वाला बदलाव उसकी प्रगति के लिए आवश्यक है। एक स्थिर या जड़ समाज पीछे रह जाता है, जबकि एक गतिशील समाज परिस्थितियों को अवसरों में बदलकर आगे बढ़ता है। परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है

और मानव समाज भी इसका अपवाद नहीं है।

समाज कभी भी स्थिर नहीं रहता। यह एक बहती हुई नदी की तरह है, जो समय के साथ-साथ अपना रास्ता और स्वरूप बदलती रहती है। समाज कोई जड़ या निर्जीव वस्तु नहीं, बल्कि जीवित मनुष्यों के संबंधों, विचारों और भावनाओं का ताना-बाना है। समय की गति के साथ इन ताने-बानों में बदलाव आता रहता है। इसलिए गतिशीलता और परिवर्तन ही समाज का वास्तविक नियम है।

समाज की गतिशीलता से तात्पर्य सामाजिक संरचना, रीति-रिवाजों, मूल्यों, संस्कृति और मानवीय संबंधों में होने वाले निरंतर बदलाव से है। जब समाज खुद को समय के अनुकूल नहीं बदलता, तब वह पिछड़ जाता है या उसके विकास की गति रुक जाती है। उदाहरण के लिए, प्राचीन काल का समाज, मध्यकाल का समाज और आधुनिक समाज—तीनों में जीवन-शैली और सामाजिक व्यवस्था का अंतर समाज की गतिशीलता के कारण ही

संभव हुआ है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक हेराक्लिटस ने कहा था, “आप एक ही नदी में दोबारा पैर नहीं रख सकते।” इसका अर्थ है कि सब कुछ बदल रहा है। यही बात मानव समाज पर भी लागू होती है।

समाज को गतिशील बनाने और उसमें बदलाव लाने के पीछे कई महत्वपूर्ण कारण काम करते हैं। इनमें तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति प्रमुख है। आज के युग में इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और स्मार्टफोन जैसी तकनीकों ने हमारे जीवन, सोचने और आपस में जुड़ने के तरीकों को पूरी तरह बदल दिया है। शिक्षा और जागरूकता ने भी सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शिक्षा ने रूढ़िवादी विचारों को चुनौती दी है और समाज में समानता, स्वतंत्रता तथा मानवाधिकारों के महत्व को बढ़ाया है।

आर्थिक बदलाव भी सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण कारण है। कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था से औद्योगिक और अब

डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने से लोगों के जीवन-स्तर और सामाजिक संरचना में बदलाव आया है। इसी प्रकार वैश्वीकरण ने दुनिया भर की संस्कृतियों और विचारों के आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया है, जिससे समाज अधिक उदार और वैश्विक दृष्टिकोण वाला बना है।

सामाजिक परिवर्तन के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू होते हैं। सकारात्मक परिवर्तन के कारण सती-प्रथा, बाल-विवाह और छुआछूत जैसी सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष को बल मिला। महिलाओं की शिक्षा और रोजगार के अवसर बढ़े तथा जीवन पहले की तुलना में अधिक सुविधाजनक हुआ। दूसरी ओर, अत्यधिक तेजी से होने वाले परिवर्तन के कारण कभी-कभी पारंपरिक पारिवारिक मूल्य कमजोर पड़ सकते हैं। बुजुर्गों में अकेलापन बढ़ सकता है और सांस्कृतिक पहचान को लेकर चिंता उत्पन्न हो सकती है। इसलिए आवश्यक है कि बदलाव से डरने के बजाय समाज को सही और कल्याणकारी दिशा में आगे बढ़ाने का प्रयास किया जाए।

परिवर्तन को रोक नहीं जा सकता, क्योंकि यह समाज का अभिन्न अंग है। एक स्वस्थ और प्रगतिशील समाज वही है जो अपनी जड़ों को बनाए रखते हुए नए और सकारात्मक बदलावों को अपनाता है। गतिशील होना समाज के जीवित होने का प्रमाण है। इसलिए हमें बदलाव से डरने के बजाय उसे समझने और समाज के हित में उपयोग करने की आवश्यकता है।

बदलते परिवेश में प्रगति के लिए शिक्षा और वैज्ञानिक सोच अत्यंत आवश्यक हैं। एक प्रगतिशील समाज के लिए सबसे पहले विचारों में बदलाव आना जरूरी है। आज का समाज पुरानी रूढ़ियों और सामाजिक कुरीतियों को छोड़कर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। लैंगिक समानता भी इस परिवर्तन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। बदलते परिवेश में महिलाओं को शिक्षा और रोजगार के समान अवसर प्राप्त हो रहे हैं। आज लगभग

हर क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी समाज के गतिशील होने का महत्वपूर्ण प्रमाण है।

डिजिटल क्रांति और तकनीकी विकास ने भी समाज की गति को काफी बढ़ाया है। तकनीक आज प्रगति का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन चुकी है। डिजिटल साक्षरता के विस्तार और इंटरनेट की पहुँच ने गाँवों और शहरों के बीच की दूरी को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शिक्षा, बैंकिंग और स्वास्थ्य जैसी अनेक सेवाएँ अब मोबाइल और इंटरनेट के माध्यम से उपलब्ध हो रही हैं। नवाचार ने भी विकास के नए रास्ते खोले हैं। नए स्टार्टअप और युवाओं की नई सोच ने रोजगार तथा आर्थिक विकास के नए अवसर पैदा किए हैं। कार्यालयों में भी डिजिटल तकनीक के उपयोग से कई ऐसे कार्य कम समय में पूरे किए जा रहे हैं, जिनमें पहले अधिक समय लगता था।

आर्थिक आत्मनिर्भरता और विकास भी गतिशील समाज की महत्वपूर्ण पहचान है। आर्थिक रूप से मजबूत समाज ही तेजी से प्रगति कर सकता है। इसके लिए कौशल विकास आवश्यक है। केवल डिग्री प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि आज का युवा विभिन्न प्रकार के हुनर और कौशल पर भी ध्यान दे रहा है। इससे आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिल रहा है। कौशल विकास के अंतर्गत सिलाई, बुनाई और कढ़ाई जैसे लघु एवं कुटीर उद्योगों से जुड़ी योजनाएँ भी आती हैं, जिनके माध्यम से अनेक महिलाएँ अपने कौशल का उपयोग कर आत्मनिर्भर बनने और परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत करने का प्रयास कर रही हैं।

आज का गतिशील समाज केवल स्थानीय स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी व्यापार और रोजगार के अवसर तलाश रहा है। तकनीकी विकास और संचार के विस्तार ने दुनिया के विभिन्न हिस्सों को एक-दूसरे के और करीब ला दिया है। इससे युवाओं और व्यवसायों के लिए नए अवसर सामने आए हैं।

सच्ची प्रगति वही है जो पर्यावरण को

नुकसान पहुँचाए बिना आगे बढ़े। इसलिए पर्यावरण और सतत विकास को भी गतिशील समाज की प्राथमिकताओं में शामिल करना आवश्यक है। हरित ऊर्जा के क्षेत्र में समाज अब सौर ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहनों और पर्यावरण संरक्षण के प्रति अधिक जागरूक हो रहा है। आने वाली पीढ़ियों के लिए पानी, पेड़ और अन्य प्राकृतिक संसाधनों को बचाना भी हमारी जिम्मेदारी है।

जनसंख्या में वृद्धि और बढ़ते औद्योगिकीकरण के कारण प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ रहा है। यदि इन संसाधनों का सही उपयोग नहीं किया गया, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए गंभीर संकट उत्पन्न हो सकता है। इसलिए बिजली और पानी की अनावश्यक बर्बादी रोकना, प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना तथा प्लास्टिक के उपयोग को कम करना आवश्यक है। उपयोगी वस्तुओं को आवश्यकता से पहले फेंकने के बजाय उनका उचित और अधिकतम उपयोग किया जाना चाहिए। इसी प्रकार पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार व्यवहार अपनाकर बेहतर भविष्य का निर्माण किया जा सकता है।

इस प्रकार परिवर्तन समाज का स्वाभाविक और अनिवार्य हिस्सा है। समाज की गतिशीलता ही उसे समय के साथ आगे बढ़ने और नई परिस्थितियों के अनुरूप ढलने की क्षमता प्रदान करती है। शिक्षा, वैज्ञानिक सोच, तकनीकी विकास, लैंगिक समानता, आर्थिक आत्मनिर्भरता, कौशल विकास और पर्यावरण संरक्षण जैसे क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन समाज को अधिक प्रगतिशील और सक्षम बना सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम परिवर्तन को केवल स्वीकार न करें, बल्कि उसे मानवीय मूल्यों, सामाजिक कल्याण और पर्यावरणीय संतुलन के साथ सही दिशा प्रदान करें। तभी बदलता हुआ समाज वास्तव में प्रगति की राह पर आगे बढ़ सकेगा।



नित्य संकल्प

लिख देता कि पितृ-चरणों में शाश्वत धाम रहे मेरा,
 मातृ-स्नेह के शीतल-छाया में नित्य विश्राम रहे मेरा।
 संतति का हर अश्रु-बिंदु भी हास-कुसुम बन विकस जाए,
 वंश-दीप की दिव्य-कांति से आलोकित संसार रहे।
 सौभाग्य-सुधा का अविरल घट जीवन में मेरे ढल जाए,
 दुःख-दावानल की भीषण ज्वाला क्षण-भर में शमित हो जाए।
 अंबर की ऊँचाई छू ले मेरी कन्याओं की अभिलाषा,
 कर्म-पथ पर अग्रसर रहें वे, सत्य-धर्म ही हो परिभाषा।
 आशीर्वाद मिले गुरुजन का, हृदय में करुणा का वास रहे,
 काल-चक्र की हर गति पर ईश्वर पर अटल-विश्वास रहे।
 पुण्य-प्रताप से कुटुंब मेरा सदा-सर्वदा सुरक्षित हो,
 विधाता के उस विधान में मंगल-लेख उत्कीर्णित हो।
 हर संकल्प बने सिद्ध मेरा, हर साध्य मुझे स्वीकार रहे,
 परमार्थ-पथ पर पग अर्पित, जन-हित में व्यापार रहे।
 अहंकार की मलिन छाया से मन यह सर्वदा दूर रहे,
 विनम्रता की पावन धारा से जीवन परिपूर्ण रहे।
 सत्य-वचन की शक्ति से यह वाणी मेरी झंकृत हो,
 सत्संगत के अमर-रस से हर एक भावना पुलकित हो।
 निराश-हताश पथिक को भी मेरे घर से आधार मिले,
 स्नेह-संवेदना का सबको निश्छल उपहार मिले।
 युग-युगांतर तक अक्षुण्ण रहे यह कुल की उज्ज्वल परिपाटी,
 मातृभूमि की सेवा में समर्पित हो तन की माटी।
 परमब्रह्म के श्रीचरणों में अंतिम सांस विलीन हो,
 जन्म-मरण के चक्र से परे, आत्मा हरि-रंग में लीन हो।

- राजकुमार शर्मा

गज़लें

1

वो निगाहों को रोज़ छलता है।
 चाँद छुप-छुप के जो निकलता है।
 राह तकता हूँ मैं वहाँ उसकी,
 वो वहाँ रास्ता बदलता है।
 रोज़ सूरज सा मैं दहकता हूँ,
 वो किसी बर्फ़ सा पिघलता है।
 चाहता हूँ मैं देखकर उसको,
 वो किसी और पर मचलता है।
 है मुझे उसपे तो यकीं सारा,
 वो मेरे हाल पर संभलता है।
 किस तरह मान लूँ सदा उसकी,
 जो कही बात से फिसलता है।

2

झूठ कहूँ तो भी मुश्किल।
 सच बोलूँ तो भी मुश्किल।
 चुप्पी भी खलती है अब,
 लब खोलूँ तो भी मुश्किल।
 भूलूँ तो ग़म भर जाऊँ,
 याद रखूँ तो भी मुश्किल।
 दूर रहूँ तो दिल तन्हा,
 पास रहूँ तो भी मुश्किल।
 थक जाऊँ गर दौड़ूँ तो,
 रुक जाऊँ तो भी मुश्किल।

- नवीन माथुर पंचोली

तू नहीं है तेरा ख्याल नहीं!
 जिंदगानी में अब बवाल नहीं!

जंग लड़ना मुझे गवारा पर!
 बेबसों को बना के ढाल नहीं!

ऐसे लीडर को लानतें भेजो!
 चल सका जो सियासी चाल नहीं!

पा लिया जो खुदा की रहमत थी!
 खो दिया तो किया मलाल नहीं!

भूख का मसअला सुलझ जाए!
 इतना सीधा भी ये सवाल नहीं!

- बलजीत सिंह 'बेनाम'

तिरंगे की बेटियाँ...!

नीला गगन गवाह बना, भारत की बेटियाँ खेलीं,
श्रीलंका के मैदान में, जीत नवद इबारत लिखीं।
शेफाली के बल्ले ने, तूफान मचा दिया मैदान में,
स्मृति की साझेदारी ने, रंग भरे हरेक अरमान में।

बहत्तर रन पर रोक, श्रीलंका का सारा अभिमान,
8वीं बार एशिया कप जीत, बेटियों से बढ़ा मान।
हर चौका एक उम्मीद, विकेट जयकारा बन गया,
नीली जर्सी में भारत का, "तिरंगा" ऊँचा तन गया।

ये जीत सिर्फ ट्रॉफी नहीं, मेहनत की पहचान बनी,
देश की हरेक बेटि के मन में, एक नई उड़ान बनी।
सलाम बेटियों को, जो मैदान में इतिहास रचाती हैं,
भारत तिरंगा लहराएँ, करोड़ों धड़कनें मुस्काती हैं।
(संदर्भ - एशिया कप में भारत 8वीं बार चैंपियन।)

- संजय एम तराणेकर

चलन

महसूस करती हूँ
खुद को मूर्ख -सा
कि फ़िक्र करती हूँ
दूसरों की सदा
फ़िक्र करना, कराना
अब चलन में नहीं रहा -
स्वार्थी हो जाना
चाहिए मुझे भी
पूछना हाल दूसरों का
और अपना बताना
अब चलन में नहीं रहा -
ज़रूरी है बहुत
व्यावहारिक हो जाना
सच सुनना, सुनाना
अब चलन में नहीं रहा -
हो गई दीवारें
सब बहुत ऊँची
खिड़कियाँ दिलों में
रखना, रखाना
अब चलन में नहीं रहा -
देखा जाएगा तुम्हारा
रुतबा और औहदा
इंसान होना और
इंसानियत दिखाना
अब चलन में नहीं रहा

- डॉ दलजीत कौर

लेके चलो मुझे फिर से वहाँ

लेके चलो मुझे फिर से वहाँ
जहाँ कोई कष्ट और दर्द नहीं है
और जहाँ सिर्फ आंतरिक सुकून के अलावा
और कोई शोर नहीं है
जहाँ अवसाद का वह भारीपन अब मेरे सर
पर नहीं है।

लेके चलो मुझे फिर से वहाँ
जहाँ दोस्तों के साथ खेलने-कूदने से कोई
फुर्सत ही नहीं है
जहाँ कल के लिए कोई चिंता और दुख नहीं है
और जहाँ प्रकृति से गुप्तगू करने के लिए
वक्त की कोई कमी नहीं है।

लेके चलो मुझे फिर से वहाँ
जहाँ स्वयं से सुखी होने की अपनी बनाई हुई
कोई शर्त ही नहीं है
और जहाँ स्वयं पर गर्व करने के लिए किसी
की स्वीकृति की ज़रूरत नहीं है
जहाँ दुनिया के हर कष्ट और दर्द में भी कोई
कड़वाहट नहीं है।

लेके चलो मुझे फिर से वहाँ
जहाँ कोई कष्ट और दर्द नहीं है...

- आद्या

अनमोल उपहार: घमरा



प्रकृतिमेल डेस्क

हमारे आसपास की वनस्पति संपदा में कई ऐसे औषधीय पौधे छिपे हैं, जिन्हें हम उपेक्षित कर देते हैं। भारतीय जड़ी-बूटियों के गहन अध्ययन के आधार पर आज हम एक ऐसे ही चमत्कारी पौधे के विषय में चर्चा करेंगे, जिसे ग्रामीण अंचलों और पारंपरिक चिकित्सा पद्धति में घमरा अथवा कंबरमोडी के नाम से जाना जाता है। यह छोटा सा फैलने वाला पौधा सूर्यमुखी के कुल से संबंध रखता है और इसके औषधीय गुण मानव शरीर के लिए किसी वरदान से कम नहीं हैं। मैदानी इलाकों, खेतों और रास्तों के किनारे उगने वाले इस पौधे में अनेक सक्रिय रासायनिक तत्व पाए जाते हैं, जो इसे एक उत्कृष्ट प्राकृतिक औषधि बनाते हैं।

घमरा की पत्तियों और तने में प्रचुर मात्रा में जैव सक्रिय घटक मौजूद होते हैं। इन घटकों के कारण इस पौधे में सूजन रोधी, जीवाणु रोधी, कवक रोधी और घाव को तेजी से भरने वाले गुण समाहित होते हैं। कंबरमोडी का सबसे प्रमुख और अचूक गुण इसका घाव को ठीक करना और रक्तस्राव को तुरंत रोकना है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी जब किसी व्यक्ति को चोट लगती है या त्वचा छिल जाती है, तो इसकी पत्तियों का ताजा रस निकालकर घाव पर लगाया जाता है। यह रस न केवल बहते हुए खून को थाम देता है, बल्कि संक्रमण फैलाने वाले कीटाणुओं को भी नष्ट कर देता है।

त्वचा रोगों के उपचार में घमरा का उपयोग अत्यंत प्रभावशाली माना गया है।



दाद, खाज, खुजली, फोड़े-फुंसी और त्वचा पर होने वाली एलर्जी में इसकी पत्तियों का लेप लगाने से शीतलता मिलती है और त्वचा का संक्रमण धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है। इस पौधे के भीतर मौजूद एंटीऑक्सीडेंट तत्व त्वचा की कोशिकाओं को स्वस्थ रखने और सूजन को कम करने में सहायक होते हैं। बालों के स्वास्थ्य के लिए भी यह जड़ी-बूटी अत्यंत गुणकारी है। इसके पत्तों के रस को नारियल के तेल के साथ पकाकर बालों की जड़ों में लगाने से बालों का झड़ना रुकता है, रूसी की समस्या समाप्त होती है और बाल प्राकृतिक रूप से काले और घने बनते हैं। घमरा हमारे लिवर को सुरक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आधुनिक शोध और पारंपरिक अनुभव यह दर्शाते हैं कि कंबरमोडी का अर्क लिवर की कोशिकाओं को हानिकारक तत्वों से बचाता है और पीलिया रोग में इसके पत्तों का नियंत्रित मात्रा में सेवन करने से यकृत के दोष दूर होते हैं और शरीर से हानिकारक विषैले पदार्थ बाहर निकल जाते हैं। पाचन तंत्र को दुरुस्त करने, पेट की जलन और एसिडिटी की समस्या को शांत करने में भी इसके पत्तों का काढ़ा या रस

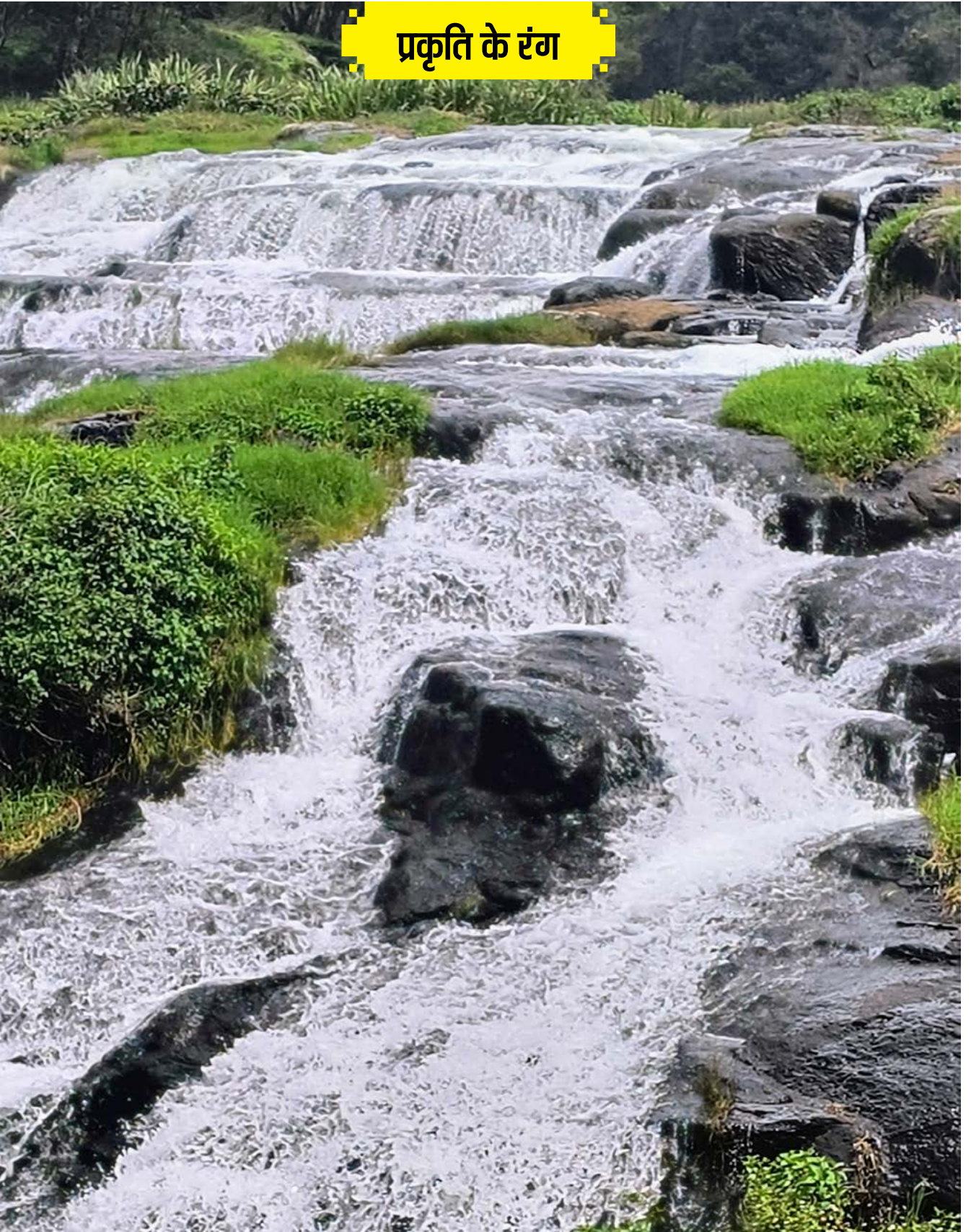
अत्यंत लाभकारी सिद्ध होता है। पेट के भीतर की झिल्ली को सुरक्षा देकर पाचन क्रिया को मजबूत बनाता है।

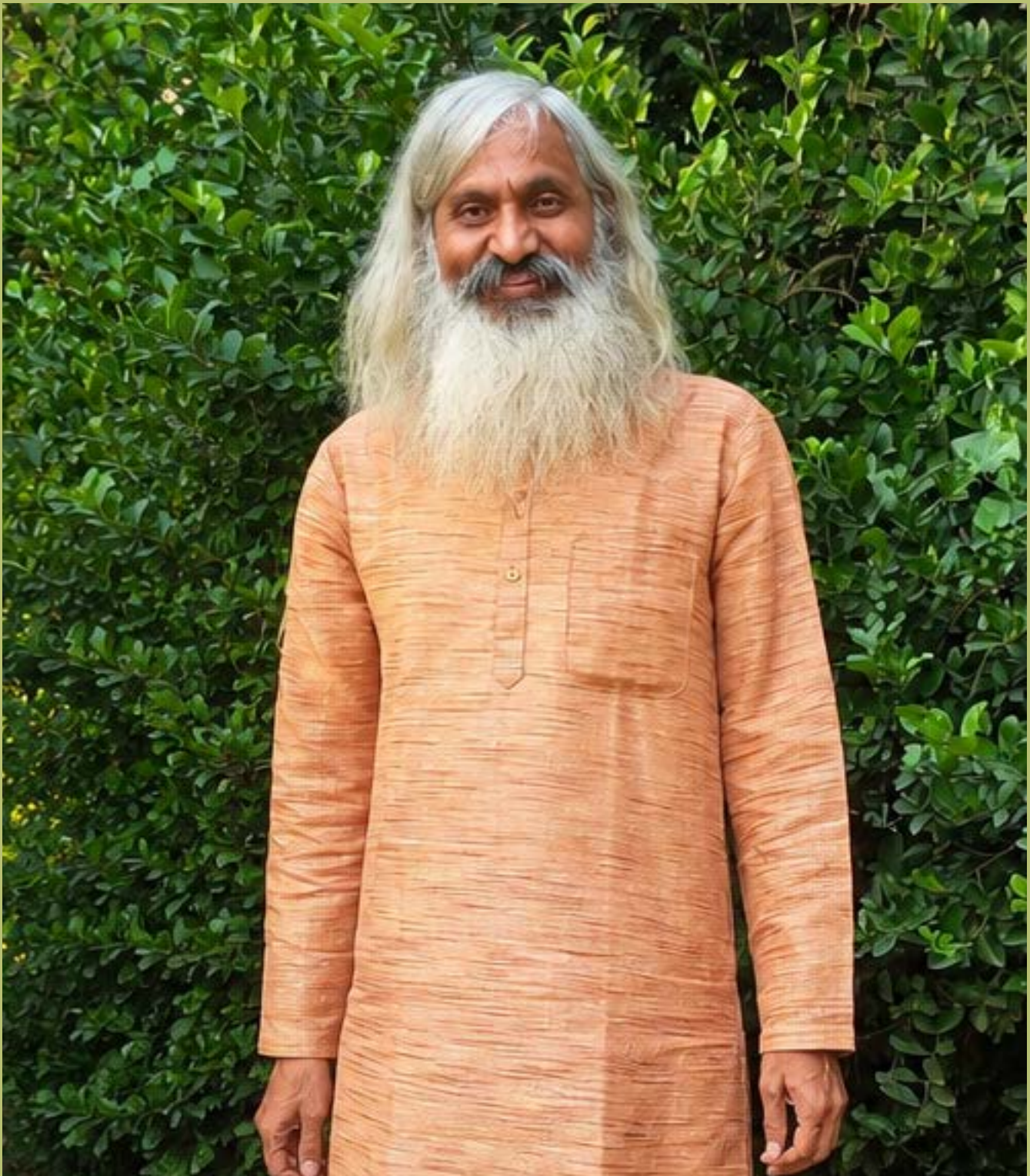
सर्दी, खांसी और बुखार में भी कंबरमोडी का उपयोग किया जाता है। इसके पत्तों का काढ़ा शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। मधुमेह के रोगियों के लिए भी यह पौधा काफी आशाजनक परिणाम दिखाता है, जोड़ों के दर्द और सूजन से पीड़ित व्यक्तियों के लिए भी घमरा की पत्तियों का अर्क या लेप बहुत राहत देने वाला होता है। इसके सूजन रोधी गुण हड्डियों और मांसपेशियों के दर्द को सोख लेते हैं।

यद्यपि यह पूर्णतः प्राकृतिक और सुरक्षित है, फिर भी आंतरिक रूप से इसका सेवन करने से पूर्व मात्रा का सही निर्धारण करना आवश्यक है। अंततः, घमरा अथवा कंबरमोडी जैसी जड़ी-बूटियाँ हमारे देश की समृद्ध चिकित्सा विरासत का हिस्सा हैं। हमें अपने आसपास उगने वाले इन अनमोल पौधों को पहचानना चाहिए और इनके संरक्षण के प्रति सजग रहना चाहिए।



प्रकृति के रंग





“ इच्छा की प्रकृति का वृत्त निर्माणक रेखा बन जाती है जो वजूद को पूर्ण होने तक प्रकृति के वजूद में रहता है और पूर्ण होने के बाद प्रकृति बन हमेशा के लिए गतिमान हो जाता है पर यदि निर्माणक कण शोषणवादी हो जाता है तो स्वतः अनन्तीअन्त कर जाता है। ” - अशोक मानव

स्थापित 1948

77 वर्षों का विश्वास

लाला जुगल किशोर

गोटे वाले



55, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ | संपर्क : 9935329775

दुर्गा आटो सेल्स

सेवा ऐसी जो पसीना न बहने दे

Authorised Dealer for Mahindra Tractors, Farm Equipments & Spare Parts

Mahindra
Rise.

MAHINDRA TRACTORS
Technology on Tracks

नई महिंद्रा XP PLUS सीरीज़

श्रेणी में पहली बार

माइलेज शानदार

पावर दमदार



✉ durgaautosale2000@gmail.com ☎ 9919528830 ☎ 0545-4242216

📍 इलाहाबाद-जौनपुर रोड, मधली शहर, जौनपुर, उ. प्र.।